CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२·३

राग तरङ्गिणी

(2)

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

(सं० बलदेव मिश्र)

दरभङ्गा

ालय
राणसी-५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भारतनिधि, कचौड़ी
वाराणसी-5

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

मैथिल कवि लोचन

कृत

राग तरङ्गिणी।

सम्पादक—

पं० बलदेव मिश्र।

(सर्वाधिकार सुरक्षित)

प्रकाशक
दरभङ्गा—राज प्रेस।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भारतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

॥ श्रीमज्जनकनन्दिन्यैनमः ॥

✻ प्राक् कथन ✻

मिथिलाक रागरागिणीक चर्चा उठितहिं रागतरङ्गिणीक नाम कर्णगोचर होइत छल । किन्तु ओहि ग्रन्थरत्नक दर्शन दुर्लभे रहल । राज पुस्तकालय तथा मिथिलाक अनेको विद्याकेन्द्र में अन्वेषण कयलगेल। किन्तु सर्वत्र परिश्रम विफले रहल। एम्हर किछुए दिन पूर्व मधुवनीक भूतपूर्व मजिस्ट्रेट तथा विख्यात पुरातत्ववेत्ता श्रीयुत ग्रियरसन साहेब एकपत्र महाराजाधिराज मिथिलेश सर श्री ५ मान् कामेश्वर सिंह बहादुर के० सी० आई० ई० क सेवा में पठौलैन्हि, जाहि में रागतरङ्गिणी, प्राकृत लङ्केश्वर, तथा प्राकृत प्रकाश, एहि तीनू ग्रन्थक याचना छलैन्हि । श्री ५ मान् मिथिलेश सँ सेवकवृन्द कें आदेश भेलैन्हि जे एहि ग्रन्थ सभक अन्वेषण करैत जाउ। अपना अपनी अन्वेषण होमय लागल, परञ्च फलशून्ये रहल। केवल राज पुस्तकालयक अन्वेषण कयलो सँ एतवा (क) बुझना गेलजे पुस्तकालय मध्य रागतरङ्गिणी नामक पुस्तक छल किन्तु को भेल तकर थाह नहिं भेटल । सभ एहि विषयपर तत्परेछल एहो समय कर्णाकर्णि श्री ५ मान् मे वार्त्ता भेलैन्हि जे पचही ड्योढ़ीक बावू श्री इन्द्रपति सिंह क ओहिठाम ई ग्रन्थ छैन्हि । श्री ५ मान् सँ उक्त बाबूसाहेब कें पत्र गेलैन्हि । तदुत्तर में रागतरङ्गिणी हमरा ओहिठाम अछि ई समाचार लिखैत पुस्तक नेने स्वयं आबि श्री ५ मान् मिथिलेशक सेवा में समर्पण कैलैन्हि। एतदर्थ बाबूसाहेब धन्यवादार्हथिकाह। एहिठाम खेदपुरस्सर एतवाक कहिदेब हम आवश्यक बुझैतछी जे यद्यपि मिथिला में रागतरङ्गिणी तीन चारि प्रति अछि किन्तु एखनहुँ धरि गोपनीय रखवाक व्यवहार दूर नहिं भेल अछि। शतशः ग्रन्थरत्न कोठीक गोड़ातर, ढाकी में, कोठीपर, घरनिपर, पेटार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सँ दिवाड़ सँ छिन्न भिन्न भेल गृहपति लोकनि कें लक्ष्मी सरस्वती सँ वञ्चित कै रहल अछि । की एहि दिश शिक्षित मण्डलीक ध्यान एखनहु अनाकृष्ट रहत ?

ग्रन्थक स्वरूप ।

ग्रन्थ सातआङुर चाकर सत्तरहआङुर नाम उजरकागतक बहत्तरि पत्र में समाप्त अछि । प्रत्येक पृष्ठ में अधिकांश सात पंक्तिक लिखल अछि । अक्षर देवनागर लेखक क्रम अधिकप्राचीन नहिं अछि । कहिया के एहि प्रतिकैँ लिखलैन्हि तकर कतहु उल्लेख नहिं अछि। एतवा बूझि पड़ैत अछि जे एहि ग्रन्थक लेखक केवल लेखके छलाह। शुद्धाशुद्ध सँ सम्बन्ध नहिं छलैन्हि । भाषासाहित्य में व. ब., श. ष. स. य. ज, क भेद यद्यपि प्राचीनकाल में नहिं छल तैं ओ दोष नहिं थिक, किन्तु संस्कृतसाहित्य में एहि तरहक अक्षर दोष प्रधान अशुद्ध बूझल जाइछ तकर एहि ग्रन्थ में आधिक्य अछि । दोसर शूची (सुइ) शलाकाक पंक्तिपर लिखल गेल अछि । जाहि सँ अनेको पत्र में पाँतीक पाँती नष्टप्राय अछि । पुंस्तकान्तर नहिं भेटवाक कारणे अधिकांश स्थान में त्रुटि रहब स्वाभाविके । विज्ञ मण्डलीक समालोचना सँ लाभ उठयबाक तथा अन्य हस्तलिखित पुस्तक प्राप्त करवाक आशा अछि, अतएव विश्वास होइत अछि जे द्वितीय संस्करण में एहि प्रकारक त्रुटि नहिंरहत ।

ग्रन्थकारक परिचय ।

ग्रन्थकार महामहोपाध्याय लोचनझा एकहरेकन्हौली श्रोत्रिय मैथिल ब्राह्मण छलाह । हिनक पिता महामहोपाध्याय वाबूझा, पितामह परमानन्दझा, प्रपितामह वैद्यनाथझा, छलथीन्ह । उजान में बसैत छलाह, हिनक वंश में सम्प्रति मुक्तिदत्तझा प्रभृति वर्त्तमान छथि । एहि परिवारक कुलवृक्ष पञ्जीकार श्री रघुनन्दनझाक लिखल एहिसङ्ग उद्धृत करैतछी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, कचौड़ी
वाराणसी-5

मूलग्राम एकहरे कन्हौली।

वैद्यनाथ झा
|
परमानन्द झा
|
महो बाबू झा — तनिक विवाह यदुनाथ झाक कन्या
|
महोल्लोचन झा — ए सुतौ
|
वाछ प्रसिद्ध रत्नपति झा सनाथ झा
|
झिङ्गुर प्रसिद्धतीर्थदत्त झा। भाङा प्र० तारादत्त झा
|
भवदत्त झा। मुसली झा
|
दामोदर झा। मनोहर झा
|
मनमोहन झा। गुदरी झा
|
घुरघुर झा मुक्तिदत्त झा। चक्रदत्त झा
|
वैद्यनाथ झा। काशीनाथ झा। लक्ष्मीनाथ झा
भैरव झा — तेजनाथ झा

ई लोकनि सम्प्रति
उजान मे बसै छथि।

कविवर लोचन अपन कविता में राजा महिनाथक नाम क्वचित् क्वचित् उल्लेख एवं राजा नरपतिक विशेष रूपें गुणगान कयने छथि। राजा महिनाथ*यदू बाबूक लेखानुसार सन् १०८० सँ ११०१ साल पर्य्यन्त राज्य भोग कैलैन्हि। राजा नरपति सन ११०२ सँ ११०१२ साल

---

* नवटोल निवसी बाबू श्री यदुनन्दन झा लिखित दरभङ्गा राज्यक इतिहास अमुद्रित राज पुस्तकालय मध्य अछि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पर्य्यन्त राज्यभोग कैलैन्हि । खण्डवलाकुलक इतिहास सँ सन् १०७८ में राजा महिनाथ गद्दीपर बैसलाह । राजा नरपति सन् ११०० साल में सिंहासनारूढ़ भेलाह । पञ्जीकार रघुनन्दन झाक प्राचीन पञ्जी-प्रबन्धक टिप्पणी देखला सँ राजा महिनाथक स्वर्गवास सन् १०६७ तदुत्तर राजा नरपतिक सिंहासनारोहण, सन् ११०८ शनि दिन स्वर्गवास । बाबू यदुनन्दन झाक लेख सँ तथा खण्डवलाकुल इतिहासक लेख सँ राजा महिनाथ ठाकुरक २२ (२३) वर्ष राज्यभोग प्राप्त होइछ । राजा नरपतिक ११ वर्ष मात्र, किन्तु पञ्जीक लेख पहि सँ भिन्न अछि तैं पहि सँ मनस्तोष नहिं होइछ । कविवर चन्दाझा लिखैत छथि जे कवि लोचनक स्वहस्त लिखित पुस्तक भेटल छल जाहि में निम्नलिखित श्लोक भेटल ।

वेद बाहु रसक्ष्माभिर्लेखिते शाक वत्सरे ।
बुधे भाद्रद्वितीयायां जातमेतत्तु पुस्तकम् ॥
उद्याननगरान्तस्य त्वरितस्य विलेखने ।
देवाल्लब्ध प्रतीकस्य लिपिर्लोचन शर्म्मणः ॥

पहि सँ शाके १६२४ प्रतीत होइछ । द्वितीय रागतरङ्गिणीक अन्त में लिखल शाके १६०७ * चन्द्रकवि लिखैत छथि । तृतीय राजकीय पुस्तकालय मध्य म० म० लोचन कविक लिखल तालपत्र में नैषध नामक ग्रन्थ भेटल अछि, जे, अत्यन्त जीर्णप्राय अछि। एकर एक पत्र जाहि में निम्नलिखित वाक्य अछि । फोटो द्वारा प्रतिकृत कराय मुद्रित पुस्तकक अन्त में राखि देल गेल अछि ।

" उद्यानग्राम वास्तव्य एकलाङ्गल वंशीयः
श्री लोचन शर्म्मा शाके १६०३ "

पहि सँ बूझि पड़ैत अछि जे शाके १५०० सैक चतुर्थ भाग में कवि वरक जन्म भेल छलैन्हि । कारण जे अन्यथा शाके १६०७ में राग-तरङ्गिणीक सदृश प्रौढ़ ग्रन्थक निर्म्माण कोना कयलैन्हि । पहि सँ इहो बुझना जाइछ जे कवि लोचन पूर्णायु तथा राजा महिनाथ ओ

---

* मिथिला इतिहास कवि चन्दाझाक पुस्तकालय मध्य असुद्रित अछि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नरपतिक समकालीन छलाह।

यद्यपि वैष्णवपदलहरीक लेखानुसार लोचन कवि मानभूमि जिला निवासी, माताक नाम सदानन्दी पिता कमलाकर इत्यादि सिद्धान्त पूर्व्वहि स्थिर कै लेल गेल। तथापि रागतरङ्गिणी कें देखला उत्तर ई कथमपि नहिं कहल जा सकैत अछि जे रचयिता मैथिलेतर क्यो व्यक्ति रहथि। रागतरङ्गिणीक मङ्गल गान में प्रथम स्थान रासलीलानायक भगवान श्रीकृष्णचन्द्र कें द्य कविवर नटराज महाराजक रागरङ्गात्मना अभ्यर्थनाकयलैन्ह अछि। एहि मङ्गलाचरण द्वारा मिथिलादेश प्रसिद्ध हरिहरोपासनाक प्रतिविम्ब प्रतिभासित होइछ। तदुत्तर महामहोपाध्याय मिथिला राज्योपार्ज्जक तार्किक शिरोमणि राजा महेश ठाकुर सँ लयक निज आश्रयदाता नरपति ठाकुर पर्य्यन्तक गुणगाथा गबै छथि। राजा महिनाथ ठाकुरक राज्यशासन काल में कवि लोचन नरपति ठाकुरक आदेश सँ रागतरङ्गिणीक आरम्भ कैलैन्हि। * बूझि पड़ैछ जे राजा महिनाथ ठाकुर एवं हुनक कनिष्ठ भ्राता नरपति ठाकुर में परस्पर प्रीतिक पूर्ण प्रचुरता छलैन्ह। * राजा महिनाथ ठाकुर अपनहिं छोटभाय कैं राजतिलक देलैन्हि। तदुत्तर राजा नरपति ठाकुर मिथिलेश भेलाह।

---

* एहि ग्रन्थक कइम श्लोकक अन्तिमचरण मात्र एकर प्रमाणस्वरूप आगाँ रखैत छी। यथा—

वीरः श्री महिनाथ भूपतिलकः शास्तेऽधुना मैथिलान्,

तदुत्तर नरपतिक आदेश सूचनार्थ निम्नलिखित पद प्रदर्शन करैत छी।

तस्य श्री नृप सुन्दरात्मज महीनाथानुजस्याज्ञया।
विप्रः कोऽपि सुवंशजो नरपतेः कीर्तिं तनोति प्रियाम्।

* द्वितीय उदाहरण राजा महिनाथ ठाकुर अथ च राजकुमार नरपति ठाकुरक गीत देखू जाहि सँ सौहार्दक चरमसीमा भेटत। यथा—

वदनभयान कानशवकुण्डल विकटदशनघनपाँती।
फूजलकेश वेश तुअ केकह जनिनवजलधर काँती॥
कादलमाथ हाथ तुअ शोभित तीक्ष्णखड्ग करलाई।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भय निर्भय वर दहिनहाथ लय रहिअ दिगम्बरि माई ॥
पीनपयोधर ऊपर शोभित रुधिरस्रवित मुण्डमाला ।
कटि किंकिणि शवकर करु मण्डित सृक्कबहु शोणितधारा ।
बसिय मशान ध्यान शवऊपर योगिनिगन रहु साथे ॥
नरपति पति राखिय जगईश्वरि करु महिनाथ सनाथे ।

ग्रन्थ परिचय

एहि रागतरङ्गिणी में ५ पाँच तरङ्ग अछि। प्रथम में पुरुष राग-स्वरूप कथन। द्वितीय में रागिणी स्वरूप कथन। तृतीय में उत्पत्ति ओ नाद निरूपण ओ तिरहुति देश में विख्यात राग। तकर गीत ओ प्रथम कथक ओ प्रथम कवि इत्यादि कथन ओ गीति छन्द ताल आदिक कथन। चतुर्थ में तिरहुतिदेशीय संकीर्णराग विवरण। पञ्चम में स्वर प्रकरण, वीणावादक विषय, ओश्रुति विभाग, ओराग संस्थान, ओरागगानसमय, ओ नायिका भेद कथन।

राग नाम।	रागिणी नाम
१ भैरव।	१ बंगाली २ मधुमाधवी ३ बराड़ी ४ भैरवी ५ सिन्धु।
२ कौशिक।	१ टोड़ी २ खम्भावती ३ गौरी ४ ककुभा ५ गुणकरी।
३ हिन्दोल।	१ वेलावली २ देशाख ३ रामकरी ४ ललिता ५ पटमञ्जरी।
४ दीपक।	१ केदारा २ कानरा ३ देशी ४ कामोद ५ विहागर।
५ श्रीराग।	१ वसन्त २ मालव ३ मालसिरी ४ धनासिरी ५ असावरी।
६ मेघराग।	१ मलारी २ देशिका ३ भूपाली ४ टंक ५ दक्षिण गुर्जरी।

और संकीर्ण राग अनेक अछि।

ई तिरहुति गीत जयदेव महाकवि कृत हरिकीर्त्तन गीतगोविन्दवत् मिथिला मे प्रचलितछल। रागतरङ्गिणी कर्त्ता कवि लोचन लिखैछथि जे भवभूति महाकवि पुराण काव्य कें गीत में परिणत कयलैन्ह ओकरा, पहिने, सुमति नामधारी कलावान् पढ़ि राजसभा में कीर्त्तन कयलैन्ह। तनिक पुत्र जयत नामधारी कथक शिव सिंह महा-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राजक सभा में ओहि सभके लय नाटक अभिनय कयलेन्ह महाराज शिव सिंह उक्त कथक काँ पण्डितवर विद्यापतिक समीप उपस्थित कयलथीन्ह। ओ कविविद्यापति मिथिला प्रचरित, ओ गौड़ प्रचरित, ओ पहाड़ी इत्यादि गानकें, छन्द, ताल नियद्धन्य तिरहुति ओ देशान्तर में प्रचार करौलैन्ह, एकर ग्रन्थ वहुत अछि। परन्तु राजा नरपति ठाकुर जयतवंशीय कथक (नामान्तर मन्दिक (मल्लिक) घनश्याम सँ मिथिला देशक गीत यथावत् श्रवण करैत छलाह। ताहि समय हरिपति आदिक तिरहुति गीतिक गान प्रचलित छल। ओहि सभक काव्य रस वैचित्री कहाँधरि वर्णनकरू। राजा नरपति ठाकुरक आज्ञानुसार रागतरङ्गिणीक प्रचार भेलअछि। कविलोचन लिखैछथि (विशेषतस्तु मत्कृत सङ्गीतसंग्रहेऽन्वेष्टव्यः) से संगीतसंग्रह अद्यावधि नहिं भेटल अछि। विद्वज्जन कृपया अन्वेषण में साहाय्य प्रदान करथि तँ सुगम रीति सं ग्रन्थ भेटि सकैछ। एहिग्रन्थ में तीनि भाषाक समावेश देखनो आइछ अधिकांश संस्कृत, हिन्दी (व्रजभाषा), और मुख्यतः मैथिली। एहि प्रसङ्ग अर्थात् मिथिला भाषाक प्रसङ्ग भाषाक धुरन्धरविद्वान् लोकनिक नाना प्रकारक सिद्धान्त दृष्टिगोचर होइछ। अतः रागतरङ्गिणीक भाषा विचारक समय मैथिल होयवाक कारणें हमर धार्मिक कर्त्तव्य भयगेल अछि जे पाठक लोकनिक समक्ष अपन विचार उपस्थित करी। कविलोचन अपना ग्रन्थ में उदाहरण देवाककाल लिखैत छथि जे (देशीय भाषा निवद्धाः विद्यापति रचिता गीताः प्रदर्श्यन्ते)। एहि सँ तथा कीर्त्तिलताक लेख सँ (यथा, सक्कय वाणी वहुअन भावइ, पाउँअ रसको मम्मन पावइ। देसिल वअना सवजन मिट्ठा, तँ तैसन जम्पओ अवहट्ठा) ॥ स्पष्ट प्रतीत होइछ जे कवि कोकिल विद्यापति दुइ भाषा में भाषाक ग्रन्थ निर्म्माण कयलैन्हि। एक अवहट्ठ भाषा अर्थात् अपभ्रंश भाषा किम्वा अपभ्रष्ट। दोसर देशभाषा। और ओ देशभाषा मिथिला भाषा किम्वा मैथिलीक नामें प्रसिद्ध अछि। एही कथा कें पुष्टकरवाक हेतु स्थान स्थान पर ग्रन्थकार देशीय राग, देशीय ताल, देशीयभाषा, देशीय सूर, इत्यादि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विस्तार पूर्वक प्रदर्शित कयलैन्हि अछि। देशभाषाक महत्ता तथा व्यापकता प्रदर्शनार्थ उदाहरण प्रकरण में अपन उदाहरणाक सङ्ग सङ्ग निम्नलिखित राजाश्रित कविवृन्दक उदाहरण उद्धृत कयलैन्हि। जनिक नामावली उद्धृत करैतछी।

१ विद्यापति।	१४ कुमर भीष्म।	२७ गङ्गाधर।
२ लोचन।	१५ हरिनारायण नृपसिंह।	२८ जयकृष्ण।
३ भीष्म।	१६ धरणीधर।	२९ कुमुदी।
४ कविशेखर (वि०)।	१७ गोविन्द।	३० प्रीतिनाथ।
५ कण्ठहार (वि०)।	१८ मधुसूदन।	३१ भवानी नाथ।
६ चन्द्रकला।	१९ कविरत्न।	३२ धैरय सिंह।
७ गदाधर।	२० चतुर्भुज।	३३ रतनाञी।
८ चतुरानन।	२१ जीवनाथ।	३४ कंस नारायण।
९ हरिदास।	२२ सदानन्द।	३५ यदुपति सिंह।
१० लक्ष्मीनारायण।	२३ श्यामसुन्दर।	३६ पूरनमल्ल।
११ यशोधर।	२४ अमृतकर।	३७ जयदेव।
१२ मुकुन्द।	२५ व्यासदेव सुरतान।	३८ श्री निवास।
१३ धीरकुमरगजसिंह।	२६ महलम जुगपति।	३९ धरणीधर।

एहि सँ निस्सन्देह बूझल जाइछ जे मैथिलीक स्वतन्त्रता कतेक दूर पर्य्यन्त छल। हमरा जनैत कोनो भाषान्तर सँ मैथिलीक अवतार नहिं भेल अछि। जहिया सँ मिथिला देश में परिगणित होइछ तहिये सँ मैथिली भाषा में मिथिलाक प्राचीनताक संगहि संग मैथिलीयोक प्राचीनता निर्विवाद अछि। यद्यपि अद्यावधि ज्योतिरीश्वर ठाकुर सँ पहिलुका मैथिली भाषाक कोनो ग्रन्थ उपलब्ध नहिं भेल अछि तथापि हुनक वर्णन रत्नाकर देखला सँ ई स्पष्ट बूझि पड़ैछ जे एहि भाषाक स्वतन्त्र विकाश ज्योतिरीश्वरक काल सँ कतेक पहिने सँ भेल अवैत अछि। यद्यपि कोनहु भाषाक उल्लेख पृथक कयक कतहु नहिं भेटैत अछि। परन्तु * प्राचीन मैथिल आर्षलोकनिक द्वारा संस्कृत प्राकृत सँ भिन्न अनेक देशभाषा रहवाक उल्लेख पावि मैथिलीक स्वतन्त्र अस्तित्व चिरकाल सँ रहव युक्तियुक्त बुझना जाइत अछि। एकरा आधुनिक बनयवाक तथा अन्य प्रान्तक भाषा सँ एकर सान्निध्य स्थापित करवाक कुचेष्टा केवल मिथिलाक भाषा विषयक अज्ञानताक द्योतकथीक।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

* याज्ञवल्क्यस्मृतिर्मिताक्षरा च—

प्रत्यर्थिनोऽग्रतोलेख्यं यथा वेदितमर्थिना ।
समा मास तदर्द्धाह र्नामजात्यादि चिह्नितम् ॥
देशश्चैव तथास्थानं सन्निवेशस्तथैव च ।
जातिः संज्ञाधिवासश्च प्रमाणं दोलनाम च ॥

देशोमध्य देशादिः ।

श्रुतार्थस्योत्तरं लेख्यं पूर्वावेदक सन्निधौ । अन्यदेश भाषाभिधानेन अदेश भाषाभिधानेन भाषोत्तरक्रिया साध्यासद्भिः क्रमवृत्तिमिरिति ।

विष्णु धर्म्मोत्तरे, संस्कृतं प्राकृतं चैव गीतंद्विविध मुच्यते ।
अपभ्रष्टं तृतीयञ्च तदनन्तं नराधिप ॥
देशभाषा विशेषेण तस्यान्तो नेहविद्यते ॥ इत्यादि

चिलपति कृत व्यवहारसिद्धान्तपीयूषे,
संस्कृतैः प्राकृतैर्वाक्यैर्य्यः शिष्यमनुरूपतः ।
देशभाषाद्युपायैश्च बोधयेत्स गुरुः स्मृतः ॥

मैथिल वररुचि मिश्र कृत (पत्र कौमुद्यां)
अङ्कुशं प्रथमं दद्यान्मङ्गलार्थं विचक्षणः ।
मध्ये विन्दु समायुक्तलघः सप्ताङ्कसँय्युतम् ॥
तदधः स्वस्ति विन्यस्य ततो गद्यं सुशोभनम् ।
ततः श्री शब्दरूपाणि पदन्यास क्रमंलिखेत् ॥
भाषयासंस्कृतेनापि मङ्गलं विलिखेत्तयोः ।
ततः शुभाशुभां वार्त्तामित्यादि ॥

मित्रमिश्रोऽपि । अत्र च न साधुशब्द नियमः । तदनभिज्ञानामर्थार्थि प्रत्यर्थित्व दर्शनात् । बोधकास्तु येषां येशब्दाः प्रसिद्धा स्तैरेत्र भाषा लेखनीया इति ।

म० म० नृसिंह ठक्कुर कृत प्रमाणपल्लवे ।

बृहस्पतिः । भाषापादोत्तर पादौ क्रियापादस्तथैव च ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रत्याफलित पादश्च व्यवहारश्चतुष्पदे ॥
नारदः । भाषायामुत्तरं यावत्प्रत्यर्थी नाभि लेखयेत् ।
अर्थी तु लेखयेद्यावत्तान्नोत्तर दर्शनम् ॥
प्राकृत पिङ्गले ।
(ध)(मात्रा) (ग) (प्राप्तौ) (ति)
यो विविह मत्त साअर पारं पत्तो विविमल मइ हेलं ।
(प्रथ) (षा) (ना)(गी)(सः) (यति)
पढ़मं भासतरण्डो णाओ सो पिङ्गलो जअइ ।
संस्कृतं नाम दैवीवाक् तद्भवं प्राकृतं विदुः ।
अपभ्रष्टा तु या तस्मात् साह्यपभ्रंश संज्ञिता ।
तिङन्ते च सुवन्ते च समासे तद्धितेऽपिच ।
प्राकृतादल्पभेदेव ह्यपभ्रष्टा प्रकीर्त्तिता ॥
देशभाषां तथा केचिदपभ्रंशं विदुर्बुधाः । तथाहि
संस्कृते प्राकृते वापि रूप सूत्रानुरूपतः ।
अपभ्रंशः सविज्ञेयो भाषा यत्रैव लौकिकी ॥ इति ॥

वर्त्तमान संस्करण ।

रागतरङ्गिणी एकप्रति मात्र भेटल जाही स्वरूप में छल ताही रूप में प्रकाशित भेल अछि । तेँ पाठक गण सँ सानुरोध प्रार्थना जे शुद्धाशुद्ध पर ध्यान नहिं दय सारगर्भित विषयक उपर ध्यानदय ग्रन्थकारक परिश्रम के सार्थक करैत जाथु ।

अतःपर पूर्णआशा अछि जे महाराजाधिराजमिथिलेश श्री ५ मान् कामेश्वर सिंह बहादुरक अनुग्रह सँ शीघ्र सटीक राग तरङ्गिणी अपनेलोकनिक समक्ष उपस्थित होएत ।

संस्कृत पुस्तकालय
दरभंगा राजधानी } बलदेव मिश्र

सम्वत् १९९१ दशहरा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुद्धाशुद्धि ॥

अशुद्ध	शुद्ध	पृ०	पं०
निजवरि	निजवैरि	२	४
पुंसङ्कला	पुंसाङ्कला	२	८
त्स्वयग्च	स्वयग्च	२	१२
कण	कर्ण	२	१७
सन्नियस्योप	सन्नियस्योप	६	१७
भैरवय	भैरवस्य	८	१६
कुचं	कुच	९	११
दृष्ट	दृष्ट	१०	१५
स्रोगोंन	स्रगोंन	११	२
कङ्कन	कङ्कन	११	७
मेद्नी	मेदिनी	१३	९
पद्व्दयं	पदद्वयं	१३	११
क्राड़	क्रोड़	१४	११
स्त्रगोंन	स्त्रगोंन	१५	२१
निगादिता	निगदिता	२४	८
जगावेए	जगावए	२४	९
छाए	छाजए	२१	९
कुङ्कम	कुङ्कम	३२	५
कुङ्कम	कुङ्कुम	३२	९
कुङ्कम	कुङ्कुम	३२	१२
का	की	३४	१४
सनुद्भवः	समुद्भवः	३५	२०
गन्धर्वादिः	गन्धर्वादि	३६	२२
बराड़ा	बराड़ी	३९	७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हरावला	हरावली	४३	३
ड्विशति	षड्विंशति	५१	१०
य्यत्न	य्यँत्र	५६	२
ध्रुवाद्धकम्	ध्रुवार्द्धकम्	५६	२१
कामाद केदार	कामोद केदार	५९	४
वेदार मालवः	केदार मालवः	६०	१
षड्विशतिं	षड्विंशति	६०	३
नामव	नामैव	६२	९
सुः पञ्चमः	सुरः पञ्चमः	६३	१३
आत	आंत	६३	२०
कलः	कलाः	६६	२०
झलधारा	जलधारा	७३	१०
षड्विशात	षड्विंशति	७४	१०
निवँध	निविवंध	७४	१८
विरोघ	विरोध	७६	९
दूंता वचन	दुती वचन	७६	१०
चतुष्वल	चतुष्कल	७६	१५
मलारा	मलारी	८१	१५
वृत्तादाहवुदारणीये	घृतादात्रुदाहरणीये	८२	१५
पतच्छन्दा	पतच्छन्दो	८९	१०
त्रिभिद्दलः	त्रिभिर्द्दलैः	९१	६
पलिर्हि	पहिलहिं	९२	१७
मधुवनु	मधुविन	९४	३
विद्यापत	विद्यापति	९५	५
मोङ्गदेश	मोरङ्गदेश	९८	४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दैवि	देखि	९८	७
वषाद	विषाद	९८	९
झुझले	सूफले	९८	२१
ममामान्यदीयन्तु	ममान्यदीयन्तु	१००	१०
तदेवँम् शुद्ध को ऽर	तदेवम् शुद्ध कोडार	१०१	४
कलिकाःमातु	कलिकाःसातु	१०१	१३
पहाडआ	पहडिआ	१०२	५
निम्मितेः	निर्म्मितेः	१०३	१८
उदाहरम्	उदाहरणम्	१०७	१
द्वितयचैव	द्वितयश्चैव	१०८	९
म मथ भाव	मनमथ भाव	११५	२०
तोहन्हुँ	तोहहुँ	११८	११
संकार्ण	संकीर्ण	११६	९
त्रिरणः	त्रिव्रणः	१२४	१२
जै जयन्ता	जै जयन्ती	१२५	२
नटौ	नाटौ	१२५	१९
गुज्ररी	गुर्जरी	१२६	११
गुजरी	गुर्जरी	१२६	२१
निम्मितिः	निर्म्मितेः	१२७	१८
संगीति	संगीती	१३०	१२
योग	योगा	१३१	१०
प्रथस मदनावकारा	प्रथम मदनविकारा	१३४	९
प्ररूढ स्मरयावना	प्ररूढ स्मरयौवना	१३४	२१
वचन	वचनं	१३५	७
रोर्ष्यमतिः	चेर्ष्यमतिः	१३७	१४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रेपिताङ्गी	वेपिताङ्गी	१३७	१९
चुग्वन	चुम्बन	१३७	२१

रागतरङ्गिणीक त्रुटि पुस्तकान्तर सँ पूर्त्ति।

	पं	पृ०
सुतनुतनु	३	४८
अ अपराधे	१८	४८
किए मुख सरोजे	१५	५०
यामवाप्य स्वरः	६	५५
मात्रकम्	१८	५६
न वुझ वेदनदुख वोल वचनपरमाने।	१९	५७
हरि पअ नरि जगत	५	५८
द्वितयंमध्य द्वयस्चैवात्र जायते	७	५८
मनोहरा छन्दक उदाहरण पुस्तकान्तरहु में त्रुटि		
पाओल गेल	१५	८०
चामरस	७	९१
जायेते चेत्तदातुस्या	६	१०१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ ॐ नमस्तस्यै ॥

॥*॥ अथ राग तरङ्गिणी ॥*॥

चिरतरकृत योग योगिवृन्दै-
विपुल हृदिस्थिर चेतसा विमृग्यः ॥
शमयतु दुरितानि भावकानां,
सुखसदनःकदनोऽसतां मुरारिः ॥१॥
नारद प्रमुखैस्सिद्धैर्गीयमानस्समन्ततः॥
रागरङ्गः प्रसन्नोऽस्तु शङ्करः किङ्करेमयि ॥२॥
यावच्छास्त्र विशारदेन शुचिना निःशेष मध्यापित-
स्तर्काम्भोरुहकाननैक भगवान्भानुर्द्धराधीश्वरः ॥
सामन्त प्रकरोत्तमाङ्ग पटली नीराजितांघ्रिद्वयी,
साक्षादलमहेश एव सुमहा नासीन्महेशः कृती ॥३॥
सूनुस्तस्य सुधासमुद्रलहरी सूक्तिः कलानायको,
विख्यातः कवितालता हृदिगतो हारो नरोत्तंसकः ॥
आसीच्छासित दुर्ज्जनः प्रमुदितो नित्यम्प्रसन्नेश्वर-
स्सत्यार्थेन शुभङ्करः कृतिमतां नाम्नाधराधीश्वरः ॥४॥
एतस्यापि सुताःसुनाश्चवहवोवह्वयःकनीयान्पुनः,
शीलौदार्य्य वशीकृताखिलजनो जीवातुरेकःक्षितौ ॥
रामश्यामतराभिराम सुमहद्धामैकचित्तोऽभव,-
च्छ्रीमत्सुन्दर भूपुरन्दर धराविख्यातकीर्त्तिःसुतः॥५॥
तस्योल्लासि कलाकुलेनमुदितो नित्योन्नतस्सन्नतः,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सूनुस्सज्जनरञ्जनःप्रतिपलं कुशशील हृद्रञ्जनः ॥
शोभाभिःकुसुमायुधस्य सुमहद्धिक्कार कारितरां,
वीर श्री मल्लिनाथ भूपतिलकःशास्तेऽधुना मैथिलान् ॥६॥
तस्यानुजोऽपि निजवैरिदलोद्भटानां,
न्यक्कारकारि धनुरायतपुङ्खकाण्डः ॥
चन्द्राननो नरपति र्गुनिगानसिन्धु-
राविर्बभूव गुणिराज गणैकबन्धुः ॥७॥
यो जागर्त्ति महीतले निरुपम स्सर्वासु पुंसङ्कला,
स्वासन्नेषु च कल्पपादपवदानन्दाय यो निस्पृशः ॥
तस्य श्री नृपसुन्दरात्मज महीनाथानुजस्याज्ञया,
विप्रः कोऽपि सुवंशजोनरपतेःकीर्त्तिन्तनोति प्रियाम् ।८।
किञ्चित्समाहृत्य कुतश्चिदन्यत्-
स्स्वयञ्च सम्पाद्य पदप्रबन्धम् ॥
वितन्यते लोचन, नामधेय,
द्विजेन सा रागतरङ्गिणीयम् ॥९॥
गुणिगण विनिगूढ़ा न्मूढ़लोकेऽपि गम्यान्,
कलयितु मिहरागान्सर्वतः कण रम्यान् ॥
विपुलगुणजनानां सङ्गतौ सम्प्रयुक्ते,
मतिमिहहि निबन्धे सज्जनास्सन्नयन्तु ॥ १० ॥
इहखलु निखिलशास्त्रैकगरिष्ठ श्रीमद्भरतादि मुनिप्रयुक्त सङ्गीत शास्त्रोक्तानि रागाणां षोड़श सहस्राणि ॥

॥ तथाचाभियुक्ताः ॥

गोपीभिर्गीतमारब्ध मेकैकं कृष्ण सन्निधौ ।
तेन जातानि रागाणां सहस्राणितु षोड़श ॥
रागेष्वेतेषु षट्त्रिंशद्रागा जगति विश्रुताः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कालक्रमेण तत्रापि ह्रासएव हि दृश्यते ॥
केचिद्वदन्ति तेसर्वे रागास्सन्तीति निश्चितं ।
मेरोरुत्तरतः पूर्वे पश्चिमे दक्षिणे तथा ॥
समुद्रकण्ठे ये देशा स्तत्रामीषां प्रचारणा ।

॥ अथात्र पुंरागः ॥

भैरवः कौशिकश्चैव हिन्दोलो दीपकस्तथा ॥
श्रीरागो मेघरागश्च षडेते हनुमन्मताः ॥
अथैतेषा म्मूर्ति लक्षणम् ।
इदन्तु सकललोक साधारण झटित्युद्बोध हेतु.
मध्यदेशभाषामाश्रित्यापिलिख्यते ॥

॥ तत्रप्रथमं भैरवः ॥

जटाजूटतटगङ्ग वसनसित अङ्ग भुअङ्गम,
वरद करद कृतदेववरद वाहनचढ़िजङ्गम ॥
आसनगजवरखाल धवलशशिभाल विराजइ ॥
तीनिनयन चितचअैन जपत भावकदुखभाजइ ।
करकलितशूल नृकपाल अरु, रागराज अतिमधूरख ॥
भैरव हर दुइनाहिं जग, जेहिगावत सवसमअैं सव ॥

॥ दोहा ॥

आदि राग भैरव भनिअ, पुनि कओसिक हिन्दोल ।
दीपक अओ श्रीराग शुभ, मेघराग वहु मोल ॥

॥ छप्पै ॥

शिरहँगङ्ग अङ्गहि भुअङ्ग भूषन शशिभालँह,
विषमनयन चित उदितचअैंन आसन गजखालह ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नरकपाल धर धवलरुप करशूल सुलछ्न ॥
हरसरूप सवराग भूपसित वसन विलछ्न ।
जग सकल रागरागिनिभवन आदि राग जेहि कहत सव ॥
सव समएगेयगुन अतिनिपुन भैरवसुनिसुखदेतभुव ॥

॥ पद्यञ्च ॥

ललाटे शीतांशुःकिल जटिल मूर्ध्निन्त्रिपथगा,
विभूषाभौजङ्गी वपुषिसितकान्ति र्विजयते ॥
सदा यस्य श्वेतं वसन मशनीयश्च विजया,
जयत्येवं भूतस्सततमतिपूतश्च भसितैः ॥

॥ अपिच ॥

त्रिनेत्रस्तच्चैकं वहतिकिल भालेतु दहनं,
परेघूर्णात्तारे करतल कपाली च शिवदः ।
त्रिशूली दान्तेयाजिन मधिगत स्सर्वं जगतां,
समाराध्यो रागो जगति कथितो भैरवइति ॥

अथद्वितीयः कौशिकः ॥२॥

पीतवसन सितदमन हेमसम रूप मनोहर,
वीरसिरोमय मालगरैंगहि होत भयङ्कर ।
करतल कलित कराल काल करवाल कृतादर,
वीर वीरकृतसेव वीरसञों करत युद्धवर ॥
अतिललितगान विबुधाधिपति सदसिवीन परवीनजन,
गावत वजाएजेहि सकलसुर सो कौशिक नामारागरमन ।
मानो सुवर्णतनुवर्ण वैरिखण्डन विधिपण्डित,
वीरपुरुष रनधीर दन्त उज्जल करें मण्डित ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बहुल वीरपरिवार कलित करवाल सङ्गचर ।
वीरविषजे सञ्चरत वीरसञो करत युद्धवर ॥
वीरातिवीर बहुरसिक जन कराठमाल कविन विलहत,
सङ्गीतसार सुविचारि उरएआसञो कवि कओसिक कहत

॥ पद्यञ्च ॥

कृत्वा मुराडालिमाला मुरसिधवलिमोत्कृष्ट दन्तस्समन्ता,
वीरःसंसेव्यमानः समरभुवि करन्यस्तशस्त्रैः प्रवीरैः ।
शस्त्रास्त्र त्यागदत्तःप्रतिसुभटदलै र्युध्यमानः किलायं,
हेम्नातुल्याङ्गकान्तिर्ज्जगति कविवरैर्वर्णितःकौशिकाख्यः ।

॥ अथ हिन्दोलः ॥३॥

रूपगर्वयुत खर्वपर्व हिमधाम समानन,
गन्धर्वाधिक सर्वकला विद्याकुलकानन ।
नटवर कलितसुवेश विमल पारावत सुन्दर,
कुराडल ललित कपोल लोल हिन्दोल पुरन्दर ॥
करें पकरि नारि उर आनिमुख निरखि मुसुकायपुनि,
रास करत लघुलोलगति सो कह्यो वीरहनुमन्त मुनि ॥
खर्वरूप गुनगर्व गहत सर्वाधिक सुन्दर,
तन कपोतसम वरन करन कुराडल कामुक वर ।
नवल नितम्बिनि अङ्क अङ्क भरि निरखि २ मुख ।
थोर थोर हिन्दोल चलत हाँ करत केलिसुख ॥
सव राग राग राजतरमनगावत जेहि गन्धर्व जन,
लघुलोल गमन वहुमोल मह, कह हिन्दोल जेहि जतिअजन ।

॥ पद्यञ्च ॥

खर्वोगन्धर्वगर्वः सुगुणा गुणाजितप्रायसर्वः कपोतैः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तुल्यः सर्वाङ्गदीप्त्यादिविचदिविषदां गीतिगोष्ठीगरिष्ठः
अङ्कानीतोत्तमाङ्गी सुखमहह समुद्दीप्यकुर्वन् स रासं,
श्रीमान् हिन्दोलरागःस्मितकुसुमरुचि र्मन्दमन्दप्रयाति।

॥ अथ दीपकः ॥४॥

कुन्दधवल अभिराम धाम परजङ्क सुशोभन,
सुतीतामें नकताए दिअागहि मौन महाघन ।
रमनिहुती जेहि ठओर तहापलिका में समागम,
रतिपति आतुर चतुर चारुगति गीति महातम ॥
दीप रुचिर जसु मुकुट मणि, अन्धकार परिहारतह।
लाजमन्ति तिअ तासओं, कवि दीपक हनुमन्तकह ॥
धवलधाम अभिराम धाम जामिनि जहँ जागति,
पओढ़ि परमपरजङ्क निन्दनअेंनन नहिं लागति ।
दिआदएन कताए पिआ कछु बोलतिनाहिन,
वति आतुर अतिचतुरनाह आयो तेही छन ।
पिअमौलि रतनरुचि दीपदुति परिहार किअ,
तवलाजमन्ति रागिनि रहि अएआसओ कवि दिपक
कहिअ॥

पद्यञ्च ।

द्विाप्रं निर्वाप्यदीपान्वचनमपि चिरं सन्नियस्थोपविष्टा-
सौधेपर्य्यङ्क सुसप्रणय वरवशप्रेयसी तामसीषु ।
ततोपेतस्ययस्यासमविशिषसरस्वान्त वेधात्कुतश्चि-
च्चूडारत्नप्रदीपात् सपदि समभवद्वीड़ितोदीपकःसः॥

अथ श्रीरागः ॥५॥

तुरएकन्धपरहत्थ सत्थबृषभादिक सुरगन ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एहिर अरुनतन तेजरंग मूरतिरङ्गित रन॥
दर्प्पमन्तरिपुदर्प्पदमन कन्दर्प्प दमन दुति।
वसनसोनँधरधीर वीरपल्लव सोहतस्रुति,
सिरिरागराग भूपतिरमण नृपतिरूप जगविदित अति।
सङ्गीतसारसुविचारि उर जेहि भनन्त हनुमन्त जति॥
एहि रङ्गसब अङ्ग जंगरिङ्गत जिमि पारथ,
वसनसोंन जगमगत सतत सङ्गी सुर सारथ।
तुरएकन्ध कर वाम काम कमनीय कलेवर॥
पल्लव कलितवतंस हंसगामी गुन सागर॥
नाद नगर हर वीनधन मगन होत जेहि जगतजत,
रागरमन सिरि राग जग नृपति रूप हनुमन्तमत॥

पद्यञ्च

रक्तारक्तानुरक्तस्सदलनदलनः सङ्गरे रङ्गमूर्त्तिः
कामी कामोपमेयःकनकमयपरिस्फीतवासाः सुवेशः॥
वाजिस्कन्धैकहस्तः प्रमथपतिपति प्रीत देवैःपरीतः
श्री मान् श्री रागराजो जयति किसलयैर्भूषिताभूष्यकर्णः॥
नील विमल दलकमल देह दीपति अति सुन्दर,
बसन पीत जगमीत सीतकर शुभ्रहृदञधर।
चातक चए करिविनय प्यासत्रासितजेहि जारत॥
मन्दहासमधुमधुर बाम वनमध्य विराजत॥
वरवीर तरुन रनविषयमहँ लहत चहत जेहिसकलजन
सवरागरमन तिहुभुवनजन मोहत सुनिधुनि मेघरव।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ मेघरागः ॥ ६ ॥

नील कमल दल विमल नील नीलिमगुन सागर।
हास कुसुम रुचि रुचिर चारु नारीवर नागर ॥
पीत वसन रनमगन जोवि जीवन घनदानी।
नारि नगर चहुओर कवहु कामिनि बनमानी ॥
चातक चाहत चोंच भरि नीर जासोंकरि काकुक्त।
नाद नगर मनमाद घन चन्द हृदए हनुमन्तमत ॥

॥ पद्यञ्च ॥

असित कमल कान्तिः पीतवासाः स्मिताम्यः
समदयुवति यूथान्तर्गत श्चन्द्रहृत्कः।
वितरति किललोके जीवनं यःस्वभावात्
स जयति समुपास्य श्चातकैर्म्मेघरागः ॥

इति श्रीराग तरङ्गिण्यां पुंराग रूप वर्णनन्नाम प्रथमस्तरङ्गः ॥ १ ॥

॥ अथ भैरव रागिण्यः ॥ दोहा ॥

वंगाली मधु माधवी अओरवराडी भानि।
सुघर भैरवी सेन्धवी भैरओ के तिअजानि ॥
वंगाली मधु माधवी वराड़ी भैरवीतथा।
सिन्धुरेतास्तु पञ्चस्यु र्भैरवस्य वरस्त्रियः ॥

॥ कवित्त ॥

तरुन तरनिअएसो तनके वरन जाके
तापर विभूति अति उज्जल विराजइ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सधर अधारी वाञें वगल में धरेंवीर ।
तैसे वाञें करमे त्रिशूल वरछाजइ ॥
ढ़िढकरि बांध जटाजूट पट पाटहीके,
जाके तप तेजतें त्रिविध ताप भाजइ ॥
जग में प्रमोद होत सीचत सुधा के स्रोत-
भैरव की भारजा वंगाली जब दाजइ ।

तत्र प्रथमा बङ्गाली यथा ।

कुण्डल करन रवि मण्डल वरन तन,
तामें नित लेपित विभूतिसित छारहए ।
वामे कर कीलित त्रिशूल करमूल तल
लम्बित अधारी वरनारी शिर दारहए ॥
जटाजूट राजए कुचं कुट से विराजए
एहि वीच वाजा वाजै तब आनन्द अपारहए ॥
सोहत सुघाट पटपाट के विराग रति
रागिनि वंगाली भाम भैरओ भरतारह ए ॥

॥ पद्यञ्च ॥

मार्त्तण्ड द्युति दीप्ति पूत भसिता लेपालिपट्टाम्वरैः ।
पातिव्रत्य विराग पिङ्गल जटाजुटैःस्फुरन्ती तराम् ॥
स्फूर्ज्जद्धूर्ज्जटि वल्लभा वरतनुस्सेयं वंगाली मिल,
छेप्तुर्न्निष्ठुर खण्डने पटुतरं यस्यास्त्रिशूलंकरे. ॥

॥ द्वितीया मधु माधवी यथा ॥ सवैया ॥

कञ्चन सी तन की छवि छाजति
तापर कुंकुम खओरि करीहए ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लोचन कञ्ज विशाल वनें,
लखि लालन की सुघरी उघरीहए ॥
कामक लोलते लोल भए,
हंसिकए करि चुम्बन अङ्क भरीहए ॥
एआसओकहए मधुमाधओसवए,
जग भैरव में तन आधघरी हए ।

॥ कवित्त ॥

कुन्दन कनक रस रूपतन तासें घन,
केसरि रगरि भरि किओ अङ्गरागहए ।
नीरज रुचिर दृग देखि रस वस होए,
कय चूवी भरिअङ्क एतओ भैरवके भागहए ॥
चितहू में मूरति विलोकी जिन कवहू कए,
जनमु के जोगी तिनहूँ को अङ्ग रागहए ।
अएसी मधुमाधवी रसीलीजिन सुनी नाहि,
अएसे जन जीवन जनम ही कोंधागहए ॥

॥ पद्यञ्च ॥

सन्दीप्त स्वर्णवर्णवपुषि परितरङ्घृष्ट काश्मीररागा,
मालोक्यापन्न कामस्सपदि निजपुमान् भैरवोयां चुचुम्ब।
आश्लिष्य क्रोड़ मध्ये रुचिरतर रवा मोदमासादयन्ती,
मध्वादि र्माधवीयं समद गजगतिर्गीयतेगीत मुख्यैः ॥

॥ तृतीया वराडी यथा ॥

सुखदेति सुखामन मों पति को,
वरचओरडोलाए डोलाए सुकेसी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पङ्कज में कर कंकन राजत,
रूपतिआ कि दिआदुति जएसी ॥
स्रोओंननिमे कलपद्रुम के दल,
फूल धरैतन दामिनि तअएसी ।
भएरव की वरनी वह नारि,
वरारि विचारि विचारि कअएसी ॥
कलधौत कङ्कन कलितकर तामरस,
चामर करति पति राग सिरदारसओं ।
लतिकासी कासीपति पतिका महासी गीत,
गतिका विराजए वरनारी उरहार सओं ।
रागिनि वराड़ी सुरपादप सुमन स्रओंन,
भूषन वनाएवनी सोरह सिंगार सओं ॥
दामिनी सी कामिनी कला में काम भामिनी सी,
जामिनी में देति सुख भैरओ भरतार सओं ।

॥ पद्यञ्च ॥

सुरनरु सुमनोभिः पल्लवै रेतदीयैः ।
श्रवण कृत विभूषा भैरवस्वासनस्थम् ॥
सुपति मनुनयन्ती चामरान्दोलनैर्य्या,
तड़िदिव कथितेयन्दीप दीप्तिर्वराडी ॥

॥ चतुर्थी सिन्धुर्य्यथा ॥

करपङ्कज सों धरे तीष त्रिशूल,
सदाशिव के पगु पाग पगीहए ।
अम्बर लाल विराजत वालहि,
मालवंधूक मयी हि लगीहए ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कोप प्रचण्ड उदण्ड भुजा,
रविमण्डल सी जाकि जोति जगी हए ।
सिन्धु सवए गुनसिन्धु कही,
कवि वीर रसा सबरङ्ग रङ्गी हए ॥
कोप परचण्ड रविमण्डल विजित जोति,
जामे भुजभीषन सुमेरु सम छाती हए ।
तीषन त्रिशूल कर वारिज विराजए जेहि,
शम्भु पग पागी जग जागी तिरिजातीहए ॥
लोहितर वसन लाल माल मधुरी की उर,
बीर रसमाती नितरंग ततिराती हए ।
सिन्धुगुनसिन्धुवन्धु वन्धुर वजाय जब,
गावत प्रवीन तब किन्नर सँघाती हए ॥

॥ पद्यञ्च ॥

कोपावद्धोग्र वेश भ्रुकुटि सहचरा रक्तनेत्राम्बुँ जात,
प्राप्त श्रीमत्प्रकाश प्रखर दिन कर प्राय काय प्रदीप्तिः ॥
हस्तेयस्यास्त्रिशूलं भुजगभुजयुगा सक्तरक्ताम्बर श्रीः ।
सिन्धुर्वन्धूकमाला कलित कुचरुचिर्भैरवस्यैवसेयम् ॥

॥ पञ्चमी भैरवी यथा ॥

रमनीय राजत अचल के शिखर पर,
पीठवर फटिक रचित रुचि भाओसओं ।
विकच कमलदल लएकए करअम्बुज में,
पूजएपारवती पति जूकों चितचाओसओं ॥
मञ्जुल मजीरा करलएँ पीत वरन हए,
करनलओ नऐन वरनिन जाति हारसओं ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इहए भाग भएरवीरसीली जगसुखदाइ,
भएरव की भारजा सुनिहए कविराओसओं ॥
पीरी करजोरि भरि नीरज रुचिरपात,
लएलए मन भाओ न मनाइवेको भाओसओं ॥
रजताचल माथी मनिमन्दिर फटिक पीठ,
तामें त्रिपुरारि पद पूजए चितचाओसओं,
भैरव से भरतार जासओं वस अएसीवाम,
भैरवी की कीरति सुनी है कविराओसओं

॥ पद्यञ्च ॥

रम्येराजत मेदनीधरवरे शृङ्गे मणोर्म्मन्दिरे,
स्फीतस्फाटिक वेदिकोपरिकराम्भोजेनिधायाम्वुजे
श्री कण्ठस्य पदद्वयं वरतनू स्सम्पूज्यमञ्जीरक,
द्वन्द्वंपाणिसरोजयोः कृतवती तन्नाद मातन्वती ॥

इति भैरव रागिणी कथिताः ।

॥ अथ कौशिक रागिण्यः ॥

टोडीओ खम्मावती गओरीगुन की थारि
ककुभ गुनकरी कविकही कओशिक तीअविचारि॥
चन्द की मन्दकरी तनकीछवि तासेंपुरेनिओलिअओडी,
केसरि के घनसार मिलाए मिलाए विलेपन कए तन थोडी,
कानन में करितानघनो सुखदेति कुरङ्गन कों करि कोडी।
रागिनि वीन धरै विलसय सब तें सरसए सोकहैकविटोडी

टोडी खम्मावती गौरी ककुभागुनकर्य्यपि।
एतास्तु पञ्चरागिरायः कौशिकस्य वरस्त्रियः ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

।। तत्र टोडीयथा ।।

विपिन समीप कवि लान परिवादिनीसङ्गों,
छक्यो वनचर वन वन तें कढ़ाओ हए ॥
अङ्कुर देखाए कर कोमल कपोल श्री के,
तातें मृगछओंना आनि अङ्क में बढ़ाओहए।
इन्दीबर दामराम साम से सरीर तामें,
कुंकुम मिलाए चारु चन्दन चढ़ाओ हए ॥
चौसठि कलालए कामी कौशिक मनाइबे को,
मानो हगनगिनी मनमथे पढ़ायो हए।

।। पद्यञ्च ।।

मलयज परि मृष्टोत्कृष्ट काश्मीर रागात्
पिहितसित तनुश्रीः कानने कञ्जदामा ।
करकमल विलुब्ध काङ् सम्बद्ध वीणा,
रणितहृत्कुरङ्गी शावका कापि टोडी ॥

॥ द्वितीया खम्मावती यथा ॥

कुन्द दुति सुन्दर शरीर सितवास मुख,
हास कल कोकिल कलाप तुलनाद हए ।
चोंप चित किन्नर समान करितान जेहि,
गावत वजाए नट नाही अवसाद हए ॥
भरत कहत नटनारायण नारी जेहि,
नाहीं हनुमन्त एआतें जामेनित वादहए ।
सेवित विरञ्चि कत गीत में विराजए नित,
लोचन रसीली पति होना परमादह ए ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कोकिल के तुलनाद प्रियस्वद,
सुन्दरताह दहए सुखदाई ॥
जान प्रवीन रसीलि हँसए,
वस होत सवएँ लखि जाकि लोनाई ।
जाहि कहए कवि जू हथ भारति,
भावति हए नट को सुठिभाई ॥
कौशिक की कुल बालक ही इह,
जानहु जान सुजान जनाई ।

॥ पद्यञ्च ॥

सुसित वसन हासोत्कृष्ट देहादि दीप्तिः,
कल कलिननिनादैः कोकिला बालतुल्या ।
नटन नट मनोज्ञा कौशिकस्यैव वामा,
समुदित गुणयोगा कापि खम्भावतीयं ॥

॥ तृतीया गौरी यथा ॥

दूषन विहीन नव पल्लव रसालही के,
कान में कमलनजिनी कियोहए बनाए कए ।
सजल जलद श्याम सोहत शरीर धीर,
बोलति वचन पिक कूजित जनाए कए ॥
रागिनि लिखी हए मत मत्त के विवेक,
कविकोहलें पुरातन सङ्गीत गनाए कए ।
गौरीवर वाम किल कौशिक कियोहए वश,
लोचन सुमति मानो मन्मथ मनाए कए ॥
सुन्दर स्त्रओंन में रम्य रसाल के पल्लव लालमए पिकवानी,
श्याम शरीर सुधानिधिसे मुखवारिकए बातकहैमधुसानी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जानि पुरातन के सत मीत संगीतन में कविकोहलें भानी॥
होत सुनें जनचओंन घने मन गोरिएकओशिकके पटरानी।

॥ पद्यञ्च ॥

संगीते कविकोहलेन कथिता कर्णावतंशीकृता,
श्रीमत्सत्सहकार पल्लवदला लावण्य कल्लोलिनी
गौरी कौशिक कामिनी कलरवैः केकेव कादम्बिनी,
कान्तिःकापि मनोरमा मृगदृशा मेषैव लेख्यापुरः।

॥ चतुर्थी ककुभा यथा ॥

अङ्गन अङ्ग रचओं विधि सओं रति,
मण्डन मण्डित वाम विराजति ।
सोम सुमाल सुशोभित आनन,
चम्पक दामन की छवि छाजति ॥
भीषन तीख कटाछ छटा वरिसए,
सरिसए पति सओं रति छाजति ।
दानवती ककुभा कहिअए जग,
जाहि सुने सब रागिनि लाजति ॥
कौशिक कमल नैंनकी रतीसी रति,
रीति की ततीसी कुच कोरकतनाइ हए
चम्पक पुहुपदाम वामहिम वाम मुख,
तीषन कटाछ पति प्रीतिकए मनाइ हए ॥
कामी कमनीय अङ्ग अङ्ग में अनंग सुख,
भूषन कला में किल काम की वजार हए ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दीन जन दानि नित लाजति सुरतही को,
कामिनि ककुभ कवि कोविदे जनाइ हए ॥

॥ पद्यञ्च ॥

रम्या रम्य बिभूषणैर्वरतनुः काम्या कला कौशलैः ।
श्याम श्रीःकवरीषु चम्पक चलद्दामाभिराम द्युतिः ॥
दात्री दीन जनेषु पोन कुचयोः शैलोपमेया परं,
सज्ञा कौशिक सङ्गमाय ककुभा नेत्राञ्चलंमुञ्चति ॥४॥

॥ पञ्चमी गुणकरी यथा ॥

सालसनञेनन लाल वियोगतें दृष्टि दयातन दुःखभरी हए,
आननकञोल नमाञें रहए एसु सुन्दरिकी नखओरि करीहए ॥
छूटि लुरए कवरी प्रिय संगम कों घन ज्वाल विशालजरी हए,
नेहत अअओ करुना कृश देह गुनङ्करिकों करतारकरीहए
कामिनि मुरुझि मुरुझाए मारै मेटतिह,
एहि तू अरुनाहि नित प्रीतमसुदूर हए ॥
वाउरी की नाञीं धूरि धूसर मलीन मन
भाञों न बियोग दशा बाम तन भूर हए,
चौदिश उवंन्ध चारु चामर चिकुर लट
छूट्यो दुरवार निशिवासर बिसूर हए ॥
लोचन सिनेह रस किङ्करि गुनङ्करि में
करुना विहीन विधि कौशिक से कूर हए ॥

पद्यञ्च ।

धूलीभिः परिलिप्त काय लतिका कीर्णा कचानां चयैः,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खेदात्सालस लोचना वरतनु र्म्लानाननं बिभ्रती ।
तन्वी स्नेह सरोवरे निपतिता कान्तस्य मूर्त्तिं हृदि,
ध्यायन्ती किल कौशिकस्य विरहान्मध्येचिरं रोदिति ॥५॥

॥ अथ हिन्दोलस्य, दोहा ॥

वेलाञ्चोल देसाख अरु, रामकरी सुबिशाल ।
ललिता अञ्रो पट मञ्जरी हए हिन्दोल की बाल ॥
नील सरोरुह सी तन की छवि छाजतिहए जेहि छएलछवीली
भूषन भातिन भाति वनावति हए
नख सञों सिखलञ्रो जो रसीली ।
दए अभिसार के मन्त्र सुकन्त को
काम के तन्त को जान रसीली
इष्ट मनम्मथ कों सुमिरए
हनुमन्ते वेलाञ्चोल कए कहि कीली ॥
बेलावली च देशाखो राम कर्य्यूत्तरा ललित् ।
पटमञ्जरी च पश्चैता हिन्दोलस्य वरस्त्रियः ॥

॥ तत्र प्रथमा वेलावली यथा ॥

सङ्गम सँकेत तन्त्रमन्त्रकही बालमको
वनिता रतन दिन पूछति सखीन सञों ।
भूषन बनाए सुख साधनशरीर करि,
अञ्जन करति किल लोचन सुमीन सञों ॥
नील दल कमल विमल दल दुति देह,
तेहि मच्योहएसिनेह नितमन्मथ विहीन सञों ।
इष्ट निज देवता मदन हीकों चिन्तति हए,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सत्वर न जात एअ्रातें शापदेति दीन सञों ॥

पद्यञ्च

श्री मन्नील सरोज सुन्दर तनु स्सङ्केत दीक्षां प्रिये
दत्वा मण्डन मातनोति वपुषःस्वीयेष्ट देवं स्मरन् ।
ध्यायन्ती प्रिय सङ्गमाय दयितानेतान्नुनाम्नुत्तमा,
हिन्दोलस्य हनूमता निगदता वेलावली न्निर्दिशेत् ॥१॥

॥ द्वितीया देशाख नाम्नी यथा ॥

सूरवीर सेवक समूह सदा सेवए जाहि,
राजए रोम हरख विशाल वाहुदण्ड हए ।
रोस रसभरी रहएभृकुटी तरङ्ग लसए,
जाकीर्वार भावसव ठओर में अखण्ड हए ॥
उंचेतनऊचे मनप्राकृत प्रचण्ड पुलिनि,
निविलनिखाद सदा नाद कलचण्ड हए ।
जाके रूप सुनेतें अवलऊ सवलहोत,
रागिनि हिंदोलकी देसाख वरि वण्ड हए ॥
नीरद से नवनील निचोल,
लसए तन दामिनि सी दमकए ।
कल कोकिल सी कमनीय कलध्वनि
अओछवि भूषन की चमकए ॥
प्रीतमही के समीप रहए
नसहए कटुताननतेतम कए ।
चित होत हुलास सुने जन में जव
एआछविराम करी जमकए ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उचेतनतामें दुति कुन्दन कनक सम,
सेविसुरवीरगन वाहु जमदगडहए।
समर प्रवीन तुल ताल के मचाए जेहि,
उन्नत उदगड रोम मगडल घमगड हए ॥
लोहित नयन रोसरस के सरूप सुर,
वृन्द मे निखाद रतिरागिनि प्रचगड हए।
लोचन देसाखजगती नति प्रताप तति,
रागिनि हिन्दोल वनिता में वरि वगड हए ॥

॥ पद्यञ्च ॥

प्रांशुःसन्नद्ध वाहुःप्रति सुभट रणाद्वन्द्व युद्धाय चञ्च,
ल्लोमाञ्चा धीरवीरैस्समरभुवि सदा सेवितातास्रचतुः
सन्तप्तस्वर्णा वर्णा वपुषिवर तनुः काप्यपर्णोविमल्लै,
स्तुल्या हिन्दोल भर्तुः पदकमलरतिस्सातु देशाखनाम्नी ॥

तृतीया रामकरी यथा

भूषण रुचिर सञ्चित तपस्या फल फलीहए,
कमल नञिनी हेम रुचि देहकी।
सुन्दर विविध गुन मन्दिर सरीर तेहि,
राजतनिचोल समता हए जेहिनेह की ॥
पवन चलाजेजब अम्बर चलत तवगोरी-
दुति होतिजएसी दामिनी की रेहकी ॥
मानिनि मनाइकों बालम परत पगुललना न मानए,
वलिहारी उन नेह की ॥
सपत पलाश फूले फूल तन तामरम,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लोचन अलस रसभिने असमानहए ॥
जाके गृह तेजि अतिप्रीतम हिन्दोल अति
प्रातहिजे होतजात कातरमलानहए ।
एआसओं हनुमन्त कवि ललिताकह्योहए
अतिललिता विलासी पिअदेति जिअदानहए ॥

॥ पद्यञ्च ॥

प्रफुल्ल सप्तच्छद पुष्प गुच्छैः,
स्वच्छाय कायः सुविलासि वेशः ।
यस्याःपतिः प्रातरपैति गेहा,
द्विनिद्रचक्षूर्ल्ललितातु सैव ॥

॥ पञ्चमी पट मञ्जरी यथा ॥

चकित चकित चहुओर चितवति पति,
नाहिनदेखति अति थकित सरीर हए ॥
सखी कमलासी कत करति प्रबोधतउ
दामिनि समान कुल कामिनि न धीर हए ॥
सबएनिरवारि वर भूषन विनोदी कन्त,
गुथी उरमाल वाल सुषन समीर हए ।
प्रीतम हिन्दोलपरि दीन तन छार भरे,
रागिनि विषिन्न मनके हूँ कएन थीर हए ॥
फूलधरै विषमच्छद कें अतिज्वाल
अओगानगुमान गहैंहए।
लालसे लोल विशाल विलोचन
आलसमन्त सनेह सनेहए ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आछेविजात प्रभात में जापति
जा सुधतें सुखलाख लहें हए ।
तासञो हिन्दोलनकी वनिता ललिता
ललिता हनुमन्त कह्यो हए ॥ १ ॥
बालवियोगिनि दीपति मन्त विसीरन देह सनेहें सनेहए,
कामके झारहैंसीनभए अति फूलके माल गलेमें वनेहए।
प्रान समान विधान धरें सखिञा समधान करें जोघने हए,
हार भरेतन ठञोर नही एञापटमंञ्जरिभाञोभनेहए ॥

॥ पद्यञ्च ॥

हिन्दोला पटमञ्जरी विरहितातप्ता तनुज्वालतः
कृत्वासा हृदिवल्लभेनरचिता वालामथो रोदिति ।
आश्वस्ता शतशः श्रिया करुणाया सख्या तथापि प्रिय,
स्नेहाम्भोधिविलीन दीन मनसा तं सर्वतः पश्यति ॥५॥

। अथ दीपक रागिण्यः ॥

केदारा कानरा चैव देशीकामोदके तथा ॥
विहागरा इतिख्याता दीपकस्यैव वल्लभा ॥
केदारा अञो कानरा देशी ञो कामोद ॥
वनी विहागर रागिनी दीपक की मनमोद ॥

शिर सोहत जाके जटाजूट सुन्दर,
चन्द कला विलसन्तु उदारा ।
नादमयी उपरैनाधरें अवध्याननिमे लगिलोचन तारा
सोगहरें जोग पट्ट धरे जोदुनी पर दीपति दीपक दारा,
तासञो कहै कवि जूह विचारि,
विचारिवियोगिनिवाज केदारा ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ तत्र प्रथमा केदारा यथा ॥

गैरि सुरङ्ग वरअम्बर जुगल शिर,
जटिल ललाट कलाराजए हिमधाम की।
जोगिनि पिनाकी ध्यानधारना निरतिएआतें,
लोचन नलिन तारामूदी कुलवाम की।
भीषन भुअङ्ग भए भाजन सरीर तेहि
लपटञे दिसातिकत हाटक उपाम की ॥
दीपक की दारा जगरागिनी केदारा नी की,
फीकी अओर रागिनी जगत केहि काम की ॥

॥ पद्यञ्च ॥

जटाःशिरसि योगिनी शशिकलाङ्कपालेविशु,
ग्विषोल्वणा भुजङ्गमान्वपुषि सर्वतोविभ्रती
सुगैरिक विलोहिते विमल वाससी दीपका-
दूगतावत विहागरा रहसि शङ्करं ध्यायति ॥

॥ द्वितीया कानरा यथा ॥

दछिन पानि कृपान धरैं कर वाञें विराजत दन्तिकदन्ता,
किन्नर चारनजन्न अओरन्न विलछन अस्तुति कएककहन्ता।
जानत जाहिनको जग में जनजीव समान करी जेहि कन्ता,
बूझि विचारि कही मुनि बृन्द निकावर कानन के रसमन्ता ॥
वाञे गजदन्न करदाहिने कृपानकरि,
कामिनिनिरन्तर रहति वनवीच हए।
जामिनि जमकि जब बाजा में वजति,
तवरसन के भहि वहि जात नहि कीचहए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जाकीकलकीरति करत सुरलोक सोक,
नेकुन रहत तिअनादहीतें मीच हए।
दीपक रसीली रसभीनी बनी कानराए,
भावतिन जाहि सोतओ मानुषों न चीच हए।

॥ पद्यञ्च ॥

करेवामे स्तम्वे रमदशन शुभ्रासि मपरे,
वहन्ती सङ्गीते कथित गति रङ्गी कृतरतिः॥
पतिर्यस्या सेयं विपिन निरता दीपकजनी,
जनानांजीवातुः कविनिगादिता कानर इति ॥१॥

॥तृतीयो देशीया॥

सोअतु जगावेए नितप्रीतमपकरिआपु,
कामकी पुजारी वरनारी निसि जागइ।
कन्त को नचाए रति सङ्गर मचाए कत,
तीष नखरेखदन्त घात करिदागइ॥
पहिरे सुरङ्ग वर अम्बर हरीत सारी,
नारीकि नाहिन नयन मन लागइ।
दीपक कलित रति देसी भरीभावहीले,
रागिनि सुनत दुख दहेतेजि भागइ॥
गोरिसो अङ्ग अनङ्ग भरीरति आतुर,
सोअत कन्त जगावए।
सोछ दुकूल सुआ केसोपोछति
आपहिरेंजो तिआमन भावए॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जानत जाहिसवए जगमें रसपूरन तूरन भाव बुझावए,
देसिए दीपक की दयिता जेहि जोहि सदा सुरबृन्दइगावए

॥ पद्यञ्च ॥

उन्निद्रामदनज्वरेण रमते निद्रागतं कैतवा-
दुत्थाप्यप्रमदा तुरा स्मरपराधीनञ्च कृत्वापतिम् ॥
गौरी भाव विभङ्गुराङ्गलतिका कीराच्छपद्माद्युति,
स्वच्छा डम्बर मम्बरंविदधती देशीतु वेशाधिका ॥

॥ चतुर्थी कामोद नाम्नी यथा ॥

झामर झीन मलीनसरीरमे सोहत लालपटम्वर सारी,
कोकिल के छल नादकिऐ कतरो अति काननमें वरनारी ॥
भीति दसओ दिश देखति हए
नहि देखति वालम वाम विहारो
पीर परी सिर पीटति हए सो
कामोद कही कवि दीपक प्यारी ॥
पहिरे वर अम्वर पीत पटम्वर
अओजे वएरि करए विपरी ॥
कलकोकिल से कमनीय कलध्वनि,
रोअति हए वनमाहखरी।
भए भीति दशओ दिश देखति हए।
पिअकी सुधि आऊतिजातिजरी ॥
जग जाहिसुने मन मोहत हए
सो कामोद कहा हनुमन्त हरी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ पद्यञ्च ॥

नादैस्सा कल कण्ठिकेव दधती पीताम्बरं सुन्दरी,
भीता दिक्षु विदिक्षु:दत्त नयना नाथन्तु नोपश्यति॥
तिष्ठन्ती वत कानने वनचरी वान्त: कृतान्तोपम.
श्रीमत्कान्त वियोग शोकखचिता हा सुस्वरं रोदिति ।४।

॥ पञ्चमी विहागरा यथा ॥

आनन चन्दसो मन्द गहैं गतिहए
अति सूरति की अधिकाइ ।
लाल पटम्बर वाल वड़े ते वड़ेइ वड़े कुच चाह उचाइ ।
नवेंनवने वनिता सिरदार वने विधिसञो विधिना नें वनाइ.
नारद तम्बुरसारद आदिकए वीन वजाए विहागरगाइ ॥
चामर चिकुर हिमधाम मुख धनुभौंह
लोचन सो मीननासा केसु अनुरूप हए ।
दन्त दाना दालिम के विद्रुम अधर कर,
कोकनद कुच कुम्भ नाभीअन्ध कूप हए ।
वेदी कीसी लिकसानु सुन्दर नितम्ब जंघा
थम्भ पदपल्लव नख किंसुकउडूप हए ।
पाटम्बर लाल जेहि गञोनगजराज के से
विहागरवानी अएसो दीपक सो भूप हए ॥

॥ पद्यञ्च ॥

शैवालोपम लम्बमान कवरीभारा मुखेन्दु द्युति:
दृग्भ्यांखञ्जन गञ्जिनी गजगति: शैलाग्रतुङ्गस्तनी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रक्तापट्टपटाद्विहागरइति ख्यातामहीमण्डले,
श्रीमद्दीपक पुण्य पुञ्ज रुचिरा मूर्तिर्जगन्मोहिनी ॥

अथ श्रीराग रागिण्यः ॥ दोहा ॥

ऋतुपति माल ओ मालस्री, धन्य धना स्रीजान ।
आसावरी भरी रसन, श्री के पांचओप्रान ॥
मोर के पछ सो बांधे विलछन
जासिरसो छसोबालविराजत ॥
लाल रसाल न के अवतंस प्रसंस,
तिआनत अंस में छाजत ॥
नील सरोज समान सरूप
विलास हुलास सवए जेहि गाजत॥
रागिनि राज वसन्त कही इह
जाहि सुने तनतें दुखभाजत ॥
वसन्ता मालवा चैव मालस्रीच धनासिरी ॥
असावरी च पञ्चैताः श्री रागस्य वरस्त्रियः ॥

॥ तत्र प्रथमा वसन्ता यथा ॥

चामर चारुसिरोरुह मांह लसय
सिखि पिछ हुलासमयी हए ॥
स्रओन में रम्म रसाल के पल्लव,
तातें विलासिनिवेस भइ हए ॥
नीलसरोरुह सी छविछाजति गाजति हए वरवएसैंनइहए ।
लोचने अएसि वसन्न कही,
सिरिराग सोहागिनिदै अदइ हए ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुण्डल मण्डित हए श्रुतिमण्डल,
कीर तनूरुहसे तनु सुन्दर ।
आनन कओोल विलासिनि चुम्बित,
नओोल नितम्बिनि से मदमन्दर ॥
लाए गले मनिमाल विशाल,
प्रदोष समञेवसि वास के अन्दर ।
गाओत जाओत वीन वजाओत,
राजत मालव रागपुरन्दर ॥

॥ पद्यञ्च ॥

चूतप्रसूत नवपल्लव कर्णपूर,
संशोभिता विमलनील सरोज दीप्तिः ॥
वर्ह प्रवेश वर चामर चारु केश,
वेशाविलास परिहास रसा वसन्ता ॥

॥ द्वितीय मालव नाम रागिनी ॥

गण्डघमण्ड किञे नव कुण्डल,
मण्डलमण्डित हए अनुपामा ।
तोतन सीतनुकान्ति लसए,
लखि होत महामुनि है मन वामा ।
साँझ समओ वसि वास विनन्दि में,
वास करै पति सञोवति धामा ॥
जोवनभार गुमान भरी सिरि,
रागनितम्बिनि मालव नामा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ पद्यञ्च ॥

कान्तिः कीरतनूरुह प्रतिमतां धत्ते समुल्लासकृत,
लावण्यं मणिमालयाश्रुतितटी यस्यास्तुताटङ्किनी।
सायन्तत्परिहास वेश्मरुचिरं गत्वा नताङ्गी मुहुः,
श्रीरागेणविनोद मेतिमनसस्सेयं मतामालवा ॥२॥

॥ तृतीया मोलस्री यथा ॥

वएठीवनी सहकार महातरु
छाँह लिजे वरवाम विराजए।
सूध सुधारस सी विहुसी
मुखपङ्कज मे दसनच्छद छाए ॥
दूलमना मनही में गनए
कर वारिजपत्र पवित्रतें लाजए।
माल सिरी सिरीराग वधू
सुरराजत ही जियतें दुख भाजए ॥
लाल सरोरुह वाल धरें
कर रम्म रसालवएठि कए छाहन ॥
पङ्कजपत्र गतए मनही मन
दूवर देह लताचित चाहन।
आनन चन्दसो मन्द लसए
विहुसी नव अमृत के मद चाहन ॥
पञोन तनये मत सम्मत कए,
उरमाल सिरीवरजी कविनाहन।

॥ पद्यञ्च ॥

सस्मेरानन वक्त्र चन्द्ररुचिरोरष्कुम्भ युग्मानमत,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तन्वङ्गी हृदयेन हन्त गणयत्यम्भोजपत्रावलीम् ।
गौराङ्गी सहकार सारसघनच्छाया निखण्डापरं,
श्रीरागेण विनोद मेतिमनसस्सेयं मलामालस्री ॥३॥

॥ चतुर्थी घनास्री यथा ॥

जौवन ही तनदूवदलदुति दूवरिहए अतितउदीपति,
कएसे सकए सहिओए विरहज्जर
तातें लिखए पटप्यारे की सूरति ।
छीन कपोल धरैं कपिलच्छवि
नअॅन के नीर छपी कुच मूरति
रागिनि रागिनि में अति गणय हए
धन्य घनासिरि वएठि विसूरति ॥
झीन पटम्बर लीन मनोहर दूबर देह लता झलकए,
कपिल च्छॅवि छीन कपोललिजॅं उर लोचन नीर नरीछलकए।
दूयसिरी सि घनासिरि स्त्री विलखए विरहज्जर तें दलकए,
सिरिराग वियोगिनिजोगिनिसी जेहिदेखत ही हिअराहलकए।

॥ पद्यञ्च ॥

सजल धरणि दूर्वा दीप्तिरुद्दग मूर्त्तिः,
कर कलित शलाका कान्त मूर्त्तिं लिखन्ती।
वतकपिल कपोला सावसन्ना घनास्त्री,
विरह दहन दूना बाष्पधारा जहाति ।

॥ पञ्चमी असावरी यथा ॥

मलयाचल के वर श्रृङ्गनि में रङ्ग रङ्गन भातिनभातिकरए,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तनमोर के पिच्छ परिच्छदकए गजमोतिमहार हिऐंमेंधरए ।
हरिचन्दन तें फनिराए लगाए किऐंकरकङ्कन रूप हरए ।
सुरसारि संगीत विचारि असावरिअएसी कहीजगप्रीतिकरए
रङ्गरङ्गी मलयाचल सृङ्ग में सएल करए कत भांतिबनाइ ।
चन्दनतें फनिआनि महामनि कंकन कएतनुमांह तनाइ ।
मालगले गजमोतिन के सिखिपिच्छलिऐं कवि जू हैं जनाइ ।
वीनप्रवीन बजावतहए जगअएसि असावरि मानमनाइ ॥

॥ पद्यञ्च ॥

विषधर करभूषा सञ्चरन्ती सुतुङ्ग,
मलयशिरसिपिच्छै र्ल्लिञ्छिता दीप्तमूर्त्तिः ।
सुललित बहुमूलस्थूल मातङ्ग मुक्ता,
विमल हृदय हाराऽसावरीयंविभाति ।

अथ मेघराग रागिण्यः ॥ ६ ॥

मलारी देशिका चैव भूपाली टङ्कके तथा ।
दक्षिणा गुर्ज्जरीचैव वारिदस्यवरस्त्रियः ॥

॥ तत्र प्रथमा मलारी यथा ॥

आनिवनी जब जोबनतें तब कामिनि के ढिगनाहि पिआ ।
तेहि कारणते मनहीमनखीन मलीनि भर्आमतिहीनतिआ ।
वीनलिऐकर राग किऐं करुनस्वर गाउति जोति दिआ ॥
नब नीरदकी वरनारिमलारि विलोकतही दलिजातहिआ ।

पद्यञ्च

प्रथम वयसि तादृक् प्रेम्निपत्युर्वियोगात्,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मलिन वसन बेशा पाण्डु गण्डाननश्रीः ।
स्मरति विधृत वीणा कामिनी कान्त भारात्
सकरुणमति दीप्ति गीतसत्कैतवेन ॥

द्वितिया देशकारी यथा ।

पीनपयोधर वञ्जेन सुधा करकुङ्कुम के छवि देह धरे हुए ।
अञ्जन अङ्ग बनी तरुनी दृग वारिज से वर वेस करे हुए॥
केलिकलाअति प्रीतिमती पति के नितही नितचित्तहरेंहुए॥
बूझि विचारि कही देशकारिए मेघप्रिया सबरागपरें हुए ।
कुङ्कुम की दुति दीपितदेह लतानितहीं नित कन्तरता हुए ॥
नञ्जेन बनें वर वारिज से जेहि चन्दमुखी नव कुन्ददता हुए ।
वेसबनी गिरिराज उरोज लसए रतिसीरति रीति तहाहुए ॥
वारिदकी दयिता देशकारिए अएसिकही हनुमन्तमता हुए ।

॥ पद्यञ्च ॥

कान्ता कुङ्कम लेपतः स्मितसुधा निस्यन्दि चन्द्रानना,
सत्प्रत्यङ्ग विभूषणाम्बर वलञ्जेलार विन्दद्युतिः ।
शैलप्राय पयोघरा रतिकला चातुर्य्य धैर्य्यादिभिः,
श्रीमत्कान्त घनस्य मानसगता सेयन्तु देशीमता ॥२॥

॥ तृतीया भूपाली यथा ॥

गोरेसो अङ्ग सुधानिधि सो
सुखतुङ्गउरोज धराधरतें ।
करें कुंकुम के तनु में अनुलेपन
पीर परी विरहज्वरतें ॥
हरध्यान रता ममता रस ताहि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मनोहरता विरता धरतें।
वरनी वनिता वर वारिद कीए
भूपालि भलेंसुर सागर तें ॥

कंतवियोग वेआधितेधाधि वरए जेहि शम्भुसमाधि लगी हए
लोचन साओनमेंमनभाओन वारिद के पग पाग पगीहए,
आननसोमसमान सुशोभित केसरअङ्गमें रङ्ग रंगीहए॥
कुञ्जर चालि भुपालि कही जेहि गोरपयोधर जोति जगीहए

पद्यञ्च।

काश्मीरारुणकान्ति कायलतिका लावण्य कल्लोलिनी,
पर्वेन्दु प्रतिमानना हरिणदृक् शैलाधिराजस्तनी।
गौराङ्ग्याः किल वारिदस्य विरहात् खेदं वदामः कियत्,
कुत्रापि प्रियसङ्गमाय गिरिजाकान्तंहृदि ध्यायति ॥

॥ चतुर्थी टङ्कनाम्नी यथा ॥

नलिनी दल की अति सीतल सेज में
सोअति वामवियोगिनि तालखि।
काकु सुनी बहुतए सुनि कए अति
व्याकुलचित्त ओए चितभए जखि,
सोनके रंगसि अंगसिरी उहपाए
कहूतँ अओ अङ्कलइ कखि ॥
एआसजों कहए कवि कोविदटङ्क
मयङ्क मुखीसन वात कही सखि ॥

पूरन चन्दमुखी विदुखी तन
सोंन सिरीसि सिरी छुटकए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नलिनी दल सीतल सेजें सुती
कत रोवति वालम की रटकुए ॥
वारिद वामवियोगिनि तालखि
आए गए तवहीं झटकुए ॥
भरि अङ्क विलोकि कए टंक तिरी
फिरि नाहलइहि अरातटकुए ॥

॥ पद्यञ्च ॥

रमणघन वियोगा त्कुत्रचित्पद्मिनीनां,
दलविरचिततल्पे सुन्दरी रोदितिस्म ।
पतिरपि किल दैवादागतोऽस्यास्तदानी,
महह विमलमङ्कं वल्लभा मानिनाय ॥४॥

॥ पञ्चमी दक्षिण गुर्जरी यथा ॥

धामकिजे मलयाचल में
तनस्याम सुशोभित वारवने हुए ।
पल्लव को सुख सेजविछाए
अछाइ सजवेलि के तम्बूतनी हुए ॥
वीन धरें लघुराग वजए
वहुतान सुतिस्वन भेद भनें हुए ॥
दच्छिन गुज्जरि उज्जल वेस
संगीतन में जाकेगान गने हुए ॥

प्रीतिदुखी हिम धाम सुखी
मलयाचल धाम में वाम विराजति ॥
वीनलिजे कर राग किजें वर
तान तरंग को कामिनि साजति ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बेलि विलच्छन तम्बुरिओं तहां
पल्लव सेज सुती नित गाजति ॥
दच्छिन गुज्जरि ऐसीकही कविओं
तन रूप सुने रति लाजति ॥

॥ पद्यञ्च ॥

यस्याः श्रीमलयाचले विचकिलै रावास वेश्मारुण
श्रीमत्पल्लवतल्प भाग्वितनुते वीणा धुरीणाध्वनिम् ।
सद्वेशाघन कामिनी कचरुचिस्संगीत संख्यावतां
मूर्द्धन्या किल किन्नरीव भुवने सेयंमतागुर्ज्जरी ॥५॥

इति श्रीलोचन शर्म्म विरचितायां रागतरङ्गिण्यां रागिणी
मूर्त्ति निरूपणन्नाम द्वितीयस्तरङ्गः ॥२॥

अथैतेषा मुत्पत्ति निदानं नादो निरूप्यते ॥ तत्राभियुक्ताः ॥

नाभेरूर्द्ध्वं हृदिस्थाना न्मारुतः प्राणसंज्ञकः ।
नदतिब्रह्मरन्ध्रान्ते तेन नादः प्रकीर्त्तितः ॥
आकाशाग्नि मरुज्जातो नाभेरूर्द्ध्वंसमुचरन् ।
मुखेति व्यक्ति मायाति यस्सनाद स्मईरितः ॥
सचप्राणिभव, अप्राणिभव, उभय सम्भवश्च ।
आद्यः कायभवो वीणादि सम्भवस्तु द्वितीयः ॥
तृतीयोऽपिच वंशादिभवइत्थं त्रिधामतः ।
यदुक्तं ब्रह्मणः स्थानं ब्रह्मग्रंथिश्च यो मतः ॥
तन्मध्ये संस्थितः प्राणः प्राणाद्वह्नि समुद्भवः ॥
वह्नि मारुत संयोगान्नादः समुप जायते ॥
न नादेन विना गीतं न नादेन विना स्वरः ॥
न नादेन विना ज्ञानं न नादेन विना शिवः ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एतादृश नादमथ स्वर मूर्छनाऽधीना च रागोत्पत्तिः तदुक्तं,

स्वरस्संमूर्छते यत्र रागतां प्रति पद्यत इति ॥

मूर्छना च गीयमान गीते क्वचि ज्ज्ञायत इति गीतं निरूप्यते ॥

तत्राभियुक्ताः

धातु मातु समायुक्तं गीतमित्युच्यते बुधैः।
तत्र नादात्यको धातु र्म्मातुरक्षर संचयः ॥

अतएव केवलाक्षर संचये गीत व्यवहारस्तु भाक्त इति मन्तव्यं

तच्च गीतं द्विविधं

गीतन्तु द्विविधं प्रोक्तं यन्त्र गात्र विभेदतः।
यन्त्रं स्याद्वेणु वीणादि गात्रन्तु मुख मुच्यते ॥

॥ इत्युक्तेः ॥

प्रत्येक मेतदपि द्विविधम्,

निवद्ध मनिवद्धञ्च गीतन्द्विविधि मुच्यते ।
अनिवद्धं भवेद्गीतं वर्णादि नियमैर्विना ॥
यद्वागमक धात्वङ्ग वर्णादि नियमैर्विना ।
निवद्धञ्च भवेद्गीतं ताल मान रसाश्चितं ॥
छन्दोगमक धात्वङ्ग वर्णादि नियमैः कृतं ।

गमकाः कम्पितादयः धातुर्न्नादः, अंगानि पदानि, तेन विरुदादीनि तालाश्चचपुटचचपुटादयः मानन्तु प्रसिद्धं, रसाः शृङ्गारादयः छन्दांसि एला भूम्व तालादीनि, एतेषां प्रपञ्चस्तु मत्कृत राग सङ्गीतसंग्रहेऽन्वेष्टव्यः, तादृशमपि गीतंद्विविधं, (मार्गदेशी विभेदेन गीतन्तु द्विविधं मत), इत्युक्तेः मार्गास्तु गन्धर्वादिः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत गतयः, देश्यश्च तद्रागाश्रितास्ता स्ता स्तत्तद्देश गीत गतयः, इह तु मार्गाभावा न्नोदाहृतास्ते अग्रे तु क्वचिदुदाहर्त्तव्याः, देश्यामपि सुदेशीयत्वात्प्रथमं मिथिलापभ्रंश भाषया श्री विद्यापति कवि निबद्धा स्तास्ता मैथिल गीत गतयःप्रदर्श्यन्ते ॥

॥ तत्रप्रथमं तदुत्पत्ति प्रदर्शनम् ॥

विख्यात भूदेव सुवंश सूति र्विद्याविभूति र्भवभूतिरासीत्
स देवतायाः किल सिद्धि योगात्काव्य स्पुराण प्रतिम श्चकार ॥
अधीत्य तत्संसदि पार्थिवेभ्यः कथास्तदीयाः कथयाम्बभूव
अतस्तदानीं सुमतिः कलावान् कायस्थसूनुः कथकोबभूव ॥
सुमति सुतोदय जन्मा जयतः शिवसिंह देवेन ।
पण्डितवर कविशेखर विद्यापतये तु सन्यस्तः ॥
एतैस्सङ्गीतविद्भिः सुरनिकरसरित्कान्तमन्तर्विगाह्य,
प्रोन्मीलत्सु स्वरौघ प्रविततगतिकाः कल्पिताः केऽपिरागाः
तद्गानार्थन्तु विद्यापति कवि कृतिना कल्पितास्तुध्रुवा याः
तासामेकोग्रगाताऽभवदिह जयतः संसदि श्री नृपस्य ॥
पितुरन्यूनगुणाःकिल कलाभिरानन्ददः प्रथितः ।
जयतादजनि वितृष्णः कृष्णोनिजदेशि गायकस्सदसि ॥

ततश्च

विमल मतिरतीश प्रायकायः कथाया-
स्सदसि कथनकारी गीतगाने गरिष्ठः ॥
सफल जनिरनन्यज्ञान सामान्य विद्या-
विदित हरिहराख्यो मल्लिकः प्रादुरास ॥
खड्गराम घनश्याम कल्लीरामास्त्रयः सुताः ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एतस्य वत तेष्वेको घनश्यामस्तु गायकः ॥
रामान्ता लक्ष्मिराघव टीकाख्याः शीलसम्पन्नाः ।
सुदेशिगायकास्तेतु घनश्याममुतास्त्रयः ॥
श्रीमद्विद्यापतिकवयितुः काव्यवर्णानुबद्धाँ,
स्तत्तत्प्रायानथतदनुग ख्यातगीतै र्न्निबद्धान् ।
रागानेभ्यः कथमपि तथा वर्तुलीकृत्यधीमान्,
प्रेम्णा श्रीमन्नरपतिरतो लोचन स्ताँल्लिलेख ।

॥ तेच ॥

भैरव्यथ बराड़ी च कौशिकःकस्यचिन्मतः ॥
देशाखःसुखदा रामकरी च ललिता तथा ।
केदारश्चापि कामोदः श्री रागोऽथमधुस्तथा ॥
मालवश्चाशावरी च मलारीमदिरेक्षणा ॥
भुपाली गुर्जरी चैव षट्त्रिंशद्राग मध्यगाः ।
तीरभुक्तौ विजातीया ज्ञतिमासाद्य संस्थिताः ॥
तीर भुक्त्यन्य देशेभ्य स्तीरभुक्तौ विलक्षणाः
स्वरभेदात्परं नाम्ना तेनतेनैव विश्रुताः ॥

॥ तत्र प्रथमा भैरवी, इयन्तु भैरवभार्य्या रूपमुक्तं प्राक् ॥

एतस्यास्तु गीतोत्पत्तिकत्वा त्तदुदाहृयते, तत्र जयदेवः ।

रजनिजनित गुरुजागर राग कषायित मलस निवेशम् ॥
वहति नयनमनुराग मिवस्फुट मुदित रसाभि निवेशम् ॥
हरि हरि याहिमाधव याहिकेशवऽमावद कैतव वादम् ।
तामनुसर सरसीरुहलोचन यातव हरति विषादम् (इत्यादि सुप्रसिद्धम्) अथाल द्रुत लघुगुरुप्लुत घटितान् चचपुटच

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पुटादि तालान्विहाय, तत्तत्रात्युत्पन्नानामलसानामपि झटिति तालगतिज्ञानार्थं सत्वर मध्यम विलम्बितत्वेन सकल सिद्धान्तानादाय तालगतयः प्रदर्श्यन्ते ।।

॥ दोहा ॥

दोएसत्वर अरुमध्य दोए, एआमे चारिए ताल ॥
एआतें बहिबहिजात सुर, तबरागिनिहोति बिहाल ॥

॥ इति मिथिलानुसारेण भैरव्युदाहरणम् ॥

॥ अथ द्वितीया भैरव रागिणी बराड़ी ॥

इयन्तु, राघवी, पहडिआ, देशी, माधवी, भठिआली,
नेपाली, चेति मिथिलायां षड् भेदवती ॥
भेदबुध्यर्थ मेतेषां देशिगीतेषु कल्पितैः ॥
छन्दोभिःक्रियतेकोऽपि नियमोयममानकः ॥

छन्दसान्तु लघु गुरु घटितत्वेन, तद्वयवस्था ।

दीर्घो दीर्घेण संयुक्तो विन्दुभाक् सविसर्गकः ॥
संयुक्तादि रिहप्रोक्तो गुरुरन्यो लघुः स्मृतः ॥
एकारश्च तथोकारः शुद्धोवर्णयुत स्तथा ॥
रहयुक् पूर्वकोः लःस्यात्पदान्तो वा लघुर्म्मम ॥

॥ अथात्र गणज्ञानार्थं प्रस्तारः ॥

अधस्तादाद्य गस्यस्या ल्लघुः शेषं समङ्गलैः ॥
पूर्वगैरुद्धरेन्मात्रा गैस्तु वर्णान् प्रपूरयेत् ।
सर्वत्रात्र त्रिवर्ण प्रस्तार गणानेवादाय सद-
सत्फलादि कथन मिति ते प्रदर्श्यन्ते ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

त्रितयार्णा प्रस्तारे भूदक शिखिकालख रविचन्द्रा हि सुराः
मयरसतजभन संज्ञाः गणास्तु निजदेव तुल्यफलदानपराः ॥

॥ अथ राग सामान्य लक्षणम् ॥ तत्राभियुक्ताः ॥

यैस्तु चेतांसि रज्यन्ते जगत्त्रितय वर्त्तिनाम् ।
तेरागा इति कथ्यन्ते मुनिभिर्भरतादिभिः (इति) ॥
तथा च–चित्तानुरञ्जक तालाद्य प्रच्युत स्वर
समूहत्वंरागत्व मित्यत्राभियुक्त तात्पर्य्यम् ॥

चित्तन्तु, सचेतसां नातः पामराद्यनतुरञ्जक सद्रागेप्य व्याप्तिः, अत्रच, चित्तानुरञ्जकत्वमात्रोक्तौ तादृङ्मनुष्यादावप्यतिव्याप्ति रिति विशेष्य दलं--विशेष्य दल मात्रोक्तौ च चित्तानु रञ्जक रागा भासातिव्याप्ति रिति पूर्वदलम् । तालाद्य प्रच्युतत्वा प्रवेशे च, प्रच्युत तरङ्गुराग एवातिव्याप्ति रिति, एतेन रागिणीष्वपि रागपद प्रयोग स्साधुरत एव मालाधरो मालवराग राज इति जयदेव प्रयोगः ॥ देशाखरागः-किल मल्लमूर्त्ति रिति दामोदर प्रयोगोऽपि सङ्गच्छते ॥

॥ अथ वराड़ी प्रथम प्रभेदभूता राघवी ॥

एतदादि तत्प्रभेद रागरागिणीनां विशेष लक्षणाञ्च तत्तच्छन्दो घटित गीतोत्पत्ति कत्वमिति ॥
यदि चान्योपि राग स्तत्रोत्पद्यते तदा तदन्यत्वमपि तद्राग लक्षणेदेयमिति ॥

॥ राघव्याश्च ॥

॥ राघवीय–वराड़ीयं छन्दः ॥ लक्षणम् ॥

सप्तविंशति मात्राभिः पदस्य प्रथमार्द्धकम् ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्वितीयार्द्धे तु विन्यस्ता स्त्रिंशन्मात्रास्तु यद्‌गताः ॥
ध्रुवकं नवमात्राभि रर्द्धमर्द्धन्तदन्तिमम् ॥
चतुर्दशमिताभिस्तु विरतौ बहुधा गुरुः ॥
अनेनामानकेनापि नियमेन विभूषितम् ॥
एकद्वित्रिकलाहीन मेकद्वित्रिकलाधिकम् ॥
राघवीयझराङ्गीयं छन्दस्तामत्र सन्नयेत् ॥

॥ उदाहरणम् ॥

साँझक बेराँ जमुनाक तीराँ कदवेरि वनतरुनराँ
अकमि कानरा कि कहब काला सोभाँहि जुझल
सखि कुसुम सरा ॥
मोहि भेटलकान्हू, अनतए कहिनी कहह जनू ॥
उरचिर हरी करें कचधरी अधर पिवए मुख हेरी ।
पुनु पुनु भोरा परस कुचमोरा
निधने पाओल जनि कनयक चोरा ॥
अरे रे जुवती बुझलि जुगती दोसर मधुर मधुपती
तोरे अनुमानें विद्यापति, भानें
राए शिव सिंह लखिमा देइ रमने ॥

॥ इति विद्यापतेः ॥

ममतु-आनन्द कन्दा पुनिमक चन्दा सुमुखिवदन तह मन्दा ॥
अधरेमधुरी सामरि सुन्दरी विहुसि जिनए सित कुसुमसिरी ।
पथमिललिघनी, दामिनी सनि ब्रजराज जनी ।
चिकुर चामरा मुदिर सामरा नलिन नयन सुखकरा ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

काम रमनी जँहिनि तहिनीं दसन चमक जनि हीरकनी ।
उकुति वेकती वुझलि जुगुती कामिनि मनवति पती ॥
हरि अभिमानी मनअनुमानी मिलए चललि रसे रासवनी।
विजुरिउजरी रजनि गुजरी दूति दोसरि अगुसरी ॥
'लोचन' वानी सुतनु सयानी कन्त भजलि जलराज गनी ।

॥ अथ पहड़िआ ॥

अत्र तु पर्वतीय वराड़ीयं छन्दः । लक्षणम् ॥

गद्वयान्ता श्चतुर्मात्रा यत्रुव प्रथमार्द्धके ॥
तद्वयान्ता स्तदन्तार्द्धे द्वादश प्रमिताः पुनः ।
मात्रा षोडशकैर्वद्ध रूपदस्य द्वितयम्भवेत् ॥
चतुर्दशमिताभि र्वा मात्राभिः कुत्रचिद्भवेत् ।
त्रयोदशभवेयु र्वा यत्रमात्राः पदार्द्धके ॥
पर्वतीय वराडीयं छन्दस्तत्रतु तां नयेत् ।

॥ उदाहरणम् ॥

ससधर सहस सार वटुराव
तैअओन वदन पटन्तर पाव ।
॥ ध्रुवम् ॥ देखदेख आइ, सरगक सरवस उरवसि जाइ ॥
विविध विलोकन अति अभिराम
मनहुन अवतर नयन उपाम ।
निकनिक मानिक अरुनिम जोति
सहजे धवल देखिअ गजमोंति ॥
आतरगत मजलें अति सेत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऐसन दसन तुलना के देत ।
कांचिकरन्धि रोमावलि भास
उपरँतरल हरावली फास ॥
कर कौशल मनमथ मनलाए
कुचसिरिफल नहि होअए नवाए ।
करिकर उरू उपमा नहि पाव
अपनहि लाजें सङ्कोचि लुकाव ॥
हरिहर प्रनथिए भीषम भान,
प्रभावति पति जगमशायन जान ॥

॥ ममतु ॥

चामर चिकुर वदन सानन्द
सरवमसनि जनि पुनिमक चन्द ॥
चञ्चल विमल विलोचन मीन
अञ्जन परिचिन खञ्जन जीन ।

विधि निधि सांइ
तिला एक मिलि कहि नहि जाइ ॥
दसन दालिम दुति भौंह कमान
कुटिल विलोकन तिषविष वान ॥
नासा दसन वसन बहु मूल
तिल फुल फुलल मधुरि फुल तूल ॥
रुचिर कम्बुगिम मोतिम दाँति
बाहुलता करपल्लव काँति ॥
कुच युग जमज कमल सिरें माल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निखिल रोमावलि समुचित नाल ॥
नाभि मण्डल करिकुम्भ निलम्ब
जङ्घ कदलि भेलि तसु अवलम्ब ।
उरुयुग युगल करभ अनुमान
पदपङ्कज नख केतु समान ।
कुलगुन गौरव विनय विवेक
बुझल विनोदिनि सबै अतिरेक ॥
सरससुमति कवि 'लोचन' भान,
एहन रमनि रुक्मिनि पति जान ॥

अथ देशी । अत्र देशीय वराड़ीयं छन्दः ।

॥ लक्षणम् ॥

मात्राद्वादशकैर्बद्धं यद्ध्रुवप्रथमार्द्धकम् ।
सप्तभिर्दशयुक्ताभि र्मात्राभिस्तु तदन्तिमम् ॥
एतत्तुल्यपदार्द्धं वा कुत्रचिद्यत्र जायते ।
अन्यत्तु पदनिर्म्माण म्पर्वतीय समम्भवेत् ॥
देशीयन्तद्वराडीयं छन्दस्तामलसन्नयेत् ॥

॥ उदाहरणम् ॥

आनन लोनुअ वचने बोलए हँसि ।
अमिअवरिस जनि सरद पुनिमा ससि ॥ ध्रुवम् ॥
अपरुब रूप रमनिआँ, जाइते देखलि गजराज गमनिआँ ।
काजरें रञ्जित धवल नयन वर
भमर मिलल जनि अरुन कमल दल ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आनभेल मोहि माँझ खीनिधनि
कुचसिरिफल भरें भाँगिजाति जनि ॥
कविशेखर भन अपरुबरूप देखि
राए नसरद साह भजलि कमलमुखि ॥

॥ इति विद्यापतेः ॥ ममतु ॥

साँनद वदन विहुसिआ,
मधुवन जाइतें मिललतोर रसिआ।
कोटि मदनरुचि रुचिरकलानिधि,
अतनु सुतनु सनि तोहँहुँ सवहि विधि।
चाँद धवल ऋतुराज रजनिआ,
हरि निधुवन मने चललि सजनिआ।
कुसुमित वन घनसारसमीरन,
विविध विहङ्गनिनादमदनधन ॥
सुनसि न मधुर मधुरमुरलीरव,
सुकृत सफल करसवे समुचित तव ॥
लोचन, भन वुझ सरस विमलमति,
मधुमतिपतिमहिनाथ महीपति ॥
एआमे परगट होत हुए, ताल चलनि में तीनि।
ताते चुकि सुर चलत तव, रागिनि होति विहीनि ॥४॥

॥ अथ माधवी ॥ अत्र माधवीयवराड़ीयं छन्दः ॥ लक्षणम् ॥

त्रयोविंशति मात्राभि र्द्वाविंशतिभिरेववा।
एकविंशतिभिर्वापि किम्वा विंशतिभिर्भवेत् ॥
पदार्द्धमवसानञ्च द्वादशाक्षरके भवेत्।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

त्रयोदशेऽथ दशमे क्वचिद्वैकादशाक्षरे ॥
ध्रुवापेक्षावहिर्भूत मेतत्सन्दृश्यते बहु ।
माधवीय वराड़ीयं छन्दस्तामवसन्नयेत् ॥

॥ उदाहरणम् ॥

ससनपरसें खसु अम्बर रे देखल धनिदेह ।
नवजलधर तर चमकए रे जनि बीजुरि रेह ॥
आज देखलि धनि जाइतें रे मोहि उपजल रङ्ग ।
कनकलता जनि संचर रे महि निरअवलम्ब ॥
ता पुनु अपरुव देखल रे कुचयुग अरविन्द ।
विगसित नहिं किछु कारन रे सोंझा मुखचन्द ॥
'विद्यापति' कवि गाओल रे बूझए रसमन्त ।
देव सिंह नृप नागर रे हाँसिनिदेवि कन्त ॥

॥ इति विद्यापतेः ॥ ॥ ममतु ॥

मलिनवसन विसमादलि रे देखलि धनि खीनि ।
नयन नीरें परिपूरलि रे चितचिन्ता लीनि ॥
पासबैसि कत पूछलि रे सतभाँति बुझाए ।
तैओ रहलि तेहि भाँतिहि रे मरमसि शिरनाए ॥
सुमुखि न सुख न सँभाषन रे मुखनहिं परगास ।
अनुखनें खिखिनि सोहागिनि रे तेजदीघि निसास ॥
कमलवदनि मनिमानिक रे धनि धीरसयानि ।
तोरित गइए परिबोधिए रे हरि ऐसनि जानि ॥
'लोचन' भन मन जानक रे मधुमतिदेवि कन्त ।
बुझ महिनाथ महीपति रे विरहिनिमन तन्त ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सत्वरोऽत्रत्रिसंख्यात स्तालस्तु गुणिनाम्मतः ।
तद्भ्रष्ट सुरता चेत्स्या द्रागिणी खण्डिता भवेत्॥५॥

॥ अथ भठिआली ॥

अत्र तु भठिआलवराड़ीयं छन्दः ॥ लक्षणम् ॥
रगणोऽथ विरामश्च यगणो लादिको गुरुः ॥
नगणौ सगणोलश्च यत्पदार्द्धात्मक ध्रुवे ।
सप्तविंशति मात्राभिः षड्विंशतिभिरेववा ॥
पञ्चविंशतिभिर्वापि पदानां दल निर्म्मितिः ।
दलोपान्ते गुरुर्गाने क्वापि वर्णा गतागतम् ॥
भठिआलवराड़ीयं छन्द स्तामत्र सन्नयेत् ।

॥ उदाहरणम् ॥

नन्दक नन्दन कदवेरि तरुतरें धिरेंधिरें मुरलि वोलाव ।
समय सँकेतनिकेतन वैसल वेरि वेरि वोलि पठाव ।ध्रु०।
सामरी तोरा लागि अनुखने विकल मुरारि ।
जमुनाकतीरँ उपवन उदवेगल फिरिफिरितताहि निहारि ॥
गोरसविकेंनिकें अवइतें जाइतें जनिजनि पुछ वनवारि ।
तोहें मतिमान सुमति मधुसूदन वचन सुनह किछुमोरा ॥
भनइ 'विद्यापति' सुन वरजौवति वन्दह नन्दकिशोरा ।

॥ ममतु ॥

रितुपति रितु रतिपतितहउनमति पुनमति तेजि निजधाम ।
विजुवन घनउपवन निधुवन मनें तोहँ जोह मोहें सवठाम ।ध्रु०
सामरासुवदनि कि तोरि धनि विषम विषाद ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जहिंनिदेखलिहँनि कहहि न पािवत्र के जानजिउति परमाद॥
चन्दनचन्दमन्दमलयानिल मुदिरमयूरनिनाद ।
इसवेसमन सम............ सुतनुकतकतकर अवसाद ॥
अवगुन कओंन ऐहन तसुजसु रस पिअन वचन करिकाँन।
पिअतम तेंहन तोहर सन सेओ कर सहचरि परम निदान॥
अवहु विसरिदोस रोसनिराकरि करिअ सुमुखि समधान।
'लोचन' भन उरवसि मनरञ्जक नृपनरपति रसजान ॥

सत्वरो मध्यमश्चैव तालस्त्रितय संख्यकः ।
महिनाथ महीपालानुजेन तु निरूपितः ॥५॥

षष्ठी तु नेपालवराड़ी अत्रतुनेपालीयवराड़ीय छन्दः ॥ लक्षणम् ॥

यत्रविंशतिमात्राभिद्ध्रुवस्यप्रथमार्द्धकम् ।
पञ्चविंशतिभिस्ताभिस्तदन्तार्द्धमुपान्त्यगम् ॥
सप्तविंशतिभिस्ताभिर्यत्पदार्द्धं समम्भवेत् ।
तन्नेपालवराड़ीयंछन्दस्तामत्रसन्नयेत् ॥

॥ उदाहरणम् ॥

उपमिअ आनन नीरजपङ्कज ससधर दिवस मलीने ।
भौंह अनूपम अधरसोंहाओंन नवपल्लव रुचिजीने॥
सुन पेअसिकी मोर परल गरु.............. . . . . .
वह मलयानिल जारकलेवर नकर मनोरथ वाधे ॥

इत्यादि राज्ञः श्रीनिवास मल्लस्य ॥

॥ इति वराड़ी भेदाः कथिताः ॥ अथ कौशिकः ॥
॥ अत्र तु कौशिकमेव छन्दः ॥ लक्षणम् ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चतुःकलगणानान्तु लयंशिष्ट लिमात्रकम् ।
अवशिष्टद्विमात्रम्वा पदार्द्धं यत्र जायते ।
सकलं यद्ध्रुवापेक्षा बहिर्भूतन्तु दृश्यते ।
कौशिकाख्यन्तु तच्छन्दः कौशिकेनैव गीयते ॥

॥ उदाहरणम् ॥

लतातरुअर मण्डप दीअ, निरमल ससधरभितिधवलीअ
पौंअनाल अपन मलभेल, रात परीहन पल्लवदेल ॥
गावह माइ हे मङ्गल आए, वसन्त विआहवनेपए जाए ।
मधुकर रमनी मङ्गल गाव, दुजवर कोकिल मन्त्रपढ़ाव ॥
करु मकरन्द हथोदक नीर, विधु वरिआती धीर समीर ।
कनएकेआसुति तोरन तूल, लावाविथरलवेलिक फूल ॥
केसुकुसुम करु सिन्दुरदान, जौतुक पाओल मानिनिमाँन ।
केलिकुतूहलनवपँचवान, विद्यापति कवि दिढ़कएभाँन॥
अभिनव नागर वुझ्कएरसवन्त, मतिमहेसरेणुकादेविकन्त।

सत्वरोमध्यमश्चैव तालस्त्रितयसंख्यकः ।
श्रीमान्नरपतिस्तस्य ज्ञातासङ्गीत कोविदः ॥

॥ अथ देशाख रागिणी ॥

अत्रतु जयदेवदेशाख देशदेशाख इति भेदद्वयम् ।

॥ जयदेव देशाखेतु श्री जयदेवः ॥

स्तन विनिहित मणिहार मुदारम्
सामनुते कृशतनुरति भारं ॥ ध्रुवम् ॥
राधिका विरहे तव केशव (इत्यादि सुप्रसिद्धम्) ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देशदेशाखेतु तन्नामकमेवछन्दः ॥ लक्षणम् ॥

चतुर्म्मात्रगणानान्तु कलाहीन श्चतुष्टयम् ।
चतुष्टयङ्कलाशेषन्तद्वाप्रतिपदार्द्धके ॥
सप्तमे सप्तमेवर्णो विरामो विगत भ्रुवम् ॥
देशदेशाख इत्याख्यं छन्दस्तत्रतु नाम्नयेत् ।

॥ उदाहरणम् ॥

मानपरीहर हे करु वचन मोरा
मारमनोभव हे धरु सरन तोरा ।
नकरनकर हे मोहि विमुख आजे
अपुरुवपेमे हे पुनु भेल समाजे ॥
कमलवदनि हे करु आकमदाने
विनञे के नहि हे जग तेजए माने ॥

इति विद्यापतेः ॥ ममतु ॥

नीरज नयनि हे गिरिराज उरोजे ।
तोँहँन करह हे ..... वसरोजे ॥
अमिञे माखलि हे करु मधुरी वानी ।
कीदहुपरलि हे मोहि विनय हानी ॥
हरखि हेरह हे किछु विहासे गरासे ।
करह न कर हे निञमन उदासे ॥
अवुझन वुझहे तोहेँ तेहिनिनही ।
तोहरि सरिसि हे नहिंदेखिअ मही ॥
रोसविसरिएहे निञपाअसुजाने ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अजलि पेअसि हे कवि लोचन भाने ॥
उरवसीअम हे रसरागनिवेसे ।
ईरसविन्दक हे नरपति नरेसे ॥

॥ तालः प्रागिव ॥ देशाख भेदावुक्तौ ॥

॥ अथ हिन्दोलस्यैव रागिणी रामकरी ॥ आकृतिरुक्ताप्राक् ॥
इयन्तु जयदेवी शुद्धा देशी प्रीतिकरी चेति भेद चतुष्टयवती
जयदेव्यां श्री जयदेवः ॥

वदसियदिकिञ्चिदपीत्यादि सुप्रसिद्धम् ॥

॥ अथ शुद्धा अत्रतु शुद्धारामकरीयं छन्दः ॥

॥ लक्षणम् ॥

पञ्चविंशति मात्राभिः षड्विंशतिभिरेववा ।
सप्तविंशतिभिस्ताभि रष्टाविंशतिभिर्भवेत् ॥
यदीयचरणार्द्धन्तच्छुद्धरामकरीयकम् ।
शुद्धरामकरीयेण गायेदेतद्धतध्रुवम् ॥

॥ उदाहरणम् ॥

साजयति सुरसरिदमर दानव नागनरवरदायिनी ॥
कासकुसुममृडालमुकुताधवलधारप्रवाहिनी ॥
तिलतुलित तण्डुल कुसुम चन्दन विबुध पूज्य सुधाविनी ।
सुरनगर वीथी.................ब्रह्महस्त निवासिनी ॥
पुरमथनमस्तककलिनशोभा कृष्ण चरणतरङ्गिनी ।
जगधम्म सरसिज सोम भासा सलिल रासि सोहान्नूनी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जह्नुकन्या भीष्म जननीधरणि मध्य विभूषिनी।
कविराज पूरन मल्ल भाषित पतित पामर पावनी ॥

॥ अथ देशी। अन्तु देशरामकरीयं छन्दः। लक्षणम् ॥

एकविंशतिमात्राभिर्द्वाविंशतिभिरेववा।
त्रयोविंशतिभिः किम्वा चतुर्विंशतिभिर्भवेत् ॥
पञ्चविंशतिभिर्यद्वा मात्राभिर्यत्पदार्द्धकम्।
देशरामकरीयन्तद्ध्रुवन्तेनगीयते ॥

॥ उदाहरणम् ॥

कुसुम वान विलास कानन केस सिन्दुर रेह।
निविल नीरद रुचिर दरसए अरुन जनि निज देह ॥
आज देखु गजराजगति वरजुअति त्रिभुवन सार।
जनि कामदेवक विजयवल्ली विहलि विहिं संसार।
सरदससधर सरिस सुन्दर वदन लोचन लोल।
विमल कञ्चनकमलचढ़ि जनि खेल खञ्जनजोर ॥
अधर नवपल्लव मनोहर दसन दालिम जोति।
जनि निविल विद्रुम दलें सुधारसें सींचि धरु गजमोति
मत्तकोकिल वेनु वीनानाद तिहुअन भास।
जनि मधुर हाक पसाहि आनन करए वचन विकास ॥
अमर भूधरसम पयोधर महघ मोतिमहार।
हेम निर्म्मित शम्भुशेखर गङ्गनिर्मलधार ॥
करभ कोमल कर सुसोभन जङ्घ जुग आरम्भ।
जनि मदन मल्ल वेआम कारने गढल हाटक थम्भ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुकवि एहू कराठहारे गाओल रूप सकल सरूप ।
देवि लखिमा कन्त जानए सिरि सिवए सिंह भूप ॥

॥ अथ प्रीतिकरी । अन्यतु सुप्रियन्नाम छन्दः । लक्षणम् ॥

त्रयोविंशतिभिः किम्वा चतुर्विंशतिभिः पुनः ।
पञ्चविंशतिभिर्वापि षड्विंशतिभिरेव वा ॥
सप्तविंशतिभिर्वापि मात्राभि र्यत्पदार्द्धकम् ।
षट्कल द्वितय र्य्यत्र द्विमात्रं ध्रुवकार्द्धके
ध्रुवेणा ध्रुवकाभ्यास्वा ध्रुवैः किम्वा विभूषितम् ।
सुप्रियन्नामतच्छन्दः प्रीतिकार्य्यान्तु गीयते ॥

॥ उदाहरणम् ॥

स्निग्ध कुञ्चित कोमलङ्कचगराडमरिडत कोमलम् ।
अधरविम्बसमानसुन्दर सरदचन्द्र निभाननम् ॥
जय कम्बुकराठ विशाललोचन सारमुज्वलसौरभम् ।
बाहुवल्लि मृडाल पङ्कज हारशोभित ते शुभम् ॥
शोभय सुन्दरिमम्हृदयं गद्गद हास सुदति निपुणम् ।
उरपीन कठिन विशालकोमल याति युग्म निरन्तरम् ॥
श्रीफलाकमला विचित्र विधातु निर्म्मल कुचवरम् ।
श्यामा सुवेषा त्रिवलि रेखा जघन भार विलम्विते॥
मत्तगजकरजघन युगवर गमन गतिवरटाजिते ।
सुललित मन्द गमन करइ, जनि पतिसङ्ग वरटा भमइ ॥
अतिरूपयौवन प्रथम सम्भव किं बृथा कथया प्रिये ।
तेजह रूप विमोह परिहर शोक चिन्तित चिन्तये ॥
उपयात मदन व्याधि दुस्सह दहए पावक सेवनम् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पवन दिसें दिसें दहए पावक युग्म दारजमम्बरम् ॥
श्यामासवन्दिते अतिसमय गीत सुशोभिते ।
आत्म दान समान सुन्दरि धार वर्षति सिञ्चये ॥
सिञ्चह सुन्दरि ममहृदयम्, अधरसुधामधुपान मियम् ।
चन्द्र कवि जयदेव मुद्रित मानतेज तोहें राधिके ॥
वचन ममधर कृष्ण अनुस: किन्तु कामकला शुभे ।
चन्द्रकलाहे वचन करसी, मानिनि माधव अनुसरसी ॥

॥इति विद्यापति पुत्रवधूवाः॥

सत्वरत्रयएवात्र तालस्तु परिनिष्ठित: ॥
तद्विहीन: सुरश्चेत्स्या द्रागिणी याति हीनताम् ॥

॥ अथ हिन्दोल रागिएयेव ललितो ॥ रूपमुक्तम्प्राक् ॥

॥ अस्यास्तु भेदान्तरं नास्ति ॥ ललित मत्र छन्दः ॥ लक्षणम् ॥

चतुष्कल गणानान्तु सप्तशिष्टत्रिमात्रकम् ॥
शिष्टद्विमात्रमथवाक्वचिच्छेषैक मात्रकम् ॥
यत्पदार्द्धे पदार्द्धात्मा ध्रुवस्त्रिंशद्विमात्रकः ॥
यत्र तल्ललितं छन्दो ललितायान्तु गीयते ॥

॥ उदाहरणम् ॥

सपने देखल हरि गेलिहुँ पुलकें
पुरि जागल कुसुम सरासन हे ।
आरे की सखीपओलह सुतलिजगओलह
सपनहुँ सङ्ग छड़ओलह हे ।
सामरसुन्दर हरि रहलआँचरधरिफोअइतेंकिङ्किणि डोरा हे॥
अओरकहवकत रसउपजल जत केवोलकान्ह गोआरा हे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सखरिशयनसिम हरि गहलिहुँगिम,
मुखें मुखें भमर कमल मिलु हे ॥
पुरलि मनक सिधि आनि देहलिबिहिँ
तोरेंदोसे दैवे अछोरि लेल हे ॥
सत्वर त्रितयस्यैव तालस्य गतिरीदृशी
.... र:शीघ्र म्मोहमातनुतेहृदि ।

॥ अथ दीपकदारा केदारा एतस्या एव केदार इत्यपिनाम ॥

एतस्यास्तु शुद्धकेदार केदाराकेदार विहागरकेदार मलारीकेदार पहडियाकेदार कामोदकेदार केदारमालव इति सप्तभेदाः ॥

॥ तत्रप्रथमम् शुद्धा ॥ लक्षणम् ॥

अष्टाविंशति पर्य्यन्तं पञ्चविंशतितः कलाः ॥
स्युःपदार्द्धं पदार्द्धात्मा सैकःत्रिंशत्कलोध्रुवः ॥
यत्रतच्छुद्धकेदारं छन्दस्साचात्रगीयते ॥

॥ उदाहरणम् ॥

जनिहुतवहँ हरिआनिमेराओल तासमभेल विकार ।
दुअओ नयन तोर विषम मदनसर सालए हृदयहमार ॥
हरिहरि काँलागिसुमुखिविहुँसिहसि हेरलहजीवनपरलसन्देह
पीनपयोधर अपरुवसुन्दर ऊपरँ मोतिमहार ॥
जनिकनकाचल उपर विमलजल दुइ वह सुरसरिधार ।
भनइ विद्यापति सुनुवरनागर सबहुँहोएत परकार ॥
राजा सिव सिंघ गाओलएन लखिमा देवि उदार ।
मध्यमः सत्वरश्चैव तालत्रय उदीरितः ।
एतस्मादपयातस्तु स्वरोऽपस्वर ईरितः ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अथ केदाराकेदारः ॥ लक्षणम् ॥

षट्कलद्विकमुद्धृत्य द्विमात्र य्यत्र जायते ।
पदार्द्धंतत्तु केदाराकेदारन्तत्त गीयते ॥

॥ उदाहरणम् ॥

आंचरे बदन झपावह गोरि,
राज सुनैछि अचाँदक चोरि ।
घरेंघरेंपें हरि गेलछ जोहि,
एषनेदूषनलागततोहि ॥
बाहर सुतह हेरह जनु काहु,
चाँन भरमे मुखगरसत राहु ।
निरभि निहारि फाँस गुन तोलि,
बान्हि हलत तोँहँ खञ्जन बोलि ॥
भनहि विद्यापति होहु निशङ्क,
चाँन्दहुँ काँ किछु लागु कलङ्क ।
तालहोति एहि रागिनी सत्वर मध्यम तीनि ।
जओं चुकिहए तेहिनेकु तव रागिनि होएहए खीनि ॥

अथ विहागराग केदार नामकमेव छन्दः ॥ लक्षणम् ॥

षट्कलानाञ्चतुष्केन यत्पदार्द्धं व्यवस्थितिः ।
उद्धृत्तद्वितिमात्तम्या समुद्धृत्तैक..............॥
चतुष्कल चतुष्केन यद्ध्रुव प्रथमार्द्धकम् ।
सप्तसंख्य चतुर्मात्र गणैरन्त्य ध्रुवार्द्धकम् ॥
तद्विहागर केदारं छन्दस्तत्तु गीयते ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स रागोगीतितः सम्यगिति लोचन भाषितम् ॥

॥ उदाहरणम् ॥

उधसल केसकुसुम छिरिआएल खण्डित दशन अधरे ॥
नयन देखिअजनि अरुन कमलदल मधुलोभैवैसल भमरे ॥
॥ ध्रु० ॥ कलावति कैतव न करह आज ॥
कओन नागर सङ्ग रयनि गमओलह कहमोहि परिहरिलाज ॥
पीनपयोधर नखरेखसुन्दर करें बाँधह कौं गोरि ॥
मेरुशिखरनव उगिगेल ससधर गुपुति न रहलिए चोरि ॥
बेकतेओ चोरि गुपुत कर कतिखन विद्यापतिकविभान ॥
महलमजुगपति चिरंजीवें जीवथु ग्यासदीन सुरतान ।
दोए सत्वर अरु मध्यदोए एआमें चारिए ताल ।
एआतें चूकत सुर जबहिँ तवरागिणि होतिवेहाल ॥

अथ मलारी केदारः । अत्राप्येतन्नामकमेव छन्दः ॥

॥ लक्षणम् ॥

पञ्चविंशतिमारभ्य त्रिंशदन्ताः कलाःकिल ।
यत्पदार्द्धध्रुवाद्यर्धे दशपञ्चात्मिकाःकलाः ॥
तन्मलारीय केदारं छन्दस्तामत्रसन्नयेत् ॥

॥ उदाहरणम् ॥

कीरकुटिलमुख.................................. ।
विरहवेदनेंदह कोककककरुन सह सरूप कहत के आने ।
ध्रु० हरिहरिमोरि उरवासि की भेली ।
जोहइतधावओं कतहुनपावओं मुरछिखसओं कतवेरी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गिरिनरितरुअर कोकिलभमरवर हरि नहाथिहिमधामा ॥
सबकपरओंपैओं सबेभेल निरदए केअओ न कहए तसुनामा।
मधुरमधुरधुनि नेपुररवसुनि भमओंतरङ्गिनि तीरे ॥
मोरें करसेंकलहंसनादभेल नयनविमुञ्चओं नीरे।
हरि·········साखिधरि कविभीषम एहो भाने ॥
प्रभावति देइपति मोरंग महीपति नृपजगनराएन जाने।

सत्वर··।
तालानान्तानवाप्येयं रागिणी चित्तमोदिनी ॥

॥ अथ पहडियाकेदार ॥ एतन्नामकमेवात्रापि छन्दः ॥

लक्षणम्

आद्यर्द्धेपञ्चमेषष्ठे वर्णौतु विरतिः पुनः।
चतुर्थपञ्चमे चैव द्वितायार्द्धेतु तद्भवेत् ॥
दशाष्ट कलिका वद्धा यत्पदार्द्धे व्यवस्थितिः।
पर्वतीयन्तुकेदारन्तदेतत्समुदाहृतम्।

॥ उदाहरणम् ॥

विसरलओरे तैसन सिनेहा पिअमोरे :
की परदेशभए रहल पिआ परवस ॥
अवगएओरेअनुभवविभलकए जानल।
की निरदए पुरुष जाति केर हिरदए ॥
पिअसखिओरे भलिकए विनति वुझाउवि।
की हमओरे जीवलइएपिआमोर जीवओ ॥
गुनमयओरे धीर कुमर सिरि गजसिंह।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

की रसजाने गुनमयकवि गजसिंह भाने ॥

तालत्रितय सम्पन्ना गतिरेषा विराजते ।
राजतेतैर्विनारागः कदापि न महीतले ॥

॥ अथ कामादकेदारः । अत्रापितन्नामकमेव छन्दः ॥

॥ लक्षणम् ॥

आचतुर्दशकात षः दशपर्य्यन्तकाः कलाः ।
नियमेनोज्झितायत्र पदानान्दलयोःसमाः ॥
तन्तु कामोदकेदार माहुः सङ्गीति सत्तमाः ॥

॥ उदाहरणम् ॥

अवला अंशुक बाल भुलेला,
पानिपलव धनि आँतरदेला ।
हठ न करह कान्हु न पुरत कामे,
प्रथमक रभस विचारक ठामे ॥
आवे नवजौवन समय निहारी,
अपनहि वेकत होएत परचारी ।
मदन भँडारक सुरतसयानी,
मोहेर सुनल अछ असमय जानी ॥
मुकुलित लोचन नहिं परगासे,
काँपकलेवर हिरदए तरासे ।
भनइ विद्यापति नव अनुरागी,
सहिअ पराभव पिआहिआ लागी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अथ केदार मालवः ॥ अयमेवात्र छन्दः ॥

॥ लक्षणम् ॥

षड्विंशतिकलाभिर्यत्पदान्तार्द्धे व्यवस्थितिः ।
क्वचिदेककलाहीनाः क्वचित्पूर्णास्तु षड्गताः ॥
षट्कलात्मगणानान्तु चत्वारः प्रथमार्धके ।
केदारमालवः सोऽयं दलोपान्त्य गुरुर्मतः ॥

॥ उदाहरणम् ॥

गौरदेह सुढार सुबदनि स्यामसुन्दर नाह ।
जनिजलद ऊपरँ ललितसञ्चर सरूप ऐसनआह ॥
पीठिपरु घनश्याम वेनी देखि ऐसन भाँन ।
जनिअजरहाट कपाट करँगहि लिखनिलिखु पचबान ॥
सघनसञ्चर खन न थिररह मनिक मेखल राव ।
जनिमदनराए दोहाएदएदए जघन तसु जस गाव ।
रमनि नहिं अवसाद मानए रयनिबरु अवसान ।
ओजे रमनि राधा रसिक यदुपति सिंह भूपति भान ॥

चारि ताल की रागिनी तामे सत्वर दोए ॥
दोएमध्यम तेहिचूकिचल तव राग अपस्वरहोए ॥

केदारः सङ्करोत्पन्नो विहागरमलारयोः ॥
केचिदाहु र्नकेदारः परनामामतस्तु सः ॥

॥ अथ कामोदः ॥ इयमपि दीपक भार्य्या ॥ रूप मुक्तम्प्राक् ॥
इयमपि कामोदमङ्गल देवकामोद इति भेदद्वयवती ॥
कामोदमङ्गले तु तन्नामक मेव छन्दः ॥ लक्षणम् ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्विलिमाला विशेषोऽपि क्वचित्प्रायः पदार्द्धयोः ॥
सप्तविंशति मालाः स्युर्द्धुवार्द्धे द्वितये पुनः ॥
सप्तसप्तैव कलिका तान्तिमोपान्त्य वर्णयोः ॥
गुरुत्वरुप्रायशो यत्र तत्तु कामोद मङ्गलम् ॥

॥ उदाहरणम् ॥

ध्रु० । जयमङ्गला जयमङ्गला, होइ परसनि देवि तोरितबला ॥
मधुकैटभ महिषासुर अतिबल धूम्रलोचन खयकारी ।
शुम्भनिशुम्भ देव कंटकरन खनहिं महाबल देल विदारी ॥
जैसें सुरगन देलह अभयबल सकल असुरगन मारी ।
तैसे आस पुरह जगमाता रिपुगन हलह सँभारी ॥
जे अभिमतकए जे नर चिन्तए से नरसे फल पावे ।
सर्व काज सिधिकरह भवानी कवि चतुरानन गावे ॥
सत्वरत्रितयन्त्वत्र तालानान्तु व्यवस्थितम् ।
तावद्भिः कृतसारथ्यो रागोऽयमनुरञ्जकः ॥

॥ अथ देव कामोदः ॥ अत्राप्येतदेव छन्दः ॥ लक्षणम् ॥

अङ्कोत्तर महादेव नेत्रतश्चरणार्द्धयोः ॥
द्विरङ्कावधि यत्रस्युः कलिका नियमोज्झिताः ।
वृत्तन्तद्देवकामोद नाम तत्रैव गीयते ॥

॥ उदाहरणम् ॥

देखहो गे माइहे जोगि एतए कतए,
फिरए गोरी रँगे जतए ततए ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सिंगी भरि पुरलन्हि मधुरिमिवानी,
भिखिश्रो न लेश्र जोगी माँगइ भवानी ॥
जहाँ जहाँ सखि सँङ्ग गोरि खेलाए,
तहाँ तहाँ नाचए जोगी डामरू बजाए ॥
जोगिश्रा रंगिश्रा नितें नितें श्राव,
परनह कह जोगि गोरि देखाव ॥
भन हरिदास महादेव भेस,
गोरी भाग गङ्गाराम महेश ॥

॥ अथ श्री रागः ॥ अयमुक्तः पूाक् ॥।अत्रापि।राग नामव छन्दः ॥ लक्षणम्

अष्टाविंशति पर्य्यन्तं पञ्चविंशतिनः कलाः ।
पदार्द्धवीतनियमा ध्रुवसाधारणी स्थितिः ॥
पदार्द्धोपान्त्य अन्त्योत्रा वर्णास्तु नियमाद्गुरुः ।
यत्रतद्राग नामैव श्रीरागेरौव गीयते ॥

॥ उदाहरणम् ॥

कुन्दभमरसङ्गम सम्भाषव नञेने जगाश्रोव अनङ्गे ।
आशादय अनुराग बढ़ाश्रोव नङ्गिम अङ्ग विभङ्गे ॥
सुन्दरि हे उपदेश धरिएधरि सुनसुन सुललित वानी ॥
नागरिपन किछु कहवा चाहों कहलहुँ बुझय सयानी ।
कोकिल कूजित कराठ वैसाश्रोव अनुरञ्जव रितुराजे ॥
मधुर हास मुखमराडल मराडव घड़िएक तेजब लाजे ।
कैतव कए कातर नागरसव गाढ़ आलिङ्गन दाने ॥
कोपकैए परवोधल मानव घड़िएक न करव माने ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समय सेव निसह तनु चाँद न हु कुलित लोचन हेरी ॥
नखेहँनि पिआ मनिधाम छडाओव सुरतबढ़ाओव केली।
जूझल मनमथ पुनु जे जुझावए बोलि वचन परचारी ॥
गेल भाव जे पुनु पलटावए सेहे कलावति नारी ॥
रससिंगार सबस करि गाओल बुझए सकल रसमन्ता ।
राजा शिव सिंघ रूपनरायण लखिमादेविक कन्ता ॥

सत्वरो मध्यमश्चैव तालत्रय उदाहृतः ।
रागस्यास्य तुलावद्भिः सम्यग्गानम्प्रजायते ॥

अथ वसन्तः ॥ अत्राप्येतन्नामैव छन्दः ॥

॥लक्षणम् ॥

पञ्चविंशतितो यत्र त्रिंशदन्ताः कलाः किल ।
चरणार्द्धेतु तद्वृत्तं वसन्तस्तत्र गीयते ॥

॥ उदाहरणम् ॥ सु० : पञ्चमः ॥

माघ माँस सिरिपञ्चमि गँजाइलि नवए माँस पञ्चमहरुआइ ।
अतिघन पीड़ा दुखबड़ पाओल वनसपती के वधाइ हे ॥
सुभखनवेरा सुकलपख हे दिनकर उदित समाइ ।
सोलह सँ पुने वत्तिस लखनें जनमलेल रितुराइ हे ॥
नाचए जुवतिगन हरखित जनमल बालमधाइ हे ।
मधुर महा रसमङ्गल गावए माननि मान उड़ाइ हे ॥
वह मलयानिल आंत उचित हे वन घन भउ उजिआरा ।
माधवि फूल भल गजमुकता तुल तें देल वन्दनेवारा ॥
पीअरि पाँडरि महुअरि गावए काहरकार धुथूरा ।
नागेसर कलि संखधूनि पुर तगर ताल समतूला ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मधुलए मधुकरें बालक दए हलु कमल पखुरिआ झुलाइ।
पौँअनाल तोरिकरि सुत बाँधल केसुकइलि बध नाहीं।
नव नव पल्लव सेज ओछाओल सिर दहु कदवेरि माला ॥
वैसलि भमरी हर उदगारए चक्का चन्द निहारा ।
कनए केआसुति पत्र लिखिए हलु रासिनछत्र कए लोला ॥
कोकिल गणित गुणित भल जानए ऋतु वसन्त नाम थोएला।
बाल वसन्त तरुणभए धाओल वेढ़ए सकल संसारा ॥
दखिन पवन घन आँग उगारए कुवलए कुसुम परागे ।
सुललित हार मँजरि घन कज्जल आखितओ अञ्जन लागे ॥
नव वसन्तऋतु अनुसर जौवति विद्यापति कवि गाया ।
राज सिव सिंह रूपनराएन सकलकला मन भाया ॥

जयदेवादि परिगृहीता देशीयाश्च एतद्भेदान्तरिता ।
एवेति न लिख्यन्ते ॥

॥ अथ मालवः ॥

अत्र च विततमालव, देशमालव, श्रीमालव, धनछी मालव, वियोगिमालव, बृहद्वियोगिमालव, पहड़िआ मालव, विजयपुरी मालव, जोगिआ मालव, साङ्गीमालव प्रियतमा मालव, इत्येकादशं भेदाः ।

॥ तत्रादौ विततारव्यः ॥ वितत मेवात्र छन्दः॥ लक्षणम् ॥

आदिभूतन्तृतीयञ्च चरणन्तु चतुष्कलैः ।
चतुर्भिः कलिकाहीनै स्त्रिभिस्तैर्द्धि चतुर्थकम् ॥
ध्रुवात्म चरणावेत द्वैपरीत्येन यद्गतौ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वितताख्यन्तु तद्वृत्तं विततेनैव गीयते ॥

॥ उदाहरणम् ॥

विकट जटाचय किछु न लोक भय हे, उर फनिपति दिगवास ।
ध्रु०॥ कओन पथ भेटताह हे, आगे माइ जाइत उमत हमार ॥
त्रिपुर दहनकरु छारे छालभरु हे, वसहचढ़ल वर वूढ़ ।
तीनिनयन हर एक अनल वर हे, सिर सुरसरि जलधार ॥
भनइ विद्यापति गोरि विकलमति हे, ओहि उमताक उदेस ।

सत्वर त्रितयश्चात्र तालस्य सुदीरितम् ॥

॥ अथ देश मालवः ॥ लक्षणम् ॥

चतुष्कलगणानाञ्च चैकद्वित्रि कलाधिकाः ।
पदार्धेयत्र तद्देशी देशमालवगा भवेत् ॥

॥ उदाहरणम् ॥

कुन्दन कन कन्हाइ, हमहु कसौटी तुल ।
निअहिअ कसल बालँभ, गुनबूझल बहु मूल ॥
ए सखि सुपँहु समागम, सुख कहहि न जाए ।
मनकर मनाओन छाड़िअ, राखिअ हिअ लाए ॥
पुरव गौरि हम पूजलि, पुनें परिनत नेह ।
जीवएककए मानल, कि जओ दुइ देह ॥
लछमिनराएन नृप कह, तोँ गुनमति नारि ।
जासओ नेह वढ़ावह, सेहे देव मुरारि ॥
त्वरितत्रयनालोऽत्र दातव्यो राग पारगैः ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ श्री मालवः। श्री रेवात्र छन्दः ॥ लक्षणम् ॥

चतुर्भिस्समसेवस्या द्यत्पदार्धश्चतुष्कलैः।
गणैः क्वचिन्न्यून कलै स्तच्छ्रीस्तलैव गीयते ॥

॥ उदाहरणम् ॥

यदि तोरा नहिंखन नहिं अवकास,
परकें जतनेंककें देल बिसवास।
बिसवास दएक के सुतह निचीत,
चारिपहर राति भमत सुचीत ॥
करजोरि पैआपरि कहवि विनती,
बिसरि न हलविए पुरुब पिरिती।
प्रथमपहर राति रभसें वहला,
दोसरपहर परिजन निंद गेला ॥
नींद निरुपइतें भेलि अधराति,
तखने उगल चाँदा परम कुजाति।
भनइ विद्यापति तखनुक भाव,
जेहे पुनमत सेहे जन पए पाव ॥
दोए सत्वर अरु मध्य दोए, एआमे चारिए ताल।
एआतें चूकि सुर चलत तव रागिनि होति बेहाल ॥

अथ धनछी मालवः। अत्राप्येतन्नामैव छन्दः ॥ लक्षणम् ॥

पञ्चविंशतितोयलचिंशदन्ताःकलाःकिल।
यत्पदार्धध्रुवाद्यर्द्धे चतुष्कलचतुष्ककम् ॥
धनछी मालवश्चैतद्धनछी मालवन्नयेत्।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ उदाहरणम् ॥

तोँहँहँमँ पेम जतेँदुरेँ उपजल, सुमर विसे परिपाटी ।
आवेपर रमनि रङ्गरस भुलआ हे, कओंनकलाहसेँघाटी ॥
भमर वर मोरे बोले बोलब कन्हाइ ।
विरहतन्त जदिजान मनोभव, कीफल अधिक जनाइ ॥
सुनिअ सुमेरु साधुजन तुलना, सन काँ महिमा घने ।
तन्हिनिअलोभेँ ठाम जदि छाड़व, गरिमा गहवि कओंने ॥
पुरुष हृदय जल दुअओसहजेँ चल, अनुवधेँबाधेँथिराइ ॥
से जदि न थिररह सहसेँधारेँ वह, उचेओनीचपथेजाइ ॥
भनइ जसोधर नर कविशेखर, पुहवी तेसर काँहाँ ।
साह हुसेन भृङ्ग सम नागर, मालति सेनिरू ताँहाँ ॥

सत्वर द्वितयम्मध्य द्वितयन्तावता पुनः ।
चतुष्टयन्तु तालानां जायते राग मध्यगम् ॥

अथ वियोगि मालवः ॥ अत्राप्येतन्नामैव छन्दः ॥ लक्षणम् ॥

षट्कलछन्द मुदवृत्त कलाछन्द विभूषितम् ।
पदाद्यर्द्धतदन्तार्द्धे रसमात्र गणाङ्किकम् ॥
कलासमधिकन्तञ्च तलस्याद्यत कुत्रचित् ।
वियोगि मालवे गेयं छन्दस्तन्नामकम्भवेत् ॥

॥ उदाहरणम् ॥

जतनहुँ जतेओनरे रे निरवह एकान्हुततेओ अँगिरलह ।
दरसन दिन सओंरे रे बोलितह नयन जुडाएत तोंहतह ॥
हमे अवलावलिरे रे दएजिव तरवि दुसहनरि शिवशिव ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

से सवेविसरु आवे रे रे की हेतु मरओमधथहेमकर केतु ॥
कवि कुमुदी कह रे रे थिररह सुपुरुष वचन पसान रेह ।
तालद्वितय मेवात्र सत्वरोमध्यमस्तथा ।

अथ बृहद्वियोगि मालवः ॥ लक्षणम् ॥

अष्टाविंशति पर्य्यन्त स्त्र्यैंत्रविंशतितः कलाः ।
पदार्द्धंतद्बृहत्खेद मालवस्तत्र गीयते ॥

॥ उदाहरणम् ॥

एतदिन हृदय हरष छल आवे सवे दुर गेल रे ।
राँक करत न हेराएल जगतेउ सुन भेल रे ॥
विहि निरदए कोनें दोसें दहुहरलक
कोरमओ मोरिकमलमुखि रे ।
मनकर गरल गरासिअ पाप आतम वध रे ॥
जीवन लाग मरन सन मरन सोहाओन रे ।
गजसिंह कह दुख छाडत सुनह विरहिजन रे ॥
नृपपुरुषोत्तम सहि रह तेहिं दयाजें मिलु रे ।
दोए सत्वर अरुमध्यदोए एआमे चारिए ताल ।

अथ पहडिआ मालवः ॥ छन्दोलक्षणम् ॥

सप्तविंशति पर्य्यन्त न्द्वाविंशति तमात्कलाः ।
यत्पदार्द्धंध्रुवोयत्रकलिकापञ्चकात्मकः ॥
पर्वतीयस्तुविख्यातःसभवेदिह मालवः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ उदाहरणम् ॥

धवल जामिनि धवल हर रे धवल चाँदन चीर ।
निफलजनक विहार भेल रे गिरिसँ विसरुपिअ थीर ॥
ध्रु० । सजनिआ नवकजौवन नवक अनुरेनवकनवअनुराग
सारिखेत समेत हेमत पिआ नहिं मोर अभाग ॥
वारि सँ वरिसए गगन जलरे परसें पँचसर सोस
गरजेंचओ कलिका हिआलिङ्गओपाउसनिअ नहिदोस ॥
धैरजधर धनिकन्त आओत कुमर भीषम भान
ईस विन्दक नरनराएन पति धरमा देइ रमन ॥

सत्वरद्वितयम्मध्य द्वयन्ताल गतिस्त्वियम् ।
तयातु हरते सेयं रागिणी महतास्मनः ॥

अथ विजयपुर मालवः ॥ प छन्दोलक्षणम् ॥

क्वचित्तैर्मालया हीनै र्बहुधा वेदषट्कलैः ।
यदर्द्ध घटनन्तादृक् पदेनोत्थायि सुस्वरम् ॥
चतुर्भिःकलिकाहीनैस्तैःकदाचिच्चतुष्कलैः ।
यदर्द्धघटनन्तादृक् पदेविश्रान्त सुस्वरम् ॥
विजयाख्यपुरी पूर्वं मालवीयमिदम्भवेत् ।
वृत्तन्तन्नामकन्तत्र गीयतेगीति सत्तमैः ॥

॥ उदाहरणम् ॥

कुण्डल तिलकें विराज मुख शोभित सीदुर विन्दु ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हेमलता में समारु विधि कवि रवि तारा इन्दु ।
इन्दु वदनिधनि नयन विशाला॥
कमल कलित जनि मधुकरमाला॥
देखलि कलावति अपुरुब रमनी,
जिनए आइलि सुरपुर गजगमनी ॥
वेनी विमल विराज तसु रस कुसुमाबलिहार ।
स्याम भुअङ्गम देखि कहु किओ काम परहार ॥
करु परहार मदन सर बाला।
कुटिल कटाख बान रुनिआरा ॥
कम्बु कराठ मृणाल भुज बलित पयोधर भार ॥
कनककलस रसें पूरि रहु सञ्चित मदन भराडार ॥
मदन भराडार पयोधर गोरा ।
जनि उलटाओल कनयक चोरा ॥
स्यामा सुलोचनि सुरति रति अपुरुब भूषन भार ॥
विद्यापति कविराज कह सुफलें करथु अभिसार ॥
करु अभिसार मदन सर बाला ।
कुटिल कटाख बान कनिआरा ॥

॥ ताल गतिः पूर्ववत् ॥ अथ जोगिआ मालवः ॥
॥ एतन्नामक मेव छन्दः ॥ लक्षणम् ॥

आचतुर्दशकात्सप्तदशपर्य्यन्तकाः कलाः ।
यत्पदार्द्धे पदार्द्धात्मा ध्रुवोऽपिस्या च्चतुष्कलैः ॥
कलिका द्वितयोपेतै स्त्रिभिरुत्सर्गतः किल ।
जोगिआ मालवः सोऽयं गीतिभिः समुदाहृतः॥

॥ उदाहरणम् ॥

कतन वेदन मोहि देहे मदना,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हरनहि बाला मोंजे जुवति जना ॥
नहि मोहि जटाजूट चिकुरक वेनी,
सिरँ सुरसरि नहिं कुसुमक सेनी ॥
चाँद तिलक मोहि नहि इन्दु छोटा,
ललाट पावक नहि सिन्दुरक फोटा ॥
कण्ठ गरल नहि मृगमद चारु,
फनिपति मोरॉं नहि मुकुताहारु ॥
भनइ विद्यापति सुन देव कामा,
एकदोस अछ ओहि नामक बामा ॥

सत्वर त्रिकतालस्य गतिरत्रव्यवस्थिता ॥

॥ अथ शारङ्गी मालवः ॥ एतन्नामैव छन्दः ॥ लक्षणम् ॥

ऊनविंशतिपर्य्यन्ता श्चतुर्द्दशतमात्कलाः ॥
यत्पदार्द्धे समाख्याताः शारङ्गी मालवस्सतु ॥

॥ उदाहणम् ॥

गमन दिवस सञो तिथि लेखि लेखी,
परतह भीति भरिए गेलि रेखी ॥
सेहे रे मेटिए मेटिञून पुरावे,
वदन सिचए लागि जललए धावे, ॥
काहुकाँ नलिनि काहुकाँ चाँदने,
केओ बोल आएल नन्द नन्दने ॥
मधुकर धुनि सुनि सबे मुँद काने,
करतल ताले कोकिल खेद आने ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कि होइति अगे सखि कमलमुखी,
जतने जिआवह सबहु सखी ॥
अबुझ सखी जन न बुझए आधी,
आन औषध कर आन वेआधी ॥
सितल पओ नारि हृदअ धरु थोइ,
चाँनकिरन केओ करें धरु गोइ ॥

॥ सत्वर द्वितयम्मध्य द्वयन्ताल गतिस्त्वियम् ॥

॥ अथ प्रियतमा मालवः ॥ करुणामालव नामक मत्र छन्दः ॥लक्षणम् ॥

अष्टाविंशति पर्य्यन्तं पञ्चविंशतितः कलाः ॥
यत्पदार्द्धं तु सभवेत् करुणामालवाभिधः ।

॥ उदाहरणम् ॥

युगलशैलसिंम हिमकर देखल एक कमल दुइ जोति रे।
फूलल मधुरिफुलसिन्दुरे लोटाएल पाँतिवैसलि गजमोतिरे
आज देखल जत के पतिआएत अपुरुब विहि निरमान रे।
विपरित कनक कदलि तरें शोभित थलपङ्कज के रूप रे॥
गज सिंह भन एहु पूरब पुनतह औसनि भजए रसमन्त रे।
बुझए सकल रस नृप पुरुषोत्तम असमतिदेइकेरकन्त रे॥

अथासावरी । इयन्तु श्री रागरागिणी ॥ रूपमुक्तस्प्राक् ॥

इयमपि विततासावरी, देशासावरी, सिंघासावरी, जोगिआ-
सावरी, सिन्धुलासावरी, भोगिन्यसावरी, सम्भोगासावरी,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दण्डकासावरी, सरसासावरी, द्राविणयसावरी, अभि-
रामासावरी, मनोहरासावरी, तत्र वितता यथा ॥

वृत्तन्तन्नाम क्रमेव ॥ लक्षणम् ॥

पदाद्यर्द्धस्मवेद्यत्र चतुष्कल गणैस्त्रिभिः ।
तदन्तार्द्धञ्च यत्रस्या चतुर्भिश्च चतुष्कलैः ॥
कदाचित्कलिकाहानि रर्द्धयोर्गणनिर्म्मितौ ।
विततासावरीयन्तद्वृत्तन्तन्नामकस्मभवेत् ॥

॥ उदाहरणम् ॥

कामिनि करए सनाने, हेरितहिँ हृदए हन पँचवाने ।
चिकुर गरए जलधारा, मुखससि तरेँजनिरोअएअधारा ॥
तितल वसनतनु लागू, मुनिहुँकमानस मनमथ जागू ।
कुचयुग चारु चकेवा, निअ कुलमिलतआनि कोनेदेवा ॥
तेंसङ्काञे भुजपासे, बान्धिधरिअ उड़िजाएत अकाशे ।

॥ इति विद्यापतेः ॥ अथ देशी ॥ प०छन्दो लक्षणम् ॥

चतुर्विंशतिपर्यन्त मेकविंशतितः कलाः ।
पदार्द्धे यत्र सादेशासावरीतद्गता भवेत् ॥
त्वरितः प्रथमोऽन्यश्च मध्यमस्ताल जालकः ।
जायते द्विविधस्तेन रागिणी तु व्यवस्थिता ॥

॥ उदाहरणम् ॥

माँसे पखें उगए कलानिधि लैए सकल निअसाज ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तुअमुख समनहि देखिअ तें खिनमनें गुनिलाज ॥
कहदहुँ कओन पुरुषधनि जाहि कर रह अनुराग ।
केअछ एहि महितल जे अंरजल एहेंन भाग ॥
सामर चामर निन्दए कोमल केसकलाप ।
भोंहमनोहर कि कहव कामें तेजल सरचाप ॥
पवन चलित नवपल्लव कुच कोरक तरें काप ।
धके धाओल नहिं पाओल आशालुबुधल लोभ॥
ओहनि रमनि नृपसिंह कह हरिहि निकटपए सोभ।

॥ तालः पूर्ववत् ॥ अथ सिंघली ॥ पच्छन्दो लक्षणम् ॥

एकविंशति मारभ्यषड्विशति कलावधि ।
पदार्द्ध कलिका सिंघासावरी तद्गताभवेत् ॥

॥ उदाहरणम् ॥

सबहुँ सखि परबोधि कामिनि आनि देलि पिअपास ।
जनिबाँधि व्याधाओ विपिन सओ मृग तेजए तीखनिसास ॥
वैसलि शयन समीप सुवदनि जतने समुहि न होए ।
भेल मानस बुलए दहोदिश देल मनमथ फोए ॥
सकल गात दुकूल दृढ़अति कतहु नहि अवकाश ।
पानि परसें परान परिहर पुरति कीरति आस ॥
निबिल निबँध कठिन कञ्चुक अधरें अधिक निरोध ।
कठिन काम कठोर कामिनि मान नहि परबोध ॥
करव की परकार आबे हमे किछुन परअवधारि ।
कोपें कौसलें करए चाहिअ हठहि हल हिअहारि ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दिवस चारि गमाए माधव करति रति समधान ।
बड़हि काँ बड होए धैरज सिंह भूपति भान ॥

॥ तालः पूर्वतुल्यः ॥ अथ जोगिया आसावरी ॥
॥ एछन्दो लक्षणम् ॥

सप्तविंशतिपर्य्यन्तं त्रयोविंशतितः कलाः ।
यत्पदार्द्धे ध्रुवाद्यर्द्धे दशसंख्य कलान्विताः ॥
आदित्य संख्यका यत्र ध्रुवान्तार्द्धे कलाः किल ।
जोगिआसावरी न्तान्तु जोगिआ सावरीन्नयेत् ॥

॥ उदाहरणम् ॥

कालि कहल पिआ़े साँझहि रे जाएब मोञेमारुअ देश ।
मोञे अभागलि नहिं जानल रे सँगहि जैतहु सेह देश ॥
हृदयबड़ दारुन रे पिआबिनु विहरि न जाए ।
एकहि सयन सखि सूतल रे अछल बाँलभ निसि मोर ।
न जानल कतिखन तेजि गेल रे बिछुरल चकेवा जोर ॥
सूनसेज हिअसालए रे पिआञे बिनु मरव मोञे आजि ।
विनति करओं सहिलोलिनि रे मोहि देहे अगिहर साजि ॥
विद्यापति कवि गाओल रे आए मिलत पिअ तोर ।
लखिमा देइ वरनागर रे राए सिव सिंहे नहिं भोर ॥

मध्यम त्रिकतालेन गतिरेषा विराजते ॥ ॥

॥ अथ सिन्धुलासोवरी ॥ प छन्दो लक्षणम् ॥

पञ्चविंशतिमारभ्य त्रिंशदन्ताः कलाः किल ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यत्पदार्द्धंध्रुवाद्यर्द्धं मात्रा पञ्चदशान्विता ॥
अन्तार्द्धंध्रुवकेयत्र पदार्द्धान्नरवस्थितिः ।
सिन्धुलासावरी सा तु सिन्धुलासावरी मता ॥

॥ उदाहरणम् ॥

आजपुनिमाँतिथि जानि मोञेअैलिहुँ उचिततोहर अभिसार
देहजोति ससि किरन समाइति केविभिनावए पार ॥
ध्रु० ॥ सुन्दरि अपनहुँ हृदय विचार ॥
तोहें जनु तिमिर हीतकए मानह आनन तोर तिमिरारि ।
सहज विरोध दूरें परिहरवनि चल उठि जतए मुरारि ॥
दूतीवचन हीतकए मानल चालक भेल पचवान ।
हरि अभिसार चललि वर कामिनि विद्यापतिकविभान ॥

दोए सत्वर अरु मध्य दोए चारि ताल एहि भाँति ।
गाएक गान मे होत हए एञातेंउदीपित काँति ॥

॥ अथ भोगिन्यसावरी ॥ पच्छन्दोलक्षणम् ॥

चतुष्कल चतुष्कान्ता रुद्रसंख्य कलादिकाः ।
कलाअनियतायत्र पदार्द्धं सातु भोगिनी ॥

॥ उदाहरणम् ॥

कनकलता अरविन्दा मदनाँ माँजरि उगिगेल चन्दा ।
केओ बोल भमय भमरा, केओ बोल नहिं नहिं चलय चकोर।
केओ बोल सैबालैं बेढ़ला, केओ बोल नहिं नहिं मेघ मिलला

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संशए परु जनमही, बोल तोर मुख सम नहीं ।
कवि रतनाञी भानें, सङ्क कलङ्क दुअओ असमाने ॥
मिलु रति मदन समाजा, देवल देवि लखनचन्द राजा ।

लघु मध्यम तिनि ताल एहि, रागिनि देत गुनीस ॥
तातें वञ्चित होत हए, गोरि सहित जगदीश ।

॥ अथ सम्भोगिनी ॥ एतच्छन्दो लक्षणम् ॥

चतुष्कल चतुष्केन प्रायस्समदलद्वयम् ।
कुत्रचित्कलया क्वापि कलाभ्यामूनतुर्य्यकैः ॥
चतुष्कल गणैर्न्नेद्ध दलयुग्मम्भवेत्पदम् ।
सम्भोगासावरी सातु सम्भोगासावरी गता ॥

॥ उदाहरणम् ॥

तनु सुकुमार पयोधर गोरा, कनकलता जनि सिरिफलजोरा
देखलि कमलमुखि बरनि न जाइ, मन मोर हरलक मदनजगाइ
भौंहाँ धनुष धएल तसु आगू, तीषकटाख मदन शर लागू ।
सवतरु सुनिअ ऐसन वेबहारा, मारिअ नागर उबर गमारा॥
कंस नराधन कौतुक गावै, पुनफले पुनमत गुनमति पावै ।

मध्यम तीनञे ताल एहि, रागिनि होत प्रगास ॥
तातें चूकत सुर तबहिं, गुनी होत उपहास ।

॥ अथ दण्डकासावरी ॥ एतच्छन्दो लक्षणम् ॥

पञ्चाशदूनपञ्चाशदथवा यत्पदार्द्धयोः ।
कलाः, सासावरीनान्तु दण्डकासावरीन्नयेत् ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ उदाहरणम् ॥

जय जय देवि दुर्गे दनुज दारिनि भक्त जन सन्ताप
हारिनि प्रबलदनु मुराडालि मालिनि चराडदारिनि हे ॥
मत्तमहिषासुर गरासिनि शंखचक्रकृपाण पासिनि
चकित बृन्दारक विलासिनि समर हासिनि हे ॥
श्री त्रिविक्रम नृपति नागर ममलकीर्त्ति कदम्ब-
सागर महित कैरव वन विभाकरमिति समाचर हे ।
रचित गंगाधर सुगीते धरणिपालक रक्षिणीते
सकल सुरनर सिद्धि ललिते वेद चरिते हे ॥

सत्वरद्वय एवात्र तालस्तु गुणिसम्मतः ।
तद्विहीनः स्वरश्चेत्स्यात्तदापस्वरता भवेत् ॥

॥ अथ सरसासावरी ॥ एतद्वृत्त लक्षणम् ॥

चतुष्कल चतुष्कान्तं सैकतत्रितयावधि ।
पदार्द्ध कलिका यत्र सरसासावरी तु सा ॥

चल चल सुन्दरि शुभकर आज,
ततमत करइतें नहिं होए काज ।
गुरुजन परिजन डरकर दूर,
बिनु साहसें सिधि आसन पूर ।
बिनु जपलेंसिधिकेअओनहिं पाव,
बिनु गेलेघर निधि नहिं आब ।
ओपरबल्लभ तोहेंपरनारि,
हमपए मध्यँ दुहूदिस गारि ।
तोहँ हुन्हि दरसनई हमलाग,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ततकए देखिअ जेहन तुअभाग ।
भनइविद्यापति सुनवरनारि,
जेजगिरिअताँ न गुनिअ गारि॥

सत्वरश्छितयम्मध्य ध्रुवन्ताल चतुष्टयम् ॥
एतद्राग गतम्भाति गुणिभिः प्रकटी कृतम् ॥

॥ अथ द्राविणी ॥ ए वृत्त लक्षणम् ॥

आचतुर्द्दशकात्सप्त दश पर्य्यन्तकाः कलाः ।
यत्पदार्द्धं समाख्याता सावरी द्राविणी तु सा ॥

॥ उदाहरणम् ॥

जौबनरूप अछलदिन चारि,
से देखि आदर कएल मुरारि ।
अवभेल झाल कुसुमसबे छूछ,
बारि बिहुन सर केओनहिपूछ ।
हमरि ओ बिनति कहब सखि रोए,
सुपरुष बचन अफल नहि होए ॥
जाबे रहए धन अपना हाथ,
तावे से आदर कर संग साथ ॥
धनिकक आदर सबतहु होए,
निरधन बापुर पुछ नहि कोए ॥
भनइ विद्यापति राखब सील,
जओ जग जिविअ नवो निधि मील ॥

मध्यम त्रिकमादाय तालानाङ्गतिरत्रतु ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अथाभिरामासावरी ॥ छन्दो लक्षणमस्याः ॥

चतुष्कलगणाद्वन्द मेकद्विति कलाधिकम् ।
यत्पदार्द्धेऽभिरामासा सावरी द्विकल ध्रुवा ॥

॥ उदाहरणम् ॥

वारि वएस तेजि गेह, पिआमन ओहे सँदेह ॥ ध्रु० ॥
ओरे तन्हिमन अछ ओहे भाँन, एतए समए भेल आन ॥
तोरित पठाओव सँदेस, आबे नहि उचित विदेस।
जौवन रूप सिनेह, सेहे सुमरि खिन देह ।
प्रीतिनाथ नृप भान, अचिरे होएत समधान ॥

सत्वर द्वितयेनैव तालस्य गतिरत्र च ॥

॥ अथ मनोहरा ॥ एतच्छन्दो लक्षणम् ॥

अष्टाविंशति पर्य्यन्तं चतुर्विंशतितः कलाः ।
यत्पदार्द्धे ध्रुवा सातु समाख्याता मनोहरा ॥

॥ उदाहणम् ॥

\+ ^ + × + × + × × × + × × × × +

अथ मलारी ॥ इयन्तु मलारभार्य्या ॥ रूपमुक्तम्प्राक् ॥
अस्यास्तु शुद्धा पहडिआ इति भेदद्वयम् । तत्रशुद्धा ॥

॥ एतच्छन्दो लक्षणम् ॥

चतुष्कल चतुष्कान्तं यत्रतत्रितयावधि ।
कलाः पददलद्वन्दे सातुशुद्ध मलारिका ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ उदाहरणम् ॥

रोपलह पहुलहु लतिकाआनि,
परतह जतने पटवितह पानि ।
तैं अरथित उपचित भेलि से,
तोहें विसरलि भल बोलत के ॥
माधव बुझल तोहर अनुरोध,
हेरितहु कएलह नयन निरोध ।
एकहु भवन वसि दरसन बाध,
किछु न बुझिअ पहु की अपराध ॥
सुपरुष बचन सबहु बिधि फूर,
अमरखें विमरख न करिअ दूर ।
भनइ विद्यापति एहु रस जान,
राए सिव सिंह लखिमा देइ रमन ॥

सत्वर द्वितयम्मध्य द्वयन्ताल चतुष्टयम् ॥
चतुष्टयेनतेनेयं रागिणी रसभाग्भवेत् ॥

अथ पहडिआ मलारा ॥ एतच्छन्दोलक्षणम् ॥

अष्टाविंशतिपर्य्यन्त श्चतुर्विंशतितःकलाः ।
यत्रताद्दक् पदम्प्राप्य पदन्तु प्राप्यते पुनः ॥
यत्रसैकचतुर्म्मात्रा त्रिगणार्द्ध द्वयान्वितम् ।
त्रिकलात्म ध्रुवोपेत मेवस्या दुत्तरोत्तरम् ॥
पर्वतीय मलारीति गीयते गीतिसत्तमैः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ उदाहरणम् ॥

अनवरत दादुर सोरघन भुवितलित दयदिगँ सोहइ ।
जलद्जालहिं गगन मरिडत मोर धुनि सुनि मोहइ ॥
नीप चम्पक केतकी मधु पीबि मधुकर मातही ।
अषाढ निजघर सुमरि-सुमरि सुपथिक चौदिग धावहीं ॥
आरे निजघर सुमरि पथिक धाव, कतहुनबालभ मोर आव
इत्यादि ।

तालः पूर्वतुल्यः ॥ अथ भूपाली ॥ छन्दोलक्षणम् ॥

सरसासावरी तुल्य पदार्द्धघटनान्विता ।
मिथिलाभूमि भूपाली गीयते गीतिसत्तमैः ॥

॥ उदाहरणम् ॥

चल चल सुन्दरि शुभकर आज,
ततमत करइते नहिं होअ काज । इत्यादि ॥

ताल चललि दुइताललए एआमे परगट होति ॥

॥ अथ गुर्जरी ॥ आकृतिरुक्ताप्राक् ॥

॥ अत्रतुवितत वृत्तादाहत्तुदारणीये जयदेवः ॥

मामियं चलिता विलोक्य वृतं वधू निचयेन ।
सापराध तया मयापिन वारितातिं भयेन ॥
हरि हरि हता दरतया गता सा कुपितेव ।

[इत्यादि सुप्रसिद्धम्]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इति श्री लोचन शर्म्म विरचितायां रागतरङ्गिण्यां मिथिला-
गत्यनुरुद्ध षट्त्रिंशदन्तर्गत राग विवरणन्नाम तृतीयस्तरङ्गः ॥

॥ अथ सङ्कीर्णरागः ॥ तत्र प्रथमं मिथिला मात्रसु पूसिद्धा ॥

॥ तेच ॥

विभासी चाहिरानिश्च गोपीवल्लभ एवच ।
शारङ्गीचापि कोडारो धनछी गौड़ मालवौ ॥
राजविजय नाटौ च नवैते तीर भुक्तिजाः ।

॥ तत्र पूथमाविभासो ॥ अतः परमपि लक्षणम्पूर्ववदेव ॥

॥ एतच्छन्दो लक्षणञ्च ॥

सप्तविंशति पर्य्यन्तमेकविशतितः कलाः ॥
पदार्द्धे बहुधावर्णालघवस्त्वरितस्वरैः ॥
गानोत्थानन्ततस्समाप्तिर्विलम्बिततरैः स्वरैः ॥
यत्र सातु विभासीस्यात्कलिका पञ्चक धुवा ॥

॥ उदाहरणम् ॥

कुसुम रस अतिमुदित मधुकर कोकिल पञ्चम गाव ।
ऋतु वसन्त दिगन्त बालभ माँनस दहोदिश धाव ॥
ध्रु० ॥ सजनिआ तेजल तेलतमोल तापन सपननिसिसुखरङ्ग
हेमन्त विरह अनन्त पाविअ सुमरिसुमरिपिआसङ्ग ॥
मोर दादुर सोर अहोनिसि वरिस वुँद सदन्द ।
विषम वारिस विना रघुवर विरहिनि जीवन अन्त ॥
सुमुखि धैरजें सकलसिधि मिल सुनह कन्त सुवानि ॥
शिशिर शुभदिन राम रघुवर आओव तुअगुन जानि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ विद्यापतेः ॥ ममतु ॥

जलदजाल कराल वारिस दिवस उपगत भेल ।
बधिकबालभु अवधि विसरल अजहु मिलि नहि गेल ॥
ध्रु० ॥ सजनिआ तिमिरतति विकरार जामिनि
निअर कामिनि कन्त ।
नाह निरदए विसरि वैसल मोहि भेल जीवन अन्त ॥
मधुर दूरमयूरकूजित समद दादुर नाद ।
समनसन घन दहन वरिसए कुलिस सरिविसमाद ॥
नीरनिधिसुत सुमुखि थिरकर न कर मानस खीन ।
अचिरें चिर परवास परिहरि हरि वहुराओव दीन ॥
सुमति लोचन भन सुधीजन विषम विरह कलेश ।
जानकी जनि भूमिभूषन बूझ महिनाथ नरेश ॥

सत्वरद्विनयम्मध्य द्वयन्ताल चतुष्टयम् ॥

अहिरानी ॥ पद्छन्दोलक्षनम् ॥

षड्विंशति समारभ्य यत्रोनत्रिंशदन्तिकाः ।
पदार्द्धे कलिकाः किञ्च ध्रुवाद्यर्द्धे त्रयोदश ॥
सातु भीमपलासीस्यादहिरानिरिति श्रुता ।

॥ उदाहरणम् ॥

सुरत समापि सुतल वरनागर पानि पयोधर आपी ।
कनकसम्भु जनि पूजि पुजारें धएल सरोरुहें झापी ॥
सखि हे मालति केलि विलासे ।
मालति रमिअतिताजिअगोरलि पुनुरतिरङ्गक आसे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वदन मेराए धएल न्हि मुखमराडलँ कमलेंमिललजनिचन्दा
भमर चकोर दुअओ अलमाएल पीबिअमिअ मकरन्दा
भनइ अमिअ कर सुनु मधुरापति राधाचरित अपारे ॥
राजा सिव सिंह रूपनराएन लखिमा देइ कराठहारे ।

सत्वरछितयश्मध्य छ्यन्तालस्यजायते ॥
यदि चास्य तदासोऽयं रागस्सम्यक्प्रजायते ॥
कलिका षोड़शोपेत्त ध्रुवकाद्यर्द्धभूषिता ॥
पूर्वतुल्य पदासापि रम्याभीमपलासिका ॥

॥ उदाहरणम् ॥

सुरुज सिन्दुर बिन्दु चान्दनेलिहए इन्दुतिथि कहिगेलि तिलके।
विपरित अभिसार वरिसअमिअधार अङ्कुश कए लतिके।
हेमाधव भेटलिपसाहनि वेरी।
आदर करलक पुछि.................... न मेरी ॥
केतकि दललए चम्पक फुलदय कवरी फोएलक आनी।
मृगमद कुंकुमें अगरुचिनलओलक समएनिवेद सयाँनी ॥
भनइ विद्यापति सुनु वरजौवति कुहुनीकटपरमाने।
राजा शिव सिंह रूपनराएन लखिमा देविरमने ।

चतुष्कल त्रिकोपेत ध्रुवकाद्यर्द्ध भूषिता ॥
पूर्वतुल्यपदा मात्र धन्या भीमपलासिका ॥

॥ उदाहरणम् ॥

नवजौवन अभिरामा ।
जेतदेखल तत कहि न पारिआ छाओ अनुपम एक वामा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हरिनइन्दु अरविन्दकरिनि हिमपिक बुझल अनुमानी।
नयन वरन परिमलछवि तनुरुचि अओ अति सुललितवानी
कुचयुग उपर चिकुरफुजिपसरल ता अरुझाएल हारा।
जनि सुमेरु ऊपरमिलि ऊगल चाँन्द विहुनि सबेतारा।
भनइविद्यापति सुनुवरजौवति आननपावए कोइ।
कंसदलन नाराएन सुन्दर तासुर मनिपएहोइ, ॥

सत्वरलिकमादाय गतिन्तालस्य चाल तु।
अष्टविंशति पर्य्यन्तं पञ्चविंशतिलः कलाः॥
यत्पदार्द्धं ध्रुवाद्यर्द्धं चोनविंशति संख्यकाः।
सापि भीमपलास्येव वितता गीति सम्मता॥

॥ उदाहरणम् ॥

उपरे पयोधर नखरेख सुन्दर मृगमद पङ्के लेपला॥
जनि सुमेरु ससिखराड उदित भेल जलधरजालेंझाँपला
अभिरानि हे कपट करह काँ लागी।
कोन पुरुष गुने लुवुध तोहरमन रयनिगमओलह जागी॥
कारनेंकओने अधर भेल धूसर पुनु कोनें आरत देला।
दूधकपरसें पवार धवल भेल अरुन मजिठ भएगेला॥
नविपनारि गजें गंजि नडाउलि परसलि सूर किरने।
ऐसन देखिय कपट करह जनु बेकतनुकाओव कओने॥
दसअवधान भन पुरुवपेम गुनि प्रथम समागम भेला।
आलमसाह प्रभुभाविनि भजिरहु कमलिनिभमरभुलला

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अथ गोपीवल्लभः ॥ एतच्छन्दोलक्षणम् ॥

पञ्चविंशति पर्य्यन्त मेकविंशतितः कलाः।
पदार्द्धंयदभ्रुवान्तार्द्धं दशपञ्चात्मिकाः कलाः॥
बहुधात्वभ्रुवोयस्तु गीतिभिर्गीयते सदा॥
मिथिलादेश विख्यातो गोपिकावल्लभस्स तु।

॥ उदाहरणम् ॥

गमनेगमाउलि गरिमा अगमने जिवन सन्देह।
दिनें दिनें तनु अवसन भेल हिम कमलिनि सम नेह॥
अवहुन सुमरह मधुरिपु कि करति सुन्दरि नाम।
मोहि विसरलह कहिंनि रहु ठाम॥
एकदिसकान्ह अओकाँदिसँ सुवितत वंश विशाला।
दुइ पथ चढ़लि नितम्बिनि संसञे पडु कुल बाला॥
पाँच वान अतिआतएधैरजें कर पगु थीरे।
आँचर मुँहदए काँदए झाँषए नयन वह नीरे॥

॥ इति विद्यापतेः। परञ्च॥

नयन निमेष जनि देखइतें चौजुग भौ मोहि भान।
पतिसङ्गेरतिरङ्गे गुनितहु कलप अलप परिमान॥
हरि हरि साप आरसमय असमय परिहरि गेल।
ताओं हिञ। कओंन पराभव जओदुइ आधन भेल।
नाह निकारन कि कहव दारुन पिक रव सूनी।
कोनेपरिजीवन राखव कत झाँषव सिरधूनी।
गरल मृणालवलय वस मलयज हंम न सोहाव।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दिवस दासें हिमधामाँ महिमा बिसरि सँतान ।
रसमय कवि जयकृष्णान भन धैरज धर वरनारि ।
अचिरहिं मिलत मधूर पति गुनगौरव अवधारि ॥

अत यद्यप्येनद्वृत्तघटित लक्षणां करुणामालवेऽति व्याप्तमतिव्याप्तश्च तल्लक्षणमेनस्मिन्निति । नथाप्युभय भेदयोरुभयत्र घटकत्वान्नातिव्याप्तिः । किञ्चितयोः स्वर वैल क्षण्यस्यापि प्रकटत्वात्तदेव लक्षणमिति नातिव्याप्ते शङ्कापीतिमन्तव्यम् । अनयैव दिशान्यत्राप्येतद्दूषणान्निर-सनीयमितिदिक् ॥

॥ अथसारंगी ॥

भठिआल रागसंकीर्णा ललिता यदि जायते ।
शारङ्गीति समाख्यात स्तदारागो भवेदिह ॥
अस्यास्तु शुद्धादेशी, अभिरामा, शोभना, अनूपा ।
इति चत्वारो भेदाः ॥
तत्र शुद्धा शारङ्गीयथा-)एतस्याश्छन्दोलक्षणम् ।
मप्तचत्वारिंशदादि सैकपञ्चाशदन्तिकाः ।
यत्पदार्द्धकलाः सातु शारंगी शुद्ध संज्ञका ॥

॥ उदाहरणम् ॥

कमल आनन गण्ड मण्डल चन्द दिनकर स्रवन कुण्डल
हृदय शोभिततारगन जटहार विमलवरे ।
दहिन वाम पहन्ति करकसि चक्क फनि तिस्सूल कुलसि
चम्म धनुष परेत सारथि महिष चिकुर वरे ।
चण्डमधुकैटभ विनासिनि मुण्ड महिषासुर गरासिनि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धूम्रलोचन खण्डि रन भर मण्डि मुण्ड वरा ।
विकट कट्ट कट दसन भीषन रक्तबीज भयङ्करीरन
निभरि खप्पर सघट घट घट रुधिर पान करा ॥
परम तहुपर जोगजोगिनि सकल रस सम्भोगभोगिनि
चण्डि पद राजीव केसर प्रणवि विनय भनम् ।
लखनचन्द नरेन्द्रके असि देह भगवति अभयवर
हसि सकल बैरि दलम् ॥

एहि चलन दुइ तोरित अरु, थोर सत्वर एक ।
तिनुहुँ तालतें होत हए, पुनिराग अम्मृत सेक ॥

॥ अथ देशी ॥ एतच्छन्दा लक्षणम् ॥

अष्टाविंशति पर्य्यन्त मेकविंशतितः कलाः ।
यत्पदार्द्धं तथैवादि पदार्द्धार्द्धात्मको ध्रुवः ॥
यत्तचादित्य संख्यात कलिकः किल जायते ।
देशपूर्वान्तुतामाहुः सारङ्गी गीति सत्तमाः ॥

॥ उदाहरणम् ॥

विदिता देवी विदिता हो अविरल केस सोहन्ती ।
एकाएक सहस को धारिनि जनि रंगा पुर नटी ॥
कज्जलरूपतुअकाली कहिअ उज्जलरुप तुअवानी ।
रविमण्डल परचण्डा कहिअए गङ्गाकहिएपानी ॥
ब्रह्माघर ब्रह्मानी कहिए हरघर कहिअए गोरी ।
नारायन घर कमला कहिए केजान उत्पति तोरी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विद्यापति कविवरें एहो गाओल जाचक जनकेगती।
हाँसिनि देइपति गरूड नरायण देवसिंह नरपती॥

सत्वर मध्यम चारि एहि, रागिनि ताल निवेक।

॥ अथाभिरामा० ॥ वृत्त लक्षणमस्याः ॥

चतुष्कल चतुष्कन्तु सैकमारभ्य यद्गताः।
कलिकाः सचतुर्मात्र षट्कल स्तृतयावधि॥
तादृशार्द्ध पदोपेता विरामचरणातु या।
अभिरामान्तु तामाहुः शार्ङ्गीङ्गीति सत्तमाः॥

॥ उदाहरणम् ॥

नमित अलकैं वेढ़ला मुख कमल सोभे
राहुक वाहु परसला शशिमण्डल लोभे॥
मदन सरें मुरुछली चिर चेतन बाला,
देखलि से धनि हे वासि मालति माला॥
कलसकुच लोटाइली घन सामरि वेनी,
कनय पवय सूतली जनि कारि नागिनी॥
भने विद्यापति भाविनी थिर थाकन मने,
राजाहुँ सिवसिंह रूपनराएन लखिमादेइरमने॥

॥ अथ शोभना ॥

कलाभिः कलिकाभ्यास्वा यत्राधिकगण द्विकात्।
षट्कलात्पदमर्द्धस्या दुत्सर्गात्सातु शोभना॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ उदाहरणम् ॥

पुरन्द्र पुरादित अभिमत पुरू, दारिद दुःख दूरें परिहरू ।
तोहरा चरन सरन जे आव, धनवितपूत परम पद पाव ॥

[इत्यादि]

॥ अथानूपा ॥ वृत्तमस्यास्त लक्षणम् ॥

आदावर्द्धद्वयोपेतम्पदमस्मात्त्रिभिद्दलः ।
ततोऽप्येवं क्रमेणैव बहुधा पद निर्मितिः ॥
त्रयोदश कलान्ताः स्युर्यत्राङ्कावधयः कलाः ।
नियमे नोज्झिता ह्रस्व पदार्द्धेतु व्यवस्थिताः ॥
षट्कलाभ्यां सैकताभ्यामथवा सकलान्त म् ।
अनूपा मिति तामाहुः शारङ्गीङ्गोति सत्तमाः ॥

॥ उदाहरणम् ॥

तोरएमोज गेलिहुँ फूल मोनी मानिके तूल ॥
साजनि साजी अछोरसि मोरि,
गरुवि गरुवि आरतितोरि ॥
डिठि देखइतें दिवस चोरि,
एतकन्हाइ परधन लोभ ।
जेनहिलुवुधसेहे परसोभ,
निकुञ्जकेरसमाज इथिं नहोमुखलाज ॥
ढ़ाँकिवोवेन अपजस रासि,
सेकरे कान्हु जेन लजासि ।
जखने नागर नगर जासि ।
पीनपयोधर भार मदन राए भण्डार ॥
रतने जडिलोता हरिमाथ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मलिन होए तन देहे हाथ ॥
वड़ से कठिन हमर नाथ ।
कविभन कराठहार, रस एनए के पार ॥
सिरि शिव सिंह जानए तन्त ।
रतन सन लखिमा कन्त ॥
सव कलारसँ जे गुन मन्त ।

॥ सारङ्गी भेदाः कथिताः ॥

॥एतस्यातु पाश्चात्य सूही समाख्यात रागमिलनेन सूहओ इत्यपिनाम ॥
॥ अतः परमेतद्भेदाउच्यन्ते । तत्रसूहवः ॥ एतच्छन्दो लक्षणम् ॥

सप्तविंशति पर्य्यन्तं चतुर्विंशतितः कलाः ।
यत्पदार्द्धे ध्रुवाद्यर्द्धे दशपञ्चात्मिकाः पुनः ॥
मिथिलायामयन्ताव त्सूहवस्समुदाहृतः ।

॥ उदाहरणम् ॥

पिआपरवास आसतुअ पासहिं तें किवोलह जदि आन ।
जे पतिपालक से भेल पावक इथीं कि बोलत आन ॥
ध्रु०॥ साजनि अघटन घटावह मोहि ।
पहिलहिं आनि पानि पिअतमें गहि करेंधरिसोंपलहुँतोहि ।
कुलटाभए जदि पेमवढ़ाइ अ तें जीवने की काज ।
तिलाएक रंग रभससुखपाओव रहत जनमभरि लाज ॥
कुल कामिनि भए निजपिअ विलसए अपथें कतहुनहिजाइ
की मालति मधुकर उपभोगए किम्वा लताँहि सुखाइ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विद्यापतिकहकुलर अलैरह दूति वचने नहि काज ।
राजासिवसिंह रूपनराएन लखिमादेविसमाज ॥

मध्यमत्रिकमादाय तालस्य गतिरत्रतु ॥

अयन्तु देशाख्यः ॥ अथ शुद्धः ॥ एतच्छन्दो लक्षणम् ॥

सप्तविंशतिमात्राभिर्य्यत्पदार्द्धद्वयं समम् ।
ऊनविंशतिमात्राभि र्ध्रुवकार्यर्द्धमुत्तरम् ॥
षोड़शात्मकमात्राभि र्य्येतशुद्धः स सूहवः ।

॥ उदाहरणम् ॥

सरदकससधर सममुखमण्डल कान्ने झँपावह वासे ।
अलपओ हास सुधारस वरिसओ छाडओजमिजपिआसे
॥ ध्रु० ॥ कि आरे मानिनि अपनहुँ मने जनुमान ।
रूसैत्तें जानहुँ वोलव अगेजान ।
हाटक घटन सिरीफल सुन्दर कुचयुग कोटि करु आधे ।
पानिपरस रस जनुभव सुन्दरि न कर मनोरथ वाधे ॥
नागरि अङ्ग विभङ्गक आगरि विद्यापति कवि भाने ।
राजा सिव सिंह रूपनराएन लखिमादेवि रमने ॥

अथ काम सूहवः ॥ ए० छन्दोलक्षणम् ॥

पञ्चविंशतितो यत्र त्रिंशदन्ताः कलाः किल ।
पदार्द्धे यद्ध्रुवाधर्द्धे श्चतुष्कल चतुष्ककः ॥
मिथिलायामयन्तावद्विख्यातः काम सूहवः ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ उदाहरणम् ॥

बदन चाँद तोर नयन चकोर मोररूप अमिअ रसपावे।
अधरमधुरिफुल पिअ मधुकरतुल मधु बनु कतिखनजीवे॥
ध्रु० ॥ हे मानिनि मन तोर गढ़लपसाने ।
अपने रभसँहसि किछुओ उतरदेसि सुषेजाओ निसिअवसाने
निअमनें न गुनसि परबोल न सुनसि न छैलविरानी।
अपन अपनकजा कहेतें परमलजा अरथितआदर हानी॥
भनइ विद्यापति सुनुवरजौवति सवेलन न करिअमाने॥
राजा सिव सिंह रूपनराएन लखिमादेवि रमने।

अथ करुणा सूहवः ॥ ए० वृत्त लक्षणम् ॥

कलया कलिकाभ्यास्वा हीनैर्य्यत्र चतुष्कलैः।
चतुर्भिः पदमर्द्धन्तत्करुणासूहवाभिधम्॥

॥ उदाहरणम् ॥

कुल गुनगौरव शील सोभाओ,
सवेलए चढ़लिहु तोहरहिं नाओ।
हमे अबला कर कहब अनेक,
आइति पड़लाँ बुझि अविवेक॥
हठ तेज माधव कर मोहि पार,
(सब तहँ बड थिक पर उपकार)
हमरा भेलि आवे तोहरि आस,
से न करिअ जे हो उपहास

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तोहें पर पुरुष हमहु पर नारि ।
हृदए काँप तुअरीति विचारि,
भलमन्द जानि करिअ परिनाम ॥
जस अपजस पए रहगए ठाम,
भनइ विद्यापति तोहें गुनमान,
हाथिमहतें नर के नहिं जान ॥

सत्वरो मध्यमश्चैव तालद्वितयमत्र तु ।

अथसुन्दर सूहवः ॥ एतच्छन्दोलक्षणम् ॥

त्रिदलस्पदमत्रापि तृतीयस्पञ्च षट्कलम् ।
द्वितियुग्भ्याश्चतुर्म्मात्र गणाभ्यामथवा त्रिभिः ॥
चतुर्म्मात्रगणैरेव द्वितीयन्द्विकलाधिकात् ।
षट्कलात्मैक तच्छन्दावधिभूतकलन्दलम् ॥
आदिभूतन्तुयत्रस्यात्सतु सुन्दर सूहवः ।

॥ उदाहरणम् ॥

नावडोलाव अहीरे, जिवइतें न पाओवतीरे । खरनीरे लो ॥
खेवन लेअए मोले, हँसिहँमि कीदहु बोले । जीवडोलों लो ।
ककेहि के औलिहुँ आपे, वेढ़लहुँ मोहि बडे सापे । मोरे पापें लो ।
करितहुँ पर उपहासे, परलिहुनन्हिविधि फासे । नहिआसेलो
नबुझसि अबुझ गोआरी, भजिरहु देव मुरारी : नहिगारी लो
भवानी नाथ हेनभाने, नृपदेव जतरस जाने । नव कान्हे लो ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ स्मरसन्दीपनः कोडारः ॥ छन्दोलक्षणम् ॥

सप्तविंशतिपर्य्यन्त य्यँत्रविंशतितः कलाः ।
पदार्द्धंयद्‌ध्रुवाद्यर्द्धं षट्‌कलद्विक संख्यकाः ॥
स्मरसन्दीपनःसोऽयं कोडारस्समुदाहृतः ।

॥ उदाहरणम् ॥

सखि हे आज जायब मोहीं ।
घर गुरुजन डर न मानव वचन चूकव नहीं ॥
चाँदन आनिआनि अङ्गलेपव भूषनकए गजमोती ।
अञ्जनविहुँन लोचनयुगल धरत धवल जोती ॥
धवलवसनें तनु झपाओव गमन करव मन्दा ।
जैओ सगर गगन उगत सहसँसहसें चन्दा ॥
न हमें काहुकडीठिनिवारवि न हमँ करव ओते ।
अधिक चोरि परसओं करि अइहे सिनेहकलोते ॥
भने विद्यापति सुनह जुवति साहसैं सकल काजे ।
बुझ सिवसिंह रस रसमय सोरमदेवि समाजे ॥

अथ विियोगि कोडारः ॥ एतच्छन्दो लक्षणम् ॥

पञ्चविंशतिमारभ्य यत्रोनत्रिंशदन्तिकाः ।
पदार्द्धं कलिकाःकिञ्च ध्रुवाद्यर्द्धं तु ताः पुनः ॥
यत्राष्टादशपर्य्यन्ता वियोगिपदपूर्वकः ।
कोडारस्सतु विख्यातो मिथिलाजन संसदि ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ उदाहरणम् ॥

साएसाए पिआकें कह विनती ।
इह ओ वसन्तरितु ओतहिगमावथु एतएक भलिनहिंरीती ।
घनमलयज रस परसें लागविस दुसह सु.नेअपिकनादे ॥
अनलवरिस ससि निन्दओनहोअनिसिएतएआओर परमादे
जेसवे विपरित सेसवे कहबक्त के पतिआएत आने ।
जखनेआओब हरि हमहिं निवेदव जओराखत पँचवा ने ॥
सुमुखि समाद समादरें समदल नसिरासाह सुरताने ॥
नसिराभूपति सोरमदेइपति कंसनराएन भाने ॥

॥ अपिच ॥

सिरिहिंमिललदेहानकुचँचाँदरेह। घामे न पिउलसुगन्धा ।
अधरमधुरिफुल देखिअताहेरि तुल धएलहिं अछ मकरन्दा ॥
ध्रु० ॥ रामा अइलि हे पिआ विसराइ ॥
पुरुषकेसरिजनि दमनलताधनि चुअइतें जा असिलाइ ।
गेलहि कएलह मानकी अवसर जानकि सिसु वालँभ तोरा
नु सएगेलिहे धन जागलपरिजन लगहि कलाओक चोरा।
भनइ विद्यापति सुनु वरजौवति इ रस केओकेओ जाने ।
राजा सिव सिंह रूपनराएन लखिमा देवि रमने ॥

अथ मोरङ्गिआ कोडारः ॥ एतच्छन्दो लक्षणम् ॥

दीर्घम्पदमतोहस्वे पदेदीर्घन्ततश्च ते ॥
ततोऽप्येवं क्रमेणैव पदानां निर्म्मितिर्भवेत् ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सप्तविंशति पर्य्यन्त स्पञ्चविंशतितः कला: ॥
दीर्घार्थैकलिकान्यूनै श्चतुर्भिस्तैःकलाधिकैः ॥
तै र्वा यत्नचतुर्न्नीत गणौर्हस्वार्द्धं निर्म्मितिः ॥
मोरङ्गदेश कोडारः कथ्यतेगीतिर्विस्तु सः ॥

॥ उदाहरणम् ॥

रितुराज आज विराज हे सखि नागरी गन वन्दिते
नवरङ्ग नवदल देखि उपबन सहज सोभित कुसुमिते
आरे कुसुमित कानन कोकिल साद,
मुनिहुँक मानस उपजु विषाद ॥
साजनि हम पति निरदय वसन्त,
दारुन मदन निकारुन कन्त ॥
अतिमत्त मधुकर मधुर रवकर मालती मधु सञ्चिते
समजेकन्त उदन्त नहिकिछु हमहि विधि वसवञ्चिते ।
वञ्चित नागरि सेहे संसार,
एहि रितु पहु सञो न करु विहार ॥
अति हाव भाव मनोज मारए चन्द रवि ससि भानए॥
पुरुवपाप सन्ताप जतहोअ मनमनोभव जानए॥
जारए मनसिज मार सरसाधि,
चाँदमे देह चौगुन होअ धाधि ॥
सवेधाधि आधि वेआधि जाइति करिअ धैरज कामिनी
सुपहु मन्दिर तोरित जाएत सुरुले जाइति जामिनी।।
जामिनि सुफले जाइति अवसान,
धैरज कर धरणीधर भाँन ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुइ सत्वर अरु मध्य दोए, चारिताल के राग।
कूरसुनत नहि कबहु पुनि, सोइ सुनत जेहिभाग॥

॥ अथ दण्डक कोडारः ॥

दण्डकाशावरीवृत्ते दण्डकाशावरी यथा॥
तथा दण्डक कोडारे स रागः किल जायते॥

॥ उदाहरणम् ॥

श्री मुरारि पदारविन्द समुल्लसन्मकरन्द तुन्दिल
पूरसुन्दर लहरि पूरित सकल गगन तले।
वज्रलेपसरूपपाप परम्पराविपिनावली
फलमूलपल्लव दाह दर्शित दावनील जले॥
ध्रु० ॥ जयदेवि गङ्गेदुरितसंहति मिन्दुमौलिजटातटादृति-
भंगि तुङ्ग तरङ्ग चङ्गिम तुलितचन्द्रकले।
(इत्यादि सुप्रसिद्धम्) किंच
जघने मधुरिपु भवन आओव। (इत्याद्यपिसुप्रसिद्धम्)
जयदेवि दुर्गे इत्याद्यपीति॥

अथ शुद्ध कोडारः ॥ प० छन्दोलक्षणम् ॥

अष्टाविंशतिपर्य्यन्तं चतुर्विंशतितः कलाः॥
स्युःपञ्चार्द्धेयदीये सः शुद्धः कोडार संज्ञकः॥

॥ उदाहरणम् ॥

जय जय जय नत सतत सिवङ्करि परिहित नरसिरमाले।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लम्बित रसनि दमनअतिभीषन वसनमिललवघछाले ॥
चौदिसँ मानुसमाँसु मुदितअति फेरुफूकर कत रासे।
मनिमय विविध विभूषने मण्डित वेंदि विदिततुअवासे ॥
भूतपरेत पिसाच निसाचर अगनित जोगिनि जाले।
जखने न जगत जननि तुअ संगति तहँनकहिं अकोंनकाले॥
विमलबालरविमण्डल सनतुअ तीन नयन परगासे।
असुररुहिरमदिरामद मातलि वदन अमिअ समहासे।
तुअ अनुरूप सरूप बुझिअ नहिं तैअओ तोहर गुनगाऊ॥
ऐकेंहि तुअपदवन्ध करिअ देवि निअजने लोचनलाऊ।

इतिममामान्यदीयन्तु वहुविततमत्त ॥

अथ वितताख्यः ॥ एतच्छन्दो लक्षणम् ॥

सप्तविंशतिपर्य्यन्त मेकविंशतितः कलाः।
यदीयेतुपदार्द्धेस्युर्वितताख्यः स सूहवः ॥

॥ उदाहरणम् ॥

साए साए काँ लागि कौतुकें देखल निमिष लोचन आधे॥
मोर मन मृग मरम वेधल विषम वान वेआधे।
गोरस विरस वासि विसेषल छिकेंहुँ छाडल गेहा ॥
मुरलि धुनि सुनि मन मोहल विकेंहुँ भेल सँदेहा।
तीर तरङ्गिनि कदँवकाँनन निकट जमुना घाटे ॥
उलटि हेरैतें उवटि परल चरन चीरल काटे।
सुकृतसुफल सुनह सुन्दरि गोविन्द वचन सारे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोरभरमन कंसनराएन मिलत नन्दकुमारे ॥

अथ कामोदकेदारवृत्तेऽपि किल जायते ।
कोडारराागस्तद्वृत्तम्पुरैव समुदाहृतम् ॥

तदेवम् शुद्धकोड र, वितत, दराडक, मोरंगिश्रा, वियोगीति पूर्वप्रतीकमादाय कोडारस्य पञ्च, देशशुद्ध, शुद्धकाम, करुणा, सुन्दर, स्मरसन्दीपन, इति पूर्वप्रतीक मादाय षट्सूद्भवस्य। तस्मादेतत्तयोरेकादश द्वादश वा भेदा भवन्तीति ॥

॥ अथ धनछी ॥

धनाश्री राजविजयावहिरानिविराजितौ ।
जायेते चेतु स्यात्तस्याद्धनछी नाम रागिणी ॥
. . . .

॥ तत्रतु प्रथमा मङ्गली धनछी ॥ एतद्वृत्त लक्षणम् ॥

चतुर्विंशतिमारभ्य यत्रैकत्रिंशदन्तिका: ।
पदार्द्ध कलिका: म तु मंगली धनछी मता ॥

॥ उदाहरणम् ॥

अगर उगार गारि मृगमदरस कएनतुलेपन देह ।
चललि तिमिर मिलि निमिषें अलख भेलि काचकसनिमसिरेह
हेमाधव हेरह हरखिधनि चान उगलजनि महितलें मेटिकलङ्क
घर गुरुजन हेरि पलटति कतवेरि ससिमुखि परमसङ्क ॥
तुअगुनगनकहि आँनलिअ साहिटारि दैए सुमुखिविसवास
तें परि पराइअ जें पुनु पाविअ परधन विनु परयास ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जपल जनम सत मदन महामत विहि सुफलित करु आज ।
दास गोविन्द भन कंसनराएन सोरम देवि समाज ।

सत्वर लितयन्त्वत्र तालस्य गुणि सम्मतम् ॥
हीयते तैर्विनारागस्तान् सम्यक् प्रयोजयेत् ।

॥ अथ पहाड़आ ॥ एतच्छन्द लक्षणम् ॥

चतुर्भिःकलिकाहीनै श्चतुर्मात्रगणैस्समम् ।
पदार्द्धद्वितयर्य्यन्त्र धनछी सा तु पर्वती ॥

॥ उदाहरणम् ॥

कीपर वचनें कन्ले देलकान, की पर कामिनि हरल गेआन ।
की तन्हि विसरल पुरुवक नेह, की जीवन आवे पड़ल सँदेह॥
की परिनत भेल पुरुवक पाप, की अपराधे कएल विहिं साप।
की सखि कओन करव परकार, की अविनय दँहु परल हमार॥
की हमें कामकला एक घाटि, कीदहुँ समयक इहे परिपाटि।
मधुसूदन भन मने अवधारि, की धैरजें नहि मिलत मुरारि॥

॥ तालः पूर्वतुल्यः ॥ अथ पञ्चमसुरा, एतच्छन्दो लक्षणम् ॥

चतुर्मात्रत्रिकंसैक मारभ्य नियमोज्झिताः ।
पदार्द्धकलिका यत्र षोड़शान्तास्तु सा मता ॥
मिथिलागीति गोष्ठीषु धनछीपञ्चमसुस्वरा ।

॥ उदाहरणम् ॥

आकुल चिकुरे बेढ़ल मुखसोभ,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राहु कएल ससिमण्डल लोभ ॥
उभरल कुसुम मालधर अङ्ग,
जनि जमुनामिलु गङ्ग तरङ्ग ॥
वदन सोहाओन स्रम जलविन्दु,
मदने मोतिलए पूजल इन्दु ॥
पिअमुख सुमुखि चुम्बतेजि ओज,
चाँद अधोमुख पिबए सरोज ॥
कुच विपरीत विलम्बित हार,
कनक कलस वम दूधक धार ॥
किंकिनि सबद नितम्बिनि छाज,
मदन विजय रथ वाजन वाज ॥
भनइ विद्यापति मने अनुमानि,
कामिनि रम पिआ अनुमत जानि ॥

सत्वर द्वितयस्मध्य द्वयश्चैवाल जायते ।
तालानान्तावता(ता)लाश्चत्त्वारः परिकीर्त्तिताः ॥

॥ अथ श्री विमिश्रा ॥ ए वृत्तम् ॥

गणैस्त्रिभिश्चतुर्भिश्च कलान्यूनैः क्वचित्तुतैः ।
चतुर्म्मात्रैः पदानान्तु दलयोर्यत्र निर्म्मितेः ॥
क्रमेण श्रीविमिश्रेयं धनछी गीति सम्मता ।

॥ उदाहरणम् ॥

मलिन कुसुम तनु चीरे,
करपर वदन नयन ढरु नीरे ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कि कहब माधव ताही,
तुअगुन लुबुधि मुगुधि भेलि राही ॥
उरँलुर सामरिवेनी,
कमल कोष जनि कारि नागिनी ।
केअओ सखि ताकए साँसे,
केअओ नलिनीदलें करए बतासे ।
केअओ बोल आएल हरी,
उससिउठलिसुनि नाम तोहरी ॥
सुकवि विद्यापति गावे,
विरहिनि वेदन सखि समुझावे ।
लघु सत्वर तिनि ताल एहि, चलनि होत परगास ।
तातें चुकि सुर चलत तब, गुनी होत उपहास ॥

अथ योगिआ ॥ वृत्तम् ॥

पञ्चविंशति पर्य्यन्तं द्वाविंशति कलावधि ।
ध्रुवान्तार्द्धसमा यत्र पदार्द्धे कलिकाः किल ॥
त्रयोदशकलोपेत ध्रुवाद्यर्द्धे व्यवस्थितिः ।
जोगिआ धनर्छी सा तु मिथिला गीति सम्मता ॥

॥ उदाहरणम् ॥

लाखहुँलना कोटितरुअ जूवति कतन लेख ।
सवहि फूलाँ मधुमधुमग मधुहुँ मधु विसेष ॥
साजनि हमर वचन सूँन ।
सवे परिहरि तोहिइछ हरि अओकि सराहसिपून ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तोरिए चिन्ता तोरिनिरता सेजहु तोरिए ठाम ।
सपनहुँ हरि तोहि न विसरल ए उठ तोरिए नाम ॥
आलिङ्गनवेरॉ पाछुनिहारए तोहविनु सुन कोर ।
हृदयकथा गुपुति वेथा लाजे न छाडए नोर ॥
सरसकवि विद्यापति गाओल निजमने अवधारि ।
जकर पेमें पराधिन वॉलभु सेहे कलावति नारि ॥

अथ शाम्भवी ॥ ५० वृत्तम् ॥

षोडशान्ताःकला यत्र चतुर्दशकलावधि ।
पदार्द्धं वीतनियमा धनछी सा तु शाम्भवी ॥

॥ उदाहरणम् ॥

जय जय शङ्कर जय त्रिपुरारि ।
जय अधपूरुष जय अधनारि ॥
आध धवलतनु आधतनु गोरा ।
आधपटोर आधमुज डोरा ॥
आध जोग आध भोग विलासा ।
आध पिनाक आध नगवासा ।
आध सिन्दुरविन्दु आध विभूतो ॥
आध हाडमाल आध गजमोती ॥
भने कविरतन विधाता जाने ।
दुइकए वॉटल एक पराने ॥

त्वरितत्रितयन्त्वत्र तालस्य परिदृश्यते ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तद्वहिर्भूत रागस्तु कुरागो गुणिनास्मतः ॥
आचतुर्द्दशकात्सप्त दशपर्य्यन्तकाः कलाः ॥
पदार्द्धे यत्र सा प्रोक्ता धनछी तु सुशोभना ॥

॥ उदाहरणम् ॥

सपने आएल सखि मञ्जुपिअ पासे,
तखनुक को कहव हृदय हुलासे ।
ध्रु० ॥ न देखिअ धनुगुन न देखु सन्धाने,
चौदिस परए कुसुमसर वाने ।
वंक विलोचन विगसित थोरा,
चाँद उगल जनि समुद्र हिलोरा ॥
उठलि चेहाए आलिंगन वेरी,
रहलि लजाए सूनि सेज हेरी ।
भनइ विद्यापति सुनह सपने,
जत देखलह तत पुरतौह मने ॥

॥ तदेवं मङ्गली, पहडिआ, पञ्चमसूरा, श्री विमिश्रा, जोगिआ शाम्भवी शोभना, इति पूर्व प्रतीकयोगात्सप्तधा धनछी ॥ अथ गौडमालवः ॥ एतस्यतु गौड मिथिलामादाय भेदद्वयम् ॥ तत्र प्रथमो गौडीयः ॥

॥ ए० वृत्तम् ॥

त्रिंशदारभ्य षट्त्रिंशत्पर्य्यन्ताः कलिकाः किल ।
दशकात्षोडशान्ताश्च माला यत्र पदार्द्धयोः ॥
क्रमादिह तु सः प्रोक्तो गौडीयो गौड मालवः ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ उदाहर म् ॥

बाँधए विकट जटा त थिहुचदिन फोटा
कत जुगसहस वयस वहि गेला।
उमत महादेवसम तन भेला ॥
मौलि मेलए छार सहज न तेजए पार।
सुकवि विद्यापति गाऊ जिवओ सिवसिंह राऊ ॥

सत्वर द्विकमादाय तालस्यात गतिर्म्मता ॥

अथ मैथिलः ॥ प वृत्तम् ॥

सप्तोत्तरदशान्तास्तु द्वादशावधयः कलाः।
यत्पदार्द्धे सतुप्रोक्तो मिथिला गौडमालवः ॥

॥ उदाहरणम् ॥

गेलाहुँ पुरबपेमे उतरो न देइ, दाहिन वचन वामकए लेइ।
ए हरिरसदए रूसलि रमनी, हमतह न आउतिकुंजरगमनी ॥
गै रमनावहरहओ समाजे, सवतह वडथिक आँखिकलाजे।
जे किछु कहलक से अछि लेले, भलकहिवुझवअपनहिगेले।
भनइविद्यापति नारि सोभावे, रूसलि रमनिपुनुपुनमत पावे

अथ राजविजयः ॥ तत्र प्रथमन्देव पूर्वः ॥ प वृत्त लक्षणम् ॥

अष्टाविंशति पर्य्यन्तम्पश्चविंशतितः कलाः।
यत्पदार्द्धे ध्रुवाद्यर्द्धे यत्रोनत्रिंसदात्मिकाः ॥
सचोत्सर्गाद्देवराज विजयः परिकीर्तितः।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ उदाहरणम् ॥

कतहुश्मश्रुधर कतहु पयोधर भलवरमिलल सुशोभे ।
अधँगँधइलि नारि गुनलि निञगारि गरुअ गौरिगुन लोभे॥धु०॥
आलोशिव शम्भू तुमी शिवशम्भू तुमी जो वधला पचवाने ॥
गाँगँलागि गिरिजाक मनौलि हे कःकेदेवि बोलह मन्दा ॥
चरन नमित फनि मनिमय भूषन घर खिखि आएल चन्दा ॥
भनइविद्यापति सुनह तिलोचन पय पङ्कज मोरि सेवा ॥
चन्दल देइ पति वैदनाथ गति नीलकराठ हर देवा ॥

सत्वरद्वितयचैव मध्यम द्वितयन्तथा ।
एवं रागानुगास्तालाश्चत्वारोगुणिनाम्मताः ॥

॥ अथालानविमिश्रः ॥ एतद्वृत्त लक्षणम् ॥

. . . .
यत्रादश पर्य्यन्तं स्युस्त्रयोदशतः कलाः ॥
पदार्द्धे सोडाना राजविजयः परिकीर्तितः ॥
. . . .

॥ उदाहरणम् ॥

जय जय भगवति भीमा भयानी,
चारि वेदें अवतरु ब्रह्मवादिनी ॥
हरिहर ब्रह्मा पुछइत भमें,
एकओ न जान तुअ आदि मरमें ॥
भनइ विद्यापति राए मुकुट मणि,
जिवओ रूपनराएन नृपति धरणि ॥

लघु सत्वर अरु मध्य एहि, तीन ताल शुभ होत ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीनिलिङ्गे जओ गाइअए, तओहोत रसन के सोत ॥

॥ अथदेश राजविजयः ॥ एतच्छन्दो लक्षणम् ॥

द्वादशाद्यधियत्नस्युः कलिकाश्चाचतुर्दश ।
यत्पदार्द्धे स विज्ञेयो देशराजस्तु गायकैः ॥

॥ उदाहरणम् ॥

जातिपदुमिनि सहतिकता, गजेंदनसलि दमनलता ॥
लोभेअधिकमूल न मार, जे मूलराखए से वनिजार ॥
अछलजोर सिरीफल भाँति, कएलहछोंलग नारँग काँति॥
भनइविद्यापति न कर लाथ, भूषल न खाह दूहू हाथ ॥

सत्वरद्विनयम्मध्य द्वयन्ताल चतुष्टयम् ॥
एतद्विहीनोऽयं रागः कुरागइति निश्चितम् ॥

॥ अथ कानरा मिश्रः ॥ ए वृत्त लक्षणम् ॥

चतुष्कलचतुष्कात्तु कलान्यूनात्कलाष्किल ॥
ऊनविंशतिपर्य्यन्ताः स्युष्पदार्द्धे तु यत्नवै ॥
स रागष्कानरा राजविजयःपरिकीर्त्तितः ॥

॥ उदाहरणम् ॥

नमओ नमओ चण्डी चरनयुगल तोर ।
तोरित दुरित हर देहै अभय वर ॥
कटकट दसन रसन लहलह कर ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खडगें खण्डिए चण्डी रुहिर खपर भर ॥
हेरजोह खोहकरि धरए तुरए सरि ।
मूहमेलएरुहिर घटघट घोटकरि ॥
लखनचन्द राए करए तुअभगवति ।
देहे अभयवर निजपद जुगरति ॥

जायते गुणिभिर्दत्त एकएवाल मध्यमः ।
तालस्तेनामुनाहीनो रागोऽयं कुत्सितो मतः ॥

अथ मङ्गलराजविजयः ॥ एतच्छन्दो लक्षणम् ॥

चतुष्कल लिकंसैकमारभ्य नियमोज्झिताः ।
चतुष्कल चतुष्कान्ता यत्पदार्द्धं कलाष्किल ॥
मङ्गलोत्तरनामायं राजपूर्वो भवेदिह ।

॥ उदाहणम् ॥

साँझक अतिथ भागें विहिआन,
विमुखें पापवड़ अछए गेआन ।
हमरेओ कन्त वसए परदेस,
अथिकपथिक देखिमोहिकलेस ॥
पथिकवास भमि जनतए लेह,
हमरा दोसर तेसरनहि गेह ।
चतुरचतुरभुज ई रस जानि,
कौसलेंअभिमतकरए सआनि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तालस्त्रिनयमत्रास्ति गुणिनाङ्गण सम्मतम् ।
तावद्भिः कृतसारथ्यो रागोऽयमनुरञ्जकः ॥

॥ अथ मनमोदः ॥

पञ्चविंशतितोयत्र त्रिंशदन्ताष्कलाःकिल ।
पदार्द्धे मनमोदाख्य स्सभवेद्राज पूर्वकः ॥

॥ उदाहरणम् ॥

सखिमधुरिपुसन के कतए सोहाओन
जदि अतन्हिकउपामहे ।
तसुमननेओछन सरदसुधानिधि
पङ्कज के लेत नाम हे ॥
ध्रु० ॥ सखि आज मधुरिपुदेखलमोजेहटिआ
लोचन जुगल जुडएला ॥
अधरबाँहि लोचने जखनें निहारलन्हि
वाँककइएभोंहभङ्गा ।
तखनुक अवसर जागल पचसर
थानें थानें गेल अङ्गा ।
दरसन लोभे पसार देल हमें
सखिमुखे सुनि वड रसी ॥
तखने उपजुरस भेलिहुँ परवस
विसरलि दुधहुँ कलसी ।
दानकलपतरु मेदिनि अवनरु

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नृप हिन्दू सुलताने ॥
मेधादेइपति रूपनराएन
प्रणवि जीवनाथ भाने (हे)

सत्वरमध्यम तीनिकरि, चल चलनि मे ताल।
एआमें मिलि सुरहोत तव, रस उपजतसुविशाल॥

॥ अथ भठिआलपूर्वः ॥ ए वृत्तम् ॥

अष्टाविंशतिपर्य्यन्त स्पञ्चविंशतितः कलाः।
यत्पदार्द्धं तु सभवेद्भठिआली राज पूर्वकः॥

॥ उदाहरणम् ॥

जयजय दुर्गं दुर्गतिहारिनि सवसिधिकारिनि देवी।
भुगुति मुकुति दुहु दुखें विनु पावित्र पदपङ्कज सेवी॥
विष्णु विरञ्चि विभावसुवासव शिवतुअधरएधेआने।
आदिसक्तिभगवति भयभाविनि केओनअन्ततुअजाने
तनुअतिसुन्दर मरकतमनिजनि तीनिनयन भुजचारी
शंखचक्रशर करधनुधारिनि शशिशेखर अनुसारी।
मनिमय कुण्डल हारमनोहर नेपुर घन हन वाजे॥
किंकिन रन रन सुललित कंकन भूषनविविध विराजे।
पञ्चाननवाहिनि दाहिनि होह सुमरि महेशविमोही॥
मदानन्द कह चरनजुगलतुअ सरनकएल जग जोही।
सत्वर मध्यम तीनि ताल तें विनु रागिनिहोइति वेहाल।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तदत्र देवराज, अलानराज, देशराज,कानरराज, मंगलराज,मनमोदराज भठिआलराज, इत्येवंसप्तविधराजविजय उक्तः ॥

॥ अथ नाटः ॥

मलारी सुरमादाय किञ्चित्कामोद वादने ॥
नाटरागसमुत्पत्तिं वदन्तिकिल गायकाः ॥

अथातः परमेतद्भेदाः तत्र प्रथमं शुद्धः ॥ प० वृत्त लक्षणम् ॥

षट्कलद्विकपर्य्यन्ता द्विकलोन ततः कलाः ।
यत्पदार्द्धे भवेदत्र शुद्धनाटस्स एव हि ॥

॥ उदाहरणम् ॥

मृगमदपङ्कअलका मुखजनुकरह तिलका ।
सँ पुनपुनि के चन्दा कलकें होएतगए मन्दा ॥
सहजें सुन्दरि वंडिराही कि करति अधिकपसाही ।
उजर नयन नलिना काजरें न करु मलिना ॥
दूधक धोएल भमरा मसि बुडि जाएत समरा ।
पीनपयोधर गोरा उलटल कनएक चोरा ॥
चाँदने धवल न करु हिमेंझापि जएत सुमेरु ॥
विद्यापति हेन कवी कतए तिमिर जहाँ रवी ।
रूपनराएन पहू तौलि हलत गुरु लहू ॥

तालद्वितयमेवात्र विद्यते गुणिसम्मतं ।
तमादाय यदागानं क्रियते सुस्वरस्तदा ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ मलारी नाटः ॥ ५० छन्दो लक्षणम् ॥

चतुष्कल चतुष्केन यद्ध्रुवाद्यर्द्धं निर्म्मितिः ।
ध्रुवान्तार्द्धेतु यत्रस्यात्पदार्द्धान्तरवस्थितिः ॥
पञ्चविंशतितः किञ्च त्रिंशदन्ताः कलाः किल ।
यत्पदार्द्धेतु सम्भवेन्मलारी नाट संज्ञकः ॥

॥ उदाहरणम् ॥

गगनगरज मेघा उठय धरणिथेघा पचसरहिअगेलसाली ।
सुमुखि देहखिन जिउतिआजुक दिन केजान कि होइतिकाली
ध्रु० ॥ माधवमनदए सुनतसुवानी ॥
कुजन निरूपि सुजनसखि संगति जे किछुकहएसआनी ॥
की हमे साँझक एकसरि तारा भादव चौठिक चन्दा ॥
ऐसनकएपिआजे मोरसुख मानल मो पति जीवन मन्दा ॥
वामहु गति जत समदि पठओलन्हि से सवे कहि कहि गेली॥
तेरसि तिथि ससि सामर पख निसि,दसमि दसा मोरिभेली ।
भनइ विद्यापति सुन वरजौवति मने जनु मानह आने ॥
राजा सिवसिंह रूपनराएन लखिमा देवि रमने ।

॥ परञ्च ॥

रयनि काजर वम भीम भुअङ्गम कुलिश परए दुरवार ।
गरजें तरस मन रोसें वरिस घन संसजे परु अभिसार ॥
॥ ध्रु० ॥ सजनी वचन छडैतें मोहि लाज ॥
जे होएअ सेहोअओवरु सवे हमेंअँगिकरु साहसँ मनदएआज

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ठामहि रह्नि अघूमि परसें चिन्हि अ सुमि दिगमगँ उपजु सन्देह
हरि हरि सिव सिव तावे जाइह जिव जावे न उपजु सिनेह
चरन वेढ़ले फनि हितकए मानलधनि नूपुर न करत रोर ॥
सुमुखि पुछओ तोहि सरुप कहसि मोहि पेमक कतएक ओर ।
अपन सुहितमित देखिअ से परत खनपाइअ पेमक ओर ॥
चाँद हरिन वह राहुक वल सह पेम पराभव थोर ।
भनइ विद्यापति सुनह सुचेतनि गमन न करह विलम्वे ॥
राजा सिवसिंह रूपनराएन सकलकला अवलम्वे ॥

सत्वररद्वितयम्मध्य द्वितयन्तावता पुनः ।
चतुष्टयन्तु तालानां जायतेराग मध्यगम् ॥

॥ अथ शंकुक नामा ॥ एतच्छन्दो लक्षणम् ॥

द्वादशावधयो यत्र षोडशान्ताः कलाःकिल ।
यत्पदार्द्धेसशङ्कूकनाटस्तु समुदाहृतः ॥

॥ उदाहरणम् ॥

दूरहि ऊरु रहल गहिठाम, चरने पाओल थलकमलउपाम ।
सेदविन्दु परिपूरल देह, मोतिम फरलि सौदामिनि रेह ॥
संकेत निकेत मुरारि निहारि, अपनि अधिनि नहि रहलिएनारि
पुलकित भेल पयोधर गोर, दगध मदन पुनु आकुर तोर ।
वजइतें वचन भेल सरभंग, कदलीदल जकेंकाँपए अंग ॥
रसमय स्याम सुन्दर कविगाव, सकल अधिक भेल मन्मथभाव
कृष्णनराएण ई रस जान, कमलावतिपति गुनकनिधान ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ परञ्च ॥

करतल कमल नयनढर नीर,
न चेतए कुन्तल सँभरन चीर ।
तुअपथ हेरि हेरि चितनहि थीर,
सुमरि पुरुवनेहा दगधसरीर ॥
कतें परि माधव साधव माँन,
विरहि जुवति माँग दरसन दान ।
जलमधे कमल गगनमधे सूर,
आँतर चाँदहु कुमुद कत दूर ॥
गगन गरज मेघा सिषर मयूर,
कत जन जान सिनेह कत दूर ।
भनइ विद्यापति विपरित मान ,
राधा वचने लजाएल कान्ह ॥

॥ परञ्च ॥

गगन गरज घन जामिनि घोर,
रतनहुँ लागि न सञ्चर चोर ।
एहना तजि अएलाहु निअगेह,
अपनँहुँ न देखिअ अपनुक देह ॥
तिला एक माधव परिहर मान,
तुअलागि संसञे परल परान ॥
दुसह जमुना नरि ऐलिहु भाँगि,
कुचजुग तरल तरनि तँ लागि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देह अनुसन हे जुझयो पञ्चवान,
तोहेसन नगर नागर नहि आन ॥
भनइ विद्यापति नारिसोभाव,
अपनुक अभिमत उकुति बुझाव ।
राजा रूपनराएन जान,
राए सिवसिंह लखिमादेइरमन ॥

काललितयसस्पन्ना गतिरेषाविराजते ।
राजतेतैर्विनारागः सोऽयं नैवात्र कुत्रचित् ॥

अथ कामोद नाटः ॥ प छन्दो लक्षणम् ॥

चतुष्कल त्रिकात्सैकादारभ्यनियमोज्झिताः ।
चतुष्कल चतुष्कान्ताः कचित्सैकाधिकास्तनः ॥
सत्पदार्द्धद्वयोरन्ये स्युस्समाः किल ।
कलिकास्सतु कामोदनाट इत्यभिधीयते ॥

॥ उदाहरणम् ॥

जयजय भगवति जय महामाया,
त्रिपुरसुन्दरिदेविकरुदाया ।
ध्रु० ॥ आहेमाता दालिमकुसुम सम तुअतनुछवी
तखने उदितभेल जनिरवी ।
धनुसर पास अंकुस हाथ,
तेतिसकोटिदेव नाव माथ ॥
चड्डिम इपमत केओ पाव,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कामरमनिं दासि पदपाव ।

सत्वरङ्गितयस्मध्य द्वयञ्च परिदृश्यते ।
तालानान्तावतातालाश्चत्वारः परिकीर्त्तिताः ॥

॥ अथोत्तमः ॥ एतच्छन्दो लक्षणम् ॥

ह्रस्वमर्धन्ततोदीर्घमेष एवक्रमः पदे ।
ह्रस्वार्द्धे लिदशान्ताश्च कला यत्र दशादिकाः ॥
दीर्घार्द्धेचाष्टविंशान्ताः पञ्चविंशतितः कलाः ।
नियमाद्विगतास्तुस्युर्न्नाटोऽय मिहतूत्तमः ।

॥ उदाहरणम् ॥

सखि हे वालँभ जितव विदेसे,
हमेकुल कामिनि कहइते अनुचित, तोहन्हुँ देहुन्हि उपदेसे॥
ईन विदेसक वेली,
दुरजनेंहमर दुख न अनुमापव, तें तोहें पिआ गेल एली।
किछुदिन करथु निवासे,
हमे पूजल जे सेहे पए भुजव राखथु पर उपहासे ॥
होएता हे किए वघ भागी,
जहिखने हुन्हि मनें माधव चिन्तव हमहुँ मरव घसि आगी
विद्यापति कवि भाने,
राजा सिवसिंह रूपनराएन लखिमादेवि रमने ॥

तदेवम् शुद्ध मलारी, शंकूक, कामोद, उत्तम, एतत्पूर्व प्रतीकमादाय नादः पञ्चधा, । इदन्तु वोध्यम् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अवान्तर बहुभेदवतामल्पभेदवताञ्च रागाणां तत्त दुत्पत्ति साधनीभूत तत्तद्गीतमादाय तावदन्यान्यतम गीतोत्पत्तिकत्वन्तत्तच्छन्दो घटित गीतोत्पत्तिक स्वरान्तरभेदभूत तत्तद्रागानेव वादाय तावदन्यान्यतमत्वं वा लक्षणमस्त्वेकतश्चैतत्। वस्तु तस्तु विजातीय विजातीय सुखजनकतावच्छेदकतया सिद्धा स्तास्तास्तत्तद्राग गता जातय एव तत्तद्राग लक्षणमिति । अवान्तरभेदानाञ्च तदुक्तमेवेतिदिक् ॥

॥ अथ संकीर्णासंकार्ण मैथिल रागाणामेकीकृत्य गणना ॥

ललिता विभासी तदनु भैरव्यहिरानि वराडी च ।
गोपीवल्लभगुजरी रामकली कापि शारङ्गी ॥
कौशिक कोडाराख्यौ वसन्तो धनछी तथा ।
असावरी च श्रीरागो गौडा मालव मालवौ ॥
भूपाली राजविजय नादाः कामोद देशाखौ ।
केदारोऽथ मलारी इत्येते मैथिलाः कथिताः ॥

तदेतानेतावदवान्तरभेदाँश्चादाय रितुराजमन्तरा तीरभुक्ति देशीयाः सप्तनवतिसंख्यकारागा वेदितव्याः ॥ वेदितव्यानि च तावत्संख्यकानि तीरभुक्ति देशि गीतान्यपीति ॥

इति श्री लोचन शर्म्म विरचितायां रागतरङ्गिण्यां तीरभुक्ति देशीय संकीर्णराग विवरणन्नाम चतुर्थस्तरङ्गः ॥

देशान्तर देश्यश्च कियत्यो लेख्या इत्यधुना न लिख्यन्तेताः ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अथ यंत्रजादि राग सामान्योत्पत्युपयुक्तसंस्थितिसाधनीभूत स्वरसंज्ञा प्रकरणम् ॥

स्व स्व शेष श्रुतित्यक्त्वा यदारिषभ धैवतौ ॥
गीयते गुणिभिस्सर्वै स्तदा तौ कोमलौ मतौ ॥
गृह्णाति मधुमस्यापि गान्धारः प्रथमां श्रुतिम् ॥
यदा तदा जनैरेष तीव्र इत्यभिधीयते ॥
द्वितीयामपि चेदेवं तदा तीव्रतरः स्मृतः ॥
चतुर्थीमपिचेदेव मतितीव्रतमः स्मृतः ॥
अतितीव्रतमोगस्तु शारङ्गे परिगीयते ॥
षड्जस्य च निषादश्चेद्गाधारः प्रथमां श्रुतिम् ॥
तदा सङ्गीतिभिस्सोऽपि तीव्र इत्यभिधीयते ॥
द्वितीयामपि चेदेवं तदा तीव्रतरः स्मृतः ॥
तृतीयामपि चेदेवं तदा तीव्रतमः स्मृतः ॥
षड्जस्य द्वे श्रुती गृह्णान्निषादः काकली स्मृतः ॥
तीव्रतमेनिषादे च गेया सैव विचक्षणैः ॥
सपयोरिधयोश्चैव तथैवगनिषादयोः ॥
सम्वादः कथितो विज्ञैस्सयोःस्वरयोर्मिथः ॥
हृदि मन्द्रो गलेमध्यो मूर्ध्नितार इति क्रमात् ॥
द्विगुणः पूर्व पूर्वस्मात् स्वरः स्यादुत्तरोत्तरः ॥

॥ इति स्वरसंज्ञा ॥ अथ स्वरश्रुति विभागः ॥

द्वाविंशतिस्तु श्रुतयः सुराणां भागशः स्मृताः ।
तद्यथा श्रूयतान्तावत्सङ्गीताद्बुद्धिपारगैः ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीव्रा कुमुद्वती मन्दा छन्दोवत्यस्तु षड्जगाः ।
दयावती तुरेञ्जया रञ्जनी रक्तिकेत्यसूः ॥
रौद्री क्रोधाच गान्धारे वज्रिकाथ प्रसारिणी ॥
प्रीतिश्च मार्ज्जनीत्येताः श्रुतयो मध्यमाश्रिताः ॥
क्षितीरक्ता च सन्दीपिन्यालापिन्यथ पञ्चमे ॥
मदन्ती रोहिणी रम्ये त्येताधैवतसंश्रयाः ।
उग्रा च क्षोभिणी च द्वे निषादेव सतां श्रुती ॥

....

वीणायां सर्व रागाणां स्वराणां संस्थितिस्तु या ॥
तस्यावादनमात्रेण स्वरव्यक्तिः प्रजायते ।
तास्तु संस्थितयः प्राच्यो रागाणां द्वादशस्मृताः
याभीरागा प्रगीयन्ते प्राचीनाराागपारगैः ।
तास्तु, भैरवी टोडिका तद्वद्गौरी कार्णाट एवच ॥
केदार ईमनस्तद्व च्छारङ्गो मेघरागकः ।
धनाश्री पुरवी किञ्च मुखारी दीपकस्तथा ॥
एतेषामेव संस्थाने सर्वेरागाः व्यवस्थिताः ।
यथा यद्रागसंस्थानं तत्तथैव वदाम्यहम् ॥
शुद्धाः सप्तसुरारम्या वादनीयाः प्रयत्नतः ।
तेन वादनमात्रेण भैरवी जायते शुभा ॥
अन्येतु भैरवीरागे धैवतङ्कोमलं विदुः ।
तदशुद्ध र्यँतस्ताद्दक् नायं रागोऽनुरञ्जकः ॥

॥ इति भैरवी संस्थानम् ॥

शुद्धाः सप्तस्वराष्कार्य्या रिधौतेषु च कोमलौ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

टोडीस्तुरागिणी गेया ततो गायकनायकैः ॥

॥ इति टोड्याः ॥

एवं सति च गान्धारो द्वेश्रुती मध्यमस्यचेत् ।
गृह्णाति काकलीनिः स्यात्तदा गौरी प्रवर्त्तते ॥

अस्यार्थः । ऋषभधैवतौ कोमलौभवतः गान्धारश्च मध्यमस्य श्रुतिद्वयं गृह्णाति ॥

तदा कानराख्यात कार्णाट संस्थानं भवतीत्यर्थः ॥

॥ इति कार्णाट संस्थानम् ॥

गान्धारो मध्यमस्य श्रुतिद्वयं गृह्णाति, निषादश्च षड्जस्य श्रुतिद्वयं गृह्णाति, तदा केदार संस्थानं भवतीत्यर्थः ॥

॥ इति केदार संस्थानम् ॥

एवंसति च संस्थाने मध्यमः पञ्चमस्य चेत् ॥
गृह्णाति द्वे श्रुती राग ईमनो जायते तदा ॥

॥ इति ईमन संस्थानम् ॥

गान्धारो मध्यमस्य श्रुतिद्वयं गृह्णाति, मध्यमश्च पञ्चमस्य श्रुतिद्वयं गृह्णाति निषादश्च षड्जस्य श्रुति द्वयं गृह्णाति मध्यमः शुद्धो भवति, तदा मेघरागस्य संस्थानं भवतीत्यर्थः ॥

॥ इति मेघ संस्थानम् ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रिषभः कोमलोगस्तु द्वे श्रुती मध्यमस्य चेत् ॥
गृह्णाति द्वे श्रुतीमश्च पञ्चमस्य विशेषतः ॥
धैवतश्कोमलोनिश्च षड्जस्य द्वे श्रुती तथा ॥
गृह्णाति रागिणी रम्या धनाश्रीर्ज्जायते तदा ॥

रिषभश्कोमलो भवति निषादः षड्जस्य श्रुतिद्वयं गृह्णाति तदा धनाश्रीसंस्थानं भवतीत्यर्थः ॥

॥ इति धनाश्री संस्थानम् ॥

औडवः पञ्चभिः प्रोक्तः स्वरैः षड्भिस्तुखाडवः ॥
इमन स्वरसंस्थाने निषाद प्रथमां श्रुतिम् ॥
गृह्णाति धैवतश्चैषा पूर्वायाः स्वरसंस्थितिः ॥

गान्धार मध्यमस्य श्रुतिद्वयं गृह्णाति, मध्यमः पञ्चमस्य श्रुतिद्वयं गृह्णाति, निषादः षड्जस्य श्रुतिद्वयं गृह्णाति, धैवतश्च निषादस्यैकां श्रुतिं गृह्णाति ॥
तदा पूर्वा संस्थानं भवतीत्यर्थः ।

॥ इति पूर्वा संस्थानम् ॥

शुद्धाः सप्तस्वरास्तेषु धैवतः कोमलो भवेत् ॥
वीणायां जायते शुद्धा मुखारी संस्थितिस्तदा ॥

शुद्ध सप्तस्वरेषुचेद्धैवतश्कोमलो भवति, तदामुखारी संस्थिति र्भवतीत्यर्थः ॥ इति मुखारी संस्थितेः ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सर्वैर्स्मिलित्वा दीपकोऽपि लेख्यः ॥

॥ अथ स्वरजातयः ॥

सम्पूर्णा ब्राह्मणाः प्रोक्ताः क्षत्रियाः षाडवा मताः ।
औडवाः कथितावैश्या शूद्रास्तदितरेक्कचित् ॥

॥ इति ॥

नीलाम्बरी सदाज्ञेया भैरवीरागिणी स्थितौ ।
टोडीसुरागिणी कापि सुस्थितौ सैव गीयते ॥

॥ अथ गौरी संस्थितौ ॥

मालवस्यादुगुणामयः श्री गौरी च विशेषतः ॥
चैती गौरी तथा प्रोक्ता पहारी गौरिका पुनः ॥
देशी टोडी देशकारो गौरोरागेषु सत्तमः ।
त्रिरणः स्यान्मुलतानी धनाश्रीश्च वसन्तकः ॥
रामकरी तथा गेया गूर्ज्जरी वहुली ततः ।
रेवा च भठिआलश्च षड्रागस्तथोत्तमः ॥
मालवः श्रीपञ्चमः किञ्च जयत श्रीश्चरागिणी ।
आसावरी तथा गेया देवगान्धार एवच ॥
सिन्धी आसावरी गेया गेया गुणकरी तथा ।
गौरीसंस्थानमध्ये तु एते रागा व्यवस्थिताः ॥

॥ अथ कार्णाट संस्थितौ ॥

षाडवष्का नरो रागो देशीविख्यातिमागतः ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वागेश्वरी कानरश्च खम्भाइची तु रागिणी ॥
सोरठः परजोमारु जैजयन्तो तथापरा ॥
ककुभापि च कामोदः कामोदीलोकमोदिनी ॥
केदारी रागिणी रम्या गौरःस्यान्मालकौशिकः ॥
हिन्दोलः सुघराइस्यादडानो राग सत्तमः ॥
गोरा कानरनामा च श्रीरागश्च सुखावहः ॥
कार्णाटसंस्थितावेते रागाः सन्तीतिनिश्चितम् ॥
केदारस्वरसंस्थाने श्रुतश्केदारनाटकः ॥
आभीरनाटनामा च गेयोरागस्तथापरः ॥
खम्भावती ततो गेया शङ्कराभरणस्तथा ॥
विहागरा च हम्वीरःश्यामः श्रुतिमनोहरः ॥
छायानाटश्च भूपालो गेया भीमपलाशिका ॥
कौशिकस्तु तथा गेयो मारु रागो विचक्षणैः ॥
ईमनस्वरसंस्थाने शुद्ध कल्याण ईरितः ॥
पुरिआ विदिता लोके जयत्कल्याण एव च ॥
शारङ्गस्वरसंस्थाने प्रथमा पटमञ्जरी ॥
वृन्दावनी तथा गेया सामन्तो वडहंसकः ॥
मेघरागस्य संस्थाने मेघो मल्लार एव च ॥
गौडशारङ्ग नटौ रागौ वेलावली तथा ॥
अलहिआ तथा गेया शुद्धसूहव एव च ॥
देशिसूहव देशाखो शुद्धनाटस्तथैव च ॥
धनाश्री स्वरसंस्थाने धनाश्रीर्ल्ललितास्तथा ॥
पूर्वायाः स्वरसंस्थाने पूर्वैव परिगीयते ॥
सर्वेषामथरागाणां ये ये तु क्रमतः स्वराः ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तेषु सर्वस्वरेष्वाद्यः षड्जएवाभिधीयते ॥

॥ तथहि ॥

सरिगामपधानिः सः सनिधाः पमगारिसौ ।
रोहावरोह योगेन सम्पूर्णा भैरवी मता ॥

एवं, तत्तद्रागस्वरारोहा वरोहास्त्वन्यत्र द्रष्टव्या, इहतु विस्तरभयान्न लिखितः ॥

अथ सकलदेश साधारण गुणिगणप्रसिद्ध रागसङ्कराः ।
तत्र × + × × + + + × + + + × + + × + × ×
× + + × + + × × + + + × × × × × धाहेति ।
पाओस में रसपाएवहु क्या सरिता के सोत ॥
प्रथम कामोद सो शुद्ध जुत, राग रमन सामन्त ।
तिलक कल्याण कामोद पुनि, मुनिवर भरत भनन्त ॥
शुद्ध मिलाए जोगाइअइ, अएसोइ शुद्ध कामोद ।
कामोदभारजाजदिमिलए, साओतक्ए प्रमोद ॥
तिलकआदि षट्राग यदि, सुद्ध मिलें कामोदहि होए ।
तासओ तिलक मोदभर, सुखद कहए सवकोए ॥
ईमन गुणड दुहू मिलें, वजएजओ वीनामाह ।
होत कल्याण कामोद सो, रागनि में नरनाह ॥
गौरी श्यामा गुजरी, आसावरी गँधार ।
मिलैं वडारी जगत में, ए खट् राग विचार ॥
आसावरी अओ गुजरी, मिले गुनकरी होत ।
सिवराष्ट्र मिलिकए धनासिरी, कुम्भारी के गोत ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मालसिरी मल्लार अरु, शुद्ध सकलसुर होए।
तेईसओ मधुमाधवओ जग कहत संगीती लोए ॥
नटनारायण तेजरहि हरभूषन जग होइ।
तामे शुद्ध संयोगहू रागस······ती सोइ ॥
मालव अचल धनासिरी दुर्गा चैती चारु।
इन्ह के सब संजोग तें, हए वडहँस विचारु॥
कानर धवल दुहू मिले. होत जो पुरिआ राग ।
एआ······································ ॥

श्रीमद्वेलावलाद्गुराड योगात्कामोद पञ्चकम् ।
तला॥द्यः शुद्धयोगात्तुद्वितीयोऽपि च वक्ष्यते ॥
कामोद्भार्य्या मिलनात्सामन्ताख्यो भवेत्सतु ।
तिलकादिक षड्राग योगात्तु तिलकादिकः ॥
कल्याणाद्यो भवेद्गुराड श्रीमदीमन योगतः ।
वरारी गुजरी गौरी श्यामाचासावरीति च ॥
गान्धारसंयुताएताः स्युःषड्रागा इतीरिताः ।
गुजर्य्यासावरीयोगाच्छ्रीमद्गुणकरीमता ॥
शिवराष्ट्रमिलनाद्धन्या धनास्त्री कुम्भरीति च ।
मालस्त्रीशुद्धमल्लारै र्मधुमाधवि निर्म्मितिः ॥
हरभूषण शुद्धाभ्यां नटनारायणेन च ।
सरस्वत्याः समुत्पत्ति र्धनास्त्री मालवाचलैः ॥
गौर्य्या च वडहंसः स्यात्कानराद्धवलादपि ।
पुरिआ रागिणी सैव मङ्गलाष्टक शब्दिता ॥
केदाराचज गौरी र्मिल्लेङ्कादहन नामकः ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गान्धारो गूजरी श्यामा रामकर्य्यथचेद्भवेत् ।
पुरवी गुणकरीयोगाद्वल्लभः शक्तिमान्भवेत् ॥
वेलाओल केदारा योगतो हरभूषणः
वेलाओल केदारा कल्याणौरीमनस्सम्भृतः ।
गोर्य्यासावरी देव गिरिभिर्भैरवादपि ॥
सिन्धुसंयोगतः प्रोक्तो गान्धारः पृथवीतले ।
धनास्त्री कानरायोगा द्वागेश्वर्य्याख्यरागिणी ॥
फिरोदस्तस्तु पुरवी गौरी श्यामाभिरेव च ।
वराडी वङ्गपालाभ्यां विभासमिलनादपि ॥
आडानारागिणी प्रोक्ता फिरोदस्ताद्धनेन च ।
कानरायोगतः प्रोक्ता सहाँनाकापि रागिणी ॥
मारुधवल कुम्भारी धनास्त्रीमिलनाद्भवेत् ।
पटमञ्जरी ततः शुद्धाच्छङ्कराभरणादपि ॥
मल्लार कानराभ्याश्च देशाखः समुदीरितः ।
गौड़ शारङ्गमिलनाद्भवेद्वेलावली भुवि ॥
तल सोरठ कौरव्या मिलनात्कौमुदीमता ।
मारूधवल केदारा जयत्स्री मिलनाद्भवेत् ॥
घण्टोलनामकोराग स्संगीतिभिरुरीकृतः ।
पुरवीशैलजादेव गिरिभिर्गुण्ड योगतः ॥
द्वारवत्याख्यसंकीर्णा रागिणीलोक दुर्ल्लभा ।
धनास्त्रीपुरियाभ्याश्च भवेद्भीमपलासिका ॥
मालस्त्री शुद्धसंयोगान्मलार मिलनादपि ।
खम्भावत्यास्समुत्पत्तिं वदन्ति किल गायकाः ॥
शैलजादेशकाराभ्यां टोडीतोपि वराडिका ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

षड्रागासावरी देश्यो हेतुर्गन्धावरीभवेत् ॥
सरस्वत्यथमारु च केदारापि मनोहरा ।
विहागरा समुत्पत्ति निदानं त्रितयं मतम् ॥
जयच्छ्रीदेशकाराभ्यां ललिताच्च लिलावती ।
मालवाचलगौडीभिस्त्रिवणामिलनान्मतः ॥
गुणिगोष्ठीषु विख्यातः कोऽपिरागो मनोहरः ।
हंवीरईमनाच्छुद्ध केदारा योगतः स्मृतः ॥
पूर्वा श्री रागयुक्ताचेत्कानरा किञ्चिदंशतः ॥
भैरवात्किञ्चिदादाय तदा टङ्कः प्रवर्त्तते ।
मलार मिलनात्किञ्च केदारा नागकध्वनिः ॥
गुजर्य्यादेशकारश्चे त्कल्याणोऽपि युतोभवेत् ।
अहीरी रागिणी रम्या तदैव भुवि जायते ॥
शङ्कराभरणांनाटः सोरठी सङ्गतो यदि ।
तदा तु रभसादिः स्यान्मङ्गलाकापि रागिणी ॥
गान्धारी गुजरीतद्व द्वङ्गालीपञ्चमस्तथा ।
भैरवी संयुतैरेतैर्भवेच्छौराष्ट्र नामकः ॥
खम्भारी पुरियाटोरी योगान्नारायणो मतः ॥
मनोहरयुत स्तद्वन्मालवो राज हंसकः ।
मालश्रीशुद्धटङ्कैस्तु भवेद्भीमपलासिका ॥
श्रीमन्मालव गन्धार वडहंसैर्युतोहरः ।
षड्रागधवल हंसै र्देशीटोडीयुतैर्भवेत् ॥
पुरवीशुद्धसारङ्ग र्देवगिर्य्यपि रागिणी ।
कानरायुत कल्याण संयुता चेद्विहागरा ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तदा तु गीति विख्याता रागष्कोलाहलोमतः ।
शङ्कराभरणोपेत मालश्री संयुतो यदि ।
धीरागः सुखदः कोऽपि भवेच्छ्री रमणास्तदा ॥
केदारा पुरवी वेलावलीभिः ककुभामना ।
सरस्वत्या तु कुम्भारी मालश्रीयोगतोऽपि च ॥
देवकारी भवेत्कापि कदाचिच्छ्रूयते तु सा ।
श्यामा रामकरीभ्याञ्च श्रीमद्गान्धार योगतः ॥
वहलोपेत गूजर्य्या मङ्गलोपेत गूजरी ।
वराडी गौडिकाचैत्यः श्रीपूर्व रमणोऽपि च ॥
एतेषां सङ्करात्कोपि विचित्रा नाम रागिणी ।
गौरीललितयोर्देशकारसंयोगतः किल ॥
त्रिमल्लनामकोरागः संगीति गीति सम्मतः ।
आडाना कानरा वेलावलीभिर्न्नटपूर्व्वकात् ॥
नारायणात्समाख्याता कलाइ नाम रागिणी ।
पुरिया मधुमाधवी राग योगाद्वागेश्वरी मता ॥
वडहंसटङ्कगौर्य्याश्चश्रीरागोराग सत्तमः
पुरियावेलावलीतद्व त्ककुभापि केदारिका ॥
एषांपरस्परं योगादद्विनादोपि सम्मतः
शङ्कराभरणांगौरी मधुपूर्वाच माधवी ॥
वेलावलीपरस्तद्व दहनोलङ्कपूर्वकः ।
परस्परममीषाञ्च संयोगान्नटपूर्वकः ॥
नारायणो भवेद्रागः सुरलोकेपि दुर्ल्लभः ।
ललितपञ्चम पूर्वाभिर्ल्लीलावते मनोहरौ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

युतौचेत्तत्र हिन्दोल स्तदैव किल जायते।
श्रीमत्कल्याणकामोद सामन्तैर्म्मेघ रागकः॥
मलारनटशारंग्यस्तद्वद्वेलावली किल।
देवगिर्य्या तु संयोगादेतेषां पञ्चम स्मृतः॥
हिन्दोलादर्द्धमर्द्धार्द्धं कानराशगतोऽपि च।
पुरिआतोऽपितावत्स्या त्समादाय तु भैरवः॥
शङ्कराभरणांतद्वत्कानरा मधुमाधवी।
एतावद्योगतः प्रोक्ता कानरासत्सुखावहा॥
केदाराहीरनाटौ शुद्धोधवल एव च।
वागेश्वरी कानरश्च योगात्स्यान्मधुमाधवी॥
लङ्कादहन सोरठो शङ्करात्किल जायते॥
शक्रसंक्रमणी नाम रागिणीतु सुखावहा।

॥ इति सकलसङ्गीतसिद्धा राग संकराः ॥ अथ रागाणां गानकालाः ॥

॥ तुम्बुरु नाटके ॥

श्रीपञ्चमीं समारभ्य यावत्स्याच्छयनं हरेः।
तावद्वसन्त रागस्य गानमुक्तम्मनीषिभिः॥
इन्द्रोत्थानं समारभ्य यावद्दुर्गामहोत्सवम्।
गेया तावद्बुधैर्नित्यं मालश्रो सा मनोहरा॥
प्रातर्गेयस्तु देशाखो ललितः पटमञ्जरी।
विभासो भैरवी चैव कामोदो गराडकर्य्यपि॥
एका वराडी मध्याह्ने सायङ्कार्णाट मालवौ।
नाटश्चैव विशेषेण शेष गेयस्तु सर्वदा॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हिन्दोलश्च वसन्तश्च वसन्ते रक्तिदायकः ।
नाटौ गोडो वराडी च गुर्ज्जरी देशिरेवच ॥
पूर्वाह्णेगानमेतेषां निषिद्धमिति तद्विदः ।
नैवापराह्णे गातव्यौ भैरवी ललितौ क्वचित् ॥
रंगभूमौ नृपाज्ञायां कालदोषो न विद्यते ।
शुद्ध शालग संकीर्ण धातुमातु विभेदतः ॥
देशभाषा विभेदाच्च रागसंख्या न विद्यते ।
न रागाणां नतालानामन्तः क्वापि विद्यते ॥
यथाकाले समारब्धं गीतम्भवति रञ्जकम् ।
अतः स्वरस्य नियमाद्रागेऽपि नियमः कृतः ॥

॥ अर्वाचीनास्तु ॥

ब्राह्ममेमुहूर्त्ते गातव्यो भैरवो राग सत्तमः ।
अरुणोदयवेलायां गेया रामकरी पुनः ॥
प्रातर्वेलावली गेया पूर्वाह्णे सुभगोऽपिच ।
पूर्वाह्णे याति गायेत टोडीमतिमनोरमा ॥
संगरादौ वराडी च गेया गायकनायकैः ।
दिवा तृतीयप्रहरे गातव्यासावरी जनैः ॥
काफी मध्याह्न मध्येतु शारंगोऽपि च गीयते ।
अपराह्णे नटोगेयस्तद्वद्गायेत मालवम् ॥
अपराह्णावसाने च सायाह्ने सति यातिवा ।
सायंकालस्तु कालोवै गौरी रागस्य भूतले ॥
निशामुखे तु कल्याणः केदारस्तु महानिशि ।
तृतीय प्रहरे रात्रावडानोऽपि च गीयते ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्वितीयप्रहरे रात्रौ कार्णाटः सर्वसम्मतः ।
अपराह्णेऽपि सौराष्ट्रम्प्रभाते संगरेऽपि च ॥
पञ्चमो मेघसञ्चारे मल्लारः परिगीयते ।

स्वस्वोत्पत्ति निदानसंस्थिति महा मुख्यैक रागोचितः
कालः सज्जनगीतिगोष्ठिषु चिदानन्दायरागव्रजे ।
× + × + × × + × × + + × + ×
+ + × × + × + + + + × + + + ॥

अथैतेषामुत्पत्ति साधनीभूत गीत प्रतिपादिताः । कुत्र के नायकाः, कुत्र का नायिका इति बुभुत्सावतामतिसुकुमारमतीनामीश्वराणां झटितितज्ज्ञानार्थं ते ताश्च लिख्यन्ते ॥ तत्र दामोदरः ।

शृङ्गारेषु भवन्त्येते चतुर्द्धा नायकाः पुनः ।
अनुकूलः शठोधृष्टो दक्षिणश्चेति संज्ञया ॥
एकस्यामेव रमते सदात्त्यक्तपराङ्गनः ।
सीतायां रामवत्सोऽयमनुकूलः स्मृतो यथा ॥
तनोति पुरतः प्रीतिम्पश्चाचरति विप्रियम् ।
कृतदोषोऽपि निःशङ्को शठः स परिकीर्त्तितः ॥
असत्यभाषी दुश्चेष्टस्तर्ज्जितोऽपि न सीदति ।
व्यक्तापराधचेष्टो यः सधृष्ट इति कीर्त्तितः ॥
सद्भावं गौरवम्प्रेम भयम्प्रथमयोषिति ।
अन्यत्रासक्त चित्तोऽपि न मुञ्चति स दक्षिणः ॥

॥ अथ नायिकाः ॥

मुग्धामध्याप्रगल्भा च नायिकात्रिविधा मताः ।
किञ्चित्प्रोद्भूत तारुण्या मुग्धावामारतौ भवेत् ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तत्र मुग्धात्वसम्पूर्णा वयसा कौशलेन या ।
वयः कौशलसम्पूर्णा प्रगल्भा परिकीर्त्तिता ॥
चतुर्दशसमा यावद्बालेति परिगीयते ।
ततस्तु विंशतिं यावन्मुग्धा प्रथमयौवना ॥
ततः षड्विंशतिं यावन्मध्या प्रोक्ता द्वियौवना ।
स्यात् पञ्चविंशतिं यावत्प्रगल्भा तु त्रियौवना ॥
चतुर्थयौवना केचिदत ऊर्द्धं वदन्ति च ।
पञ्चचत्वारिंशदब्दं यावद्वृद्धा ततो मता ॥

॥ तत्र मुग्धा पञ्चधा ॥ प्रथमावतीर्ण यौवना, प्रथम मदनावकारा, रतिरामा, मृदुरामा, समधिकलज्जावती चेति ॥

या न तथा द्रुतगमना दरहसितानि च रसोदये धत्ते ।
सेयं मुकुलकुचश्रीः प्रथमावतीर्णयौवन पदवाच्या ॥
आली सुरतकथादौ यदूधृदिसहसा विकारसम्मोदौ ।
सुरभिदितरलितहारा सा स्यात्प्रथममदनविकारा ॥
सन्तोषयति या कान्तमतीव रमणोत्सवे ।
स्निग्धा तदुपरोधेन रतिरामेति सा मता ॥
अल्पेन रमणेनापि या स्यादामर्द्दिता क्षणात् ।
मालती भ्रमरेणेव मृदुरामेति सा मता ॥
वासः कर्षति कान्ते कृतवाहु सुस्तिकास्तनोपान्ते ।
नमयति वदनमधो या समधिकलज्जावती सेयम् ॥

॥ मध्यापि चतुर्विधा ॥ विचित्रसुरता, प्ररूढस्मरयौवना, ईषत्प्रगल्भवचना, समधिकलज्जावती चेति ॥

शृंगाररससंसिक्तकान्तानानाकलान्विता ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नानाबन्धविधानज्ञा विचित्रसुरता मता ॥
निधायहृदि या कान्तं बाहुभ्यां गाढ़यन्त्रितम् ।
रमेत जघनान्दोलैः प्ररूढस्मरयौवना ॥

कान्ते कुचाञ्चलचलत्करपल्लवान्ते
किञ्चित्तिरोञ्चितमुखी करमुत्क्षिपन्ती ।
माभङ्गकंस्पृश विटेति चलेतिकोपात्
ईषत्प्रगल्भवचना वदन व्यनक्ति ॥
नीवीबन्धोच्छ्वासनेच्छोरतीच्छो-
र्दीपेतल्पान्तेऽथ सख्यासमीपे ॥
मन्दस्मन्दम्पाणिमध्या रुणद्धि
या सा मध्या मध्यम व्रीडितेयम् ।

प्रगल्भा सप्तधा ॥ स्मरान्धा, गाढतारुण्या, समस्तरतकोविदा, भावोन्नता, ईषद्व्रीड़ा, प्रचण्डा, आक्रान्तनायका चेति ॥

स्मारोद्वेगम्वहन्ती स्तनक(नक)गिरि प्रान्तमुन्मीलयन्ती
वक्षोविस्फारयन्ती घनजघनतटद्वन्दमुद्धाटयन्ती ।
नेत्रान्तम्पातयन्ती दिशिदिशिरभसा मोदमत्तावहन्ती
कृष्णां सान्वेषयन्ती व्रजतिपथिमदान्धा स्मरान्धाभ्रमन्ती
दृढश्रृङ्गारतो यस्या भवेदिच्छानिरन्तरम् ॥
नारतिर्गाढतारुण्या सेयम्भोग्या मधुद्विषः ।
समस्तव्यस्तबाह्येषु रतेष्वपि विचक्षणा ॥
कान्ताप्राणहरासेयं समस्तरसकोविदा ।
उत्साहदोषदवहास विषादलज्जा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चापल्यमोह रमणोत्सुकता विलासैः ॥
भावैःपरैरपि तथा तरुणस्य चेतो
भावोन्नता हरति केलिकला विदग्धा ।
कान्तस्यवासः क्षिपति किन्तुनारोहति स्वयम् ॥
विरत्यधरमुल्लासादीषद्व्रीडेयमीरिता ।
अन्यनारीकृतंचिह्नं दृष्ट्वाकान्ततनौरुषा ॥
बन्धनादि तिरस्कारं प्रचण्डाकुरुते परम् ।
धनुर्वल्ली समंकान्तं कृत्वादष्टनिजाधरा ।
विपरीतरतिन्धत्ते रागादाक्रान्तनायिका ॥

॥ एताभिस्सर्वाभिर्मिलित्वा षोडशनायिका भवन्तीति ॥ १६ ॥ एताएव षोडशनायिकाः प्रत्येकं खण्डिताद्यष्टप्रकारभेदेनाष्टाविंशत्यधिक शतसंख्यया लिखिता भवन्ति ॥ १२८ ॥

॥ तथाच ॥

खण्डिता विप्रलब्धा च वासकसज्जाभिसारिका ।
कलहान्तरिताचैव तथैवोत्कण्ठिता परा ॥
स्वाधीनभर्तृकाचान्या तथा चोषितभर्तृका ।
सम्भोगे विप्रलम्भे च इत्यष्टौ नायिका मताः ॥

तत्र, उन्निद्रताजनित राग विलोहिताक्षः
कान्तानखक्षतविशेष विचिह्निताङ्गः
यस्याः कुतोऽपि पतिरेति गृहम्प्रभाते
सा नायिका निगदिता खलु खण्डितेति ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अहरहमतिदूरा दूतिकाम्प्रेष्य पूर्वम्
सरभसमतियाता कापि संकेतदेशे ॥
न मिलति खलु यस्या वल्लभोदैवयोगात्
कथयति भरतस्तां नायिकां विप्रलब्धाम् ।
या वासवेश्मनि स्वकल्पित तल्पमध्ये
ताम्बूलपुष्पवसनैश्च समं सुसज्जा ॥
कान्तस्यसङ्गसमयं समवेक्ष्यमाणा
सा कथ्यते कविवरैरिह वाससज्जा ।
उद्दामसन्मथमहाज्वरवेपमाना
रोमाञ्चकराटकितमङ्गतलम्वहन्ती ।
निःशङ्किनी व्रजति या प्रियसंगमोत्का
सा कामिनी किल भवेदभिसारिकेति ॥
चाटुकारमपि जीवितनाथं
कोपतःस्मरतिरी(?)र्ष्यमतिर्य्या ।
तप्यतेऽनुशय मन्मथभावैः
कथ्यते तु कलहान्तरिता सा ॥
नैवागत स्समुचितेष्वपि वासरेषु
प्राणेश्वरोऽति गुरुकार्य्य वशेन यस्याः ॥
दुर्वारमन्मथमहाज्वर रेपिताङ्गी-
मुत्कण्ठितास्वदतितास्भरतः कवीन्द्रः ॥
आश्लेषचु म्बनशतैः कुसुमादि दानैः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रेमोत्तर प्रणयकोमलचाटुवाग्भिः ।
संस्तूयते प्रियतमेन च यानुरागात्
स्वाधीनभर्तृकपदप्रकटी कृता सा ॥
चिन्ताकुलास्मलिन मंशुकमावहन्तीं
डिण्डीरपिण्डपरिपाण्डुर गण्डभित्तिम् ।
निर्भूषणां प्रियवियोगज दुःखतसां
तां प्रोषितप्रियतमास्प्रवदन्ति सन्तः ॥

अत्रापि स्वकीया परकीयासामान्यवनिता चेति,
प्रत्येकमेतासाम्भेदेन ता अष्टाविंशत्यधिक शतनायिका,
इदानीश्चतुरधिकशतत्रय नायिका भवन्तीति ॥

तत्र कुलजाङ्गनावेश्या त्रिधास्यादभिसारिका ।
कुलजा संवृता त्रस्ता सव्रीडा तद्गृहम्व्रजेत् ॥
सलीला स्वेषु भावेषु त्रस्ताचिह्नोभितानना ।
मन्दस्खलितसंलापा विभ्रमोत्फुल्ललोचना ।
आविद्धगतिसञ्चारा शनैर्गमनकारिणी ॥
नायकम्परनारी तु व्रजेन्नान्येन वीक्षिता ।
सखीयुक्ता मदाविष्टा स्फारिताक्षीत्वशंकिता ॥
सनूपुरा यथा कामं वेश्या सरतिनायकम् ।
शुक्लपक्षो कृष्णपक्षो द्विधास्यादभिसारिका ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मल्लिकामालधारिण्यः सर्वाङ्गीणार्द्रचन्दनाः ।
क्षौमवत्यो न लक्ष्यन्ते ज्योत्स्नायामभिसारिकाः ॥
कालागुरुविलिप्ताङ्गी नीलरागवदम्बरा ।
चन्द्रोदय परित्रस्ता कृष्णाकृष्णाभिसारिका ॥

इति

श्री लोचनशर्म्म विरचितायां रागतरङ्गिण्यां
रागसंस्थानादि कथनन्नाम पञ्चमस्तरंगः ॥

(समाप्तः)

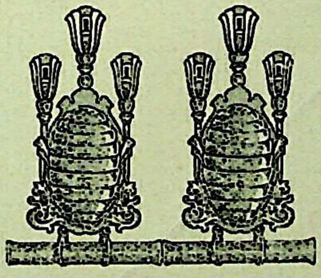

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

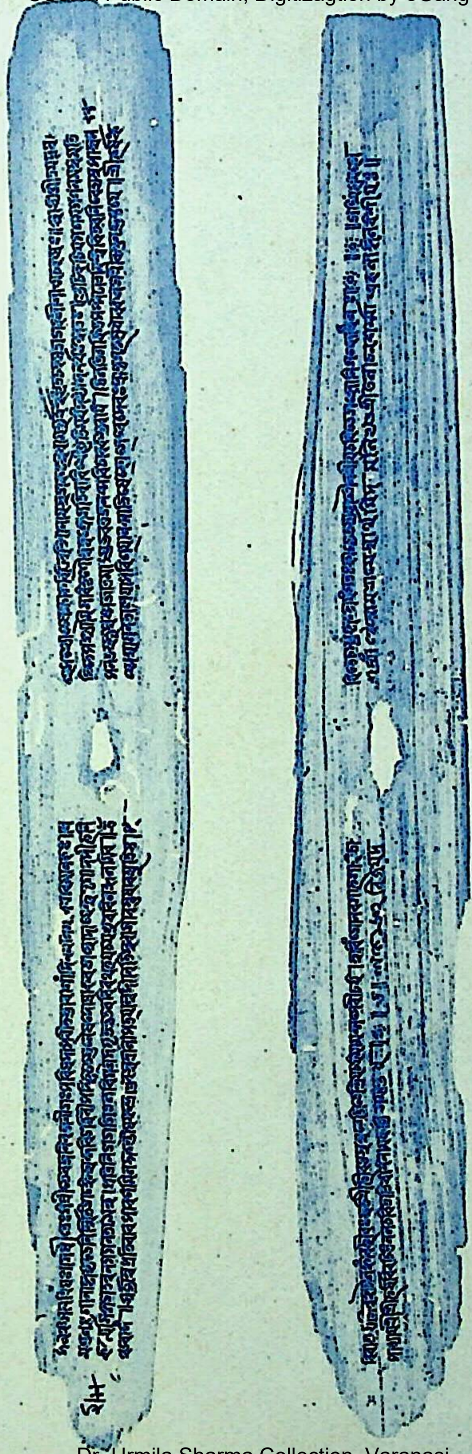

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१५८

१३२
२२
१५४
४
१५८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi